યુક્રાંદ

युक्रांद

आचार्य श्री रजनीश जी की सृजनात्मक जीवन दृष्टि का

पाक्षिक संकलन पत्र

१ एवं १६ सितम्बर का युक्रांद का यह संयुक्त अंक हम आपको प्रस्तुत कर रहे हैं। आगे भी नियमित आपको आचार्य श्री की ओजस्वी वाणी का गरिमामयी यह पत्र मासिक रूप में पहुंचेगा। पृष्ठ संख्या ४० होगी और मूल्य १/०० प्रति अंक।

●

कारण :–

●

पिछले वर्ष पर युक्रांद के प्रकाशन पर एक दृष्टि

कुल प्राप्ति रु० २०,०००/– (युक्रांद के १,५०० वार्षिक एवं अर्धवार्षिक सदस्यों से)

कुल व्यय रु० ३०,०००/– (२४ अंकों का व्यय मय ब्लाक २४,०००/–, पोस्टेज २,०००/– डिस्पेच, प्रवास, व्यवस्था ४,०००/)

कुल हानि रु० १०,०००/–

हानि की इस राशि को 'युक्रांद' की स्थायी निधि से पूरा किया गया। यह राशि १०,०००/– रु० थी जो संरक्षक, आजीवन, दस वार्षिक, पाँच वार्षिक सदस्यों से प्राप्त हुई थी।

इस प्रकार चालू वर्ष में युक्रांद केवल नए सदस्यों के वार्षिक सदस्यता शुल्क से चल रहा है, जो गत वर्ष के प्रकाशन के आधार पर अपर्याप्त है।

●

निवेदन :–

●

युक्रांद आपके स्वेच्छानुसार आर्थिक सहयोग का आकांक्षी है——स्थायी निधि हेतु। इस स्थायी निधि हेतु एक विशेष सहायता पत्र संलग्न है।

●

आर. आर. मिश्रा
व्यवस्थापक

आलोक कुमार पांडे
सह–संपादक

अरविन्द कुमार
संपादक

पत्र प्रेरणा

(आचार्य श्री द्वारा लिखे गए दो पत्र)

प्यारी जयति,

प्रेम। तेरा पत्र मिला है।
पगली ! मेरे लिए कभी भी, भूलकर भी चिंतित मत होना।
दो कारणों से।
एक तो प्रभु के हाथों में जिस दिन से स्वयं को सौंपा है, उसी दिन से सब चिंताओं के पार हो गया हूं।
असल में, स्वयं को स्वयं ही सम्हालने के अतिरिक्त और कोई चिन्ता ही नहीं है।
अहंकार ही चिन्ता है।
उसके पार तो कैसी चिंता—किसको चिंता—किसकी चिंता ?
दूसरे मेरे जैसे व्यक्ति सूली चढ़ने को ही पैदा होते हैं।
वही हमारा सिंहासन है।
फूल नहीं—पत्थर बरसें तभी हमारा कार्य हो पाता है।
लेकिन, प्रभु के मार्ग पर पत्थर भी फूल ही बन जाते हैं।
और उसके विपरीत मार्ग पर फूल भी अंततः पत्थर सिद्ध होते हैं।
इसलिए, जब मुझ पर पत्थर बरसें तब खुश होना और प्रभु को धन्यवाद देना।
सत्य का सदा ही, ऐसा ही, स्वागत होता है।
न माने मन तो पूछ सुकरात से ?
जीसस से ?
बुद्ध से ?
कबीर से ?
मीरा से ?
सबको प्रणाम।

★

रजनीश के प्रणाम।

१०-६-७०

(श्री लाला सुन्दरलाल दिल्ली, को लिखा गया एक पत्र)

मेरे प्रिय,

प्रेम । ध्यान के जल स्त्रोत निकट ही हैं ।
लेकिन दमित काम की पर्तें चट्टानों का काम कर रही हैं ।
काम का दमन ही आपके जीवन को क्रोध से भी भर गया है ।
क्रोध का धुआँ भी व्यक्तित्व के रोयें रोयें में है ।
उस दिन जब आप मेरे सामने ध्यान में गये तब यह सब स्पष्ट दिखाई पड़ा ।
लेकिन यह भी दिखाई पड़ा कि आपका संकल्प भी प्रबल है ।
अभीप्सा भी प्रबल है ।
श्रम भी प्रबल है ।
इसीलिए, निराशा का कोई भी कारण नहीं है ।
कठिनाइयाँ हैं, चट्टाने हैं, लेकिन वे टूट सकेंगी क्योंकि उन्हें तोड़ने वाला अभी टूट नहीं गया है ।
श्रम करें ध्यान के लिए समग्रता से ।
शीघ्र ही जल स्त्रोत उपलब्ध होंगे ।
लेकिन, दाँव पर स्वयं को पूरा ही लगाना होगा ।
रत्ती भर कम से भी नहीं चलेगा ।
जरा सी कमी और सब चूक सकता है ।
समय कम है, इसलिए शक्ति सघन करनी होगी ।
अवसर खो न जाये इसलिए संकल्प पूर्ण करना होगा ।
ऐसा अवसर दुबारा किस जन्म में मिलेगा कहना कठिन है ।
इसलिए, इस जन्म में ही सब पूर्ण कर लेना है ।
द्वार न खुले तो फिर दूसरे जन्म में सब प्रारंभ से ही शुरू करना होता है ।
फिर मेरा साथ भी निश्चित नहीं है ।
पिछले जन्म में भी आपने श्रम किया था, लेकिन वह अधूरा रह गया था ।
उसके पहिले भी ऐसा ही हुआ था ।
विगत तीन जन्मों से आप एक ही वृत को पुनरुक्त कर रहे हैं ।
अब इस वृत्त को तोड़ ही डालें ।
बहुत देर तो वैसे ही हो गई है ।
अब और देर उचित नहीं है ।
वहां सबको मेरे प्रणाम ।

रजनीश के प्रणाम ।

१०—६—७०

बम्बई जाने के पूर्व जबलपुर में आयोजित अपने "अभिनंदन समारोह" के अवसर पर आचार्य श्री का उद्‌बोधन

—संकलन : शिव

मेरे प्रिय आत्मन्,

कहीं कुछ थोड़ी सी भूल हो गई है। बंबई तो मैं जा रहा हूं, लेकिन जबलपुर छोड़ रहा हूं, इस संबंध में भूल हो गई है। दोनों एक ही बात नहीं है। जबलपुर छोड़ना और बात है, बंबई जाना और बात है। जबलपुर ऐसे ही छोड़ रहा हूं जैसे जमीन को वृक्ष आकाश की तरफ फैलने के लिए छोड़देता है। शाखाएं कितनी ही फैल जाती हैं लेकिन जड़ें तो वहीं मौजूद रहती हैं। और शाखाएं कितनी ही दूर फैलतीं जायें, शाखाओं को जितनी दूर फैलना हो, जड़ों को उतनी ही गहराई में फैल जाना पड़ता है। जबलपुर तो छोड़ना संभव नहीं है। संभव इसलिए नहीं है कि मैं कहीं भी जाऊं जबलपुर का हिस्सा ही रहूंगा। संभव इसलिए नहीं है कि हड्डी, मांस, मज्जा में जबलपुर प्रविष्ट कर गया है। अब जहां भी मैं जाऊंगा सारी दुनिया के किसी भी कोने में, मैं परदेशी ही रहूंगा, वहां का निवासी नहीं हो सकता। निवासी इस नगर का ही रहूंगा। और छोड़ना भी शायद इसलिए जरूरी है, जैसा कि डा० राजबली (जबलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति एवं समारोह के अध्यक्ष) ने कहा—"वापस लौट आने के लिये।" शायद वापस लौटना भी आनंदपूर्ण हो सके। शायद ज्यादा काम का हो सकूं, वापस लौटकर।

आपके अभिनंदन ने, आपकी शुभकामनाओं ने भी थोड़ी कठिनाई में मुझे डाल दिया। मेरे जैसे मूर्तिभंजक लोगों को अभिनंदन कहीं ताल-मेल नहीं खाता। किसी गाँव में मेरे ऊपर पत्थर फेंकते हैं तो मुझे समझ पड़ता है कि ठीक हो रहा है। अभिनन्दन बिल्कुल नया अनुभव है। आपने प्रेम से किया। लेकिन शायद अभिनंदन भी इसी बात का है कि हमारे बीच में से कोई पत्थर खाने को राजी है। अभी १५ दिन पहले ही अमृतसर में था। पत्थर फेंके गये। और तब मुझे ऐसा लगा कि ठीक हो रहा है। इसलिए ठीक लगा कि अगर मैं कोई बात कहूं और लोग राजी हो जायें तो मुझे सदा ही लगता है कि बात गलत रही होगी। लोग इतने गलत हो गये हैं कि ठीक बात पर राजी होना असंभव है। जब कोई पत्थर फेंकता है तो लगता है बात में कुछ जरूर सचाई रही होगी। क्योंकि लोग इतने झूठ हो गए हैं कि सत्य पर न फेंकेगे, असंभव है। लेकिन जब अभिनंदन हो, तो बड़ी कठिनाई हो जाती है। लेकिन अभिनंदन करने वाले मित्रों ने बार बार यह दोहरा के बड़ी कृपा की कि मेरी सारी बातों से राजी होना जरूरी नहीं है। सारी बातें तो दूर, मेरी एक भी बात से राजी होना जरूरी नहीं है। और जब आप राजी होते हैं तब मुझे शक होता है कि मेरी बात में कहीं कोई गलती होगी।

असल में इतना पुराना मन है, इतना जरा जीर्ण, इतना मृत कि जीवन के अंकुर से हम राजी नहीं होंगे। इतना अतीत भारी है हम पर कि भविष्य की जैसे कोई प्रगट होने की संभावना ही नहीं छोड़ी है। और अतीत की पांच हजार वर्ष की स्मृतियों का मृत बोझ इतना है

कि सत्य खो गया है। और सत्य का अनुभव सदा नया है लेकिन बांधे गये शब्दों में, बांधे गये सिद्धांत सदा पुराने पड़ जाते हैं। और अगर सत्य के लिए खोजना हो तो पुराने शब्दों से निरंतर संघर्ष जरूरी है। यह संघर्ष मुझे जहां भी ले जाय, वहां चला जाऊंगा। लेकिन आपको छोड़कर जा रहा हूं ऐसा ख्याल मन में लाने की कोई भी जरूरत नहीं है। शायद लौटकर आऊं तो आप भी मुझे समझने में आसानी अनुभव करें। क्योंकि बहुत बार चीजें लौट के ही सार्थक हो पाती हैं। हम अपने चेहरे को भी जब तक दर्पण से लौटता न देखें तब तक नहीं पहचान पाते। अपने चेहरे को भी पहचानना हो तो दर्पण से उसका लौट आना जरूरी है। तो यह मैं आश्वासन दिला दूं कि लौटता रहूंगा, आपको इतनी जल्दी आसानी से छोड़ नहीं दूंगा। नहीं छोड़ दूंगा इस कारण भी कि जो चोटें मैंने आपको पहुंचायी हैं, वह मैं आगे भी जारी रखूंगा। और जो घाव मैंने बनाए हैं वे पुर न जायें, इसका ख्याल रखूंगा। उन पर चोट करता ही रहूंगा। इतनी चोटें व्यर्थ नहीं जाने दूंगा जो २० वर्षों में यहां आपके बीच मैंने आपको पहुंचायी। आपके अभिनन्दन से उन चोटों को थोड़ा भी कम करने का मेरा मन नहीं है। और भी जोर से चोट पहुंचाना चाहूंगा। जैसा डा० राजबली ने कहा, ठीक ही कहा कि मैं कोई रचनात्मक व्यक्ति नहीं हूं। हूं भी नहीं। कोई सृजनात्मक व्यक्ति रचनात्मक नहीं होता। असल में सृजनात्मक व्यक्ति विध्वंसात्मक पहले होता है, रचनात्मक पीछे। (तालियां)। कुछ भी क्रियेट करना हो तो मिटाना जरूरी होता है। बिना मिटाये सृजन की कोई संभावना ही नहीं है। रचनात्मक का बड़ा मोह है हमारे मन में। और जितना रचनात्मक का मोह है उतना ही विध्वंस से डर है। लेकिन ध्यान रहे, बिना विध्वंस के कुछ नये का जन्म होता है? (तालियां) और जो लोग पुराने को तोड़ना भूल जाते हैं, अनिवार्य रूपसे नये का बनाना भी भूल जाते हैं। और जो सोचते हैं कि हम नये को बना लेंगे बिना पुराने को तोड़े, वे सिर्फ नये के नाम पर पुराने के नये संयोग ही बना पाते हैं। निर्माण कर पाते हैं, सृजन नहीं कर पाते। पुरानी चीजों को सिर्फ लीप-पोत कर नया कर लेते हैं। वे चीजें नई नहीं होतीं, उनकी आत्मा पुराने में ही होती है। सिर्फ देह पर नये वस्त्र डाल दिये। सृजन करना हो, कुछ भी क्रियेट करना हो तो तोड़ने की बहुत हिम्मत चाहिए। तोड़ने की हिम्मत प्रसव की पीड़ा है। और जिस दिन दुनिया में कोई मां प्रसव की पीड़ा झेलना बंद कर देगी, उसी दिन मां होना भी बंद हो जायगा। उस दिन नये का जन्म भी असंभव हो जायगा। वह मां नये को जन्म दे पाती थी क्योंकि प्रसव की पीड़ा झेलने की तैयारी रहती थी। जो समाज पुराने को तोड़ने की पीड़ा को झेल पाता है, वही नये को जन्म दे पाता है। और रचनात्मक से हम इतने मोहग्रस्त हैं कि सड़क को झाड़ू लगा लेते हैं तो रचनात्मक कार्य हो जाता है। चर्खा चला लेते हैं तो रचनात्मक कार्य हो जाता है। एक अस्पताल खोल लेते हैं। एक स्कूल खोल लेते हैं तो रचनात्मक कार्य हो जाता है। ये बड़े अच्छे काम हैं। लेकिन जिन्दगियां इनसे नहीं बदलती हैं। ये सब बहुत छोटे काम हैं जिन्दगी बहुत बड़ी है। और जिन्दगी के सम्बन्ध में निरंतर मैं एक कहानी कहता हूं, वह मैं आपसे कहूं। मैंने सुना है एक गांव में एक पुराना चर्च है। वह इतना जरा जीर्ण हो गया है कि कोई उसके भीतर प्रार्थना करने नहीं जाता है। डर है कि कभी भी गिर जाय। ठीक हमारे देश जैसा होगा। जिसमें जीने में भी डर कि कब गिर जाय, कब सब हमें डुबा दे और नष्ट कर दे। फिर चर्च के ट्रस्टी बहुत घबड़ा गए हैं, चर्च में कोई न आये। उन्होंने समिति की एक बैठक बुलाई है। लेकिन वे भी चर्च के बाहर ही बैठे हैं। भीतर नहीं गए हैं। क्योंकि चर्च के भीतर जाना खतरनाक है। हवाएं चलती हैं तो डर होता है कि चर्च अब गिरा। रात में बादल गरजते हैं तो घर के लोग बाहर निकलकर देखते हैं कि चर्च गिर तो नहीं गया। ऐसे चर्च में कौन प्रवेश करेगा। बाहर बैठकर उन्होंने चार निर्णय लिए। उन्होंने चार प्रस्ताव स्वीकृत किये। पहला प्रस्ताव उन्होंने सर्व सम्मति से स्वीकृत किया कि पुराना चर्च तो गिराना पड़ेगा लेकिन बहुत दुखी हैं और भगवान से क्षमा मांगते

हैं । दूसरा प्रस्ताव उन्होंने स्वीकृत किया है कि नया चर्च बनाना पड़ेगा । हम बहुत दुखी हैं कि नया बनाना पड़ रहा है और भगवान से क्षमा मांगते हैं । और तीसरा प्रस्ताव उन्होंने किया है जल्दी से कि हम पुराने चर्च की जगह ही नया बनायेंगे । पुराने चर्च की नींव पर ही नया बनायेंगे । पुरानी ईंटें भी लगायेंगे नये चर्च में, पुराने दरवाजे, पुरानी खिड़कियां, सब पुराना सामान, पुरानी नींव पर ही लगायेंगे और नया चर्च बनायेंगे । और चौथा प्रस्ताव उन्होंने पास किया कि जब तक नया न बन जाय तब तक पुराने को गिरायेंगे नहीं । (हास्य) वह पुराना अभी तक गिरा नहीं क्योंकि नया बनेगा कैसे ? करीब-करीब इस मुल्क का ऐसा ही मन है । और हजारों वर्षों से इस देश का विचारक इस देश का चित्तक उस पुराने को तोड़ने के लिए आतुर नहीं, बल्कि उस पुराने को संभालने के लिए आतुर है । इसलिए एक अर्थ में हमने विचारक पैदा करने ही बन्द कर दिए । हम सब समर्थक पैदा करते हैं । समर्थन आसान भी है । समर्थन से पूजा सरलता से मिल जाती है । और पुराने की क्रेडिट पर और पुराने को आदर देकर पुज जाना इतना सस्ता और आसान है कि कोई भी उपद्रव लेना नहीं चाहता । अगर किसी को कोई नई बात भी कहनी हो तो वह गीता पर थोपे बिना नहीं कह सकता । गीता पर टीका लिखेगा, कृष्ण के मुंह से कहलवायेगा । कृष्ण को फंसायेगा । कृष्ण के साथ अनाचार करेगा । उनसे कहलवायेगा जो उसे कहना है । क्योंकि कृष्ण के साथ खड़े होकर उसकी बात सहज ही स्वीकृत हो जायगी । और जो नई बात के लिए श्रम करना पड़ता वह भी नहीं करना पड़ेगा । और समाज को नई बात के साथ जो लड़ाई करनी पड़ती है वह भी नहीं करनी पड़ेगी । पूजा भी आसान है, आदर भी आसान है । इस देश के विचारक को, मुझे लगता है, पत्थर खाने की हिम्मत जुटानी चाहिए (तालियां) । नहीं जुटा सके अगर, तो यह देश कभी भी नहीं बदल सकेगा, इसकी आत्मा करीब करीब मरगई है । उसे जिलाना भी मुश्किल हो गया है ।

तो जिस दिन से मुझे ऐसा लगा है कि देश की नई आत्मा का जन्म हो, उस दिन से निरंतर जागते-सोते, इस गांव में, उस गांव में, लाखों लोगों के मन में, वही एक क्रांति के बीज बोने की कोशिश कर रहा हूं । वह काम जहां मुझे ले जाय, वहां जाने की मेरी तैयारी है । वर्ष भर के लिए बंबई में हूं, फिर न्यूयार्क ।—मित्र अभी बंबई के प्रसन्न होंगे लेकिन वर्ष भर बाद उन्हें भी विदा दे देनी ही है । लेकिन जबलपुर नहीं छूटता है इतना आपको आश्वासन दिलाता हूं । (तालियां) जहां भी रहूंगा, जबलपुर के निवासी की तरह ही जाना जाऊंगा, पहचाना जाऊंगा । और यह हो सकता है आप मुझे भूल जायं । क्योंकि मेरे बिना भी आपका काम चल जायगा । ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसके बिना कोई भी काम रुकता हो । इस भ्रम में कुछ लोग रहते हों तो वे गलत भ्रम में रह जाते हैं कि उनके बिना कोई काम रुकता है । मेरे बिना आपका काम चल जायगा, आप मुझे भूल सकते हैं, भूल ही जायेंगे । लोगों की स्मृति बहुत छोटी है । बहुत जल्दी भूल जाते हैं । अखबार में एक आदमी का नाम तीन महीने तक न निकले तो लोग भूल जाते हैं । पता लगाना मुश्किल होता है कि राधा कृष्णन् कहीं हैं या नहीं । मैं अभी मद्रास में था । एक मित्र से पूछा जिनके घर ठहरा था कि राधा-कृष्णन् मद्रास में हैं ? उन्होंने कहा— होंगे, लेकिन मुझे कुछ पता नहीं । नाम अखबार में नहीं है कि वह आदमी गया । स्मृति बहुत कमजोर है । आपका काम मेरे बिना चल जायगा लेकिन मेरा काम आपके बिना नहीं चल सकता इसलिए मेरे भूलने का उपाय नहीं है । मुझे जो भी करना है वह आपके साथ करना है । मुझे जो भी कहना है वह आपसे कहना है । मुझे जो भी लाना है, वह आपके द्वारा लाना है । मेरा काम आपके बिना नहीं चल सकता इसलिए मैं भूल सकूं इसका कोई उपाय नहीं है । आपका काम मेरे बिना चल जायगा । शायद और आसानी से चल जायगा । क्योंकि न मालूम कितने लोगों की नींद मेरे कारण खराब होती है । न मालूम कितने लोगों को मेरे कारण व्यर्थ ही विचार में पड़ना पड़ता है । न मालूम कितने लोगों को मेरे कारण क्रोध

आता है। न मालूम कितने लोगों को मेरे कारण परेशानी होती है। वह आराम से सो सकेंगे। उनकी चिंता कम होगी। उनको विचार करने की झंझट नहीं पड़ेगी। एक उपद्रव की तरह मैं यहां से विदा हो जाऊंगा। लेकिन मैं आपको नहीं भूल सकूंगा क्योंकि मुझे बार-बार आपके लिए उपद्रव खड़ा करने के लिए लौट के आना पड़ेगा। (हास्य) जीसस को लोगों ने सूली दे दी। और सुकरात को जहर पिला दिया। फिर सुकरात को जहर पिलाकर उन्होंने समझा होगा छुटकारा हुआ। लेकिन सुकरात की आत्मा एथेन्स का पीछा ही करती रही। और आज अगर कोई एथेन्स को जानता है तो सुकरात की वजह से, उस आदमी की वजह से जिसको उन्होंने जहर पिला दिया था। वह पीछा करती रही। जीसस की आत्मा पीछा कर रही है। मर के भी वह पीछा नहीं छोड़ने के। मेरे जैसे लोग जल्दी से नहीं पीछा छोड़ देते। मर भी जायं तो भी पीछा करते हैं। जिन्दा रहकर तो भूलने का कोई उपाय नहीं है। मर के भी मैं भूलने वाला नहीं हूं। मैं पीछा करूंगा। पीछा करने का प्रयोजन है। जिस दिन से मुझे कुछ दिखाई पड़ना शुरू हुआ है, उस दिन से मेरा मन होता है कि आपको भी दिखाई पड़ जाय। जिस दिन से मुझे प्रकाश की किरण मिली है लगता है आपके भी इतने पड़ोस में प्रकाश है और आप अंधेरे में क्यों पड़े हैं। और जिस दिन से मुझे परमात्मा की सुगन्ध का बोध हुआ, उस दिन से मैं परेशान हूं कि फूल इतने पास में, और आप अपनी नाक क्यों बन्द किये हुए हैं ? मुझे आपसे कहना ही पड़ेगा क्योंकि यह भी मेरा समझ में आया है कि आनंद मिल जाय तो उतना बड़ा आनंद नहीं, आनंद बांटा जा जा सके तो बहुत बड़ा आनंद है। आनंद मिल जाना उतनी बड़ी घटना नहीं है जितना आनंद को बांट देना बड़ी घटना है। और स्वयं क्रांति से गुजर जाना इतना बड़ा आनन्द नहीं है जितना क्रांति की आग को चारों ओर फैला देना बड़ा आनंद है। आखिर कोई कारण नहीं है कि बुद्ध ४० वर्षों तक गांव-गांव भटकते रहे और कोई कारण नहीं है कि महावीर गांव-गांव एक-एक घर भटकते रहे। एक ही कारण है, जो उन्हें मिला है उसे वे दूसरों को भी दे देना चाहते थे। वे आपको सोने न देंगे। वे आपका द्वार खटखटाते रहेंगे। वे आपको जगाते रहेंगे। गूरूजेफ के संबंध में कनेक्यवाशा ने एक छोटी सी किताब लिखी और किताब को 'डेडिकेट' (समर्पित) किया है गुरुजेफ को। और समर्पण में, डेडिकेशन में एक शब्द लिखा है वह मुझे ख्याल आता है, लिखा है—'टु दि डिस्टर्बर आफ माई स्लीप' मेरी नींद को तोड़ने वाले को समर्पित। कुछ लोग हैं जो नींद को तोड़ने का काम करते हैं। कुछ लोग हैं जो सो नहीं सकते जब तक रात में नींद न तोड़ दें। सुकरात से अदालत में कहा था उन लोगों ने कि अगर तुम एक वचन दे दो कि सत्य बोलना बन्द कर दोगे तो हम तुम्हें जीवित छोड़ सकते हैं। सुकरात ने कहा सत्य बोलना मेरा धन्धा है, मेरा व्यवसाय है, मेरा Profession है, वह मैं छोड़ नहीं सकता। मरना पसंद कर सकता हूं, सत्य बोलना मैं नहीं छोड़ सकता। वह मैं बोलता रहूंगा। क्योंकि जिऊंगा और किसलिए? एक ही काम के लिए कि वह जो मुझे मिला है, वह जो मुझे ठीक लगता है वह कहता रहूंगा। आपसे कहूंगा। मुझसे राजी होना उचित नहीं है। असल में जो मुझसे राजी हो जाता है वह सोचना बन्दकर देता है। मेरी आकांक्षा न अनुयायी खोजने की है, न नेता बनने की है, न गुरु बनने की है। मेरी आकांक्षा आपको राजी करने की जरा भी नहीं है। और अगर आप मुझसे राजी हो जायें तो कुछ आश्चर्य न होगा कि मैं उसके खिलाफ भी बोलने लगूं। जिससे आप राजी न हों। मेरी आकांक्षा कुछ और है। वह एक छोटी सी घटना से मैं समझाऊं।

बुद्ध एक दिन एक गांव में प्रवेश किये। और गांव के द्वार पर ही एक आदमी ने, जो नास्तिक है और ईश्वर को नहीं मानता, उसने कहा, 'मैं नास्तिक हूं, मैं ईश्वर को नहीं मानता हूं, आपका क्या ख्याल है ?' बुद्ध ने कहा। "ईश्वर को नहीं मानते। ईश्वर तो है ही। तुम्हारे न मानने से क्या होगा ?" बुद्ध के साथ एक भिक्षु है आनन्द वह बहुत हैरान हो गया कि बुद्ध कहते हैं 'ईश्वर है।' और दोपहर दूसरा आदमी आया और उसने बुद्ध से कहा कि मैं आस्तिक हूं और ईश्वर में मेरी

बड़ी श्रद्धा है। आपका क्या ख्याल है ? बुद्ध ने कहा—'ईश्वर को मानते हो, पागल हो गए हो ? ईश्वर है ही नहीं।' तब तो वह आनंद और भी मुसीबत में पड़ गया है। सोचा, रात एकान्त में पूछूंगा। सुबह कहा—ईश्वर है। दोपहर कहा—नहीं है। सांझ तो और मुसीबत हुई। एक और आदमी आया और उसने कहा, मैं जानता ही नहीं कि ईश्वर है या नहीं, न मैं नास्तिक हूं, न आस्तिक हूं, आपका क्या ख्याल है ? बुद्ध चुप ही रह गये। उससे कुछ बोले ही नहीं। रात जब सोने लगे तो आनन्द ने कहा कि मुझे मुश्किल में डाल दिया। आप सो जायंगे। मेरी नींद हराम कर दी। मैं रात भर सो नहीं सकूंगा। तीन उत्तर एक दिन में ? मतलब क्या है ? सुबह कहते हैं ईश्वर है, दोपहर कहते हैं नहीं है, सांझ चुप रह जाते हैं। बुद्ध ने कहा उसमें कोई भी उत्तर तेरे लिए नहीं थे। तू आराम से सो जा। उसने कहा—लेकिन मैंने सुन लिए हैं उत्तर। बुद्ध ने कहा—तुझे सुनना नहीं चाहिए था। जिसके लिए दिए गए थे उसके ही लिए दिए गए थे। लेकिन तूने सुन लिए तो मैं तुझसे कहता हूं कि वे तीनों उत्तर गलत थे। अब तू सो जा। वे तीनों उत्तर गलत थे। आनंद ने कहा आप मुझे पागल कर देंगे। अगर वे सब—तीनों—गलत थे तो फिर सही क्या है ? बुद्ध ने कहा मैं तुम्हारे भीतर जो सोया हुआ विचार है उसके जाग जाने को ही सही कहता हूं। सुबह जो आदमी आया था वह नास्तिक था और चाहता था मैं भी उसी की गवाही दे दूं ताकि वह अपनी नास्तिकता में थिर हो जाय, स्थिर हो जाय और समझ ले कि जो मानता है वह ठीक है। उसे हिलाना जरूरी था, उसकी नींद को तोड़ना जरूरी था। इसलिए मुझे कहना पड़ा कि ईश्वर है। वह आदमी सोचता हुआ गया। दोपहर जो आदमी आया था वह आस्तिक था और सोचता था कि बुद्ध भी उसके साक्षी बन जायं कि आस्तिकता ठीक है। उससे मैंने कहाकि ईश्वर नहीं है। उसे मैंने सोचता हुआ भेजा। जो आदमी दोनों नहीं था, उसे कोई भी उत्तर देना उचित नहीं था। मेरा मौन ही उसे चिन्तन में डाल सकता था। और तुझसे मैं कहता हूं कि तीनों गलत थे। अब तू सो जा और सोच।

मेरे मन में सत्य कोई ऐसी चीज नहीं है कि बाहर से कोई दे दे। आपके भीतर ही विचार का पूर्ण जागरण सत्य की उपलब्धि बनता है। और आपके भीतर विचार तभी जगता है जब विश्वास छूटते हैं, रूढ़ियां टूटती हैं, मान्यताएं गिरती हैं, अन्ध श्रद्धाएं खंडित होती हैं। तभी आपके भीतर अपना विचार जगना शुरू होता है। और जिस आदमी के भीतर संदेह की यात्रा शुरू हो जाय वह एक दिन सत्य के मंदिर को जरूर उपलब्ध हो जाता है। क्योंकि जो संदेह करता है, वह खोजता है। जो खोजता है, वह पा लेता है। श्रद्धा संदेह के गिर जाने पर उपलब्ध होती है। संदेह के दबाने से नहीं। हम सब श्रद्धालु हैं, इसलिए सत्य तक नहीं पहुंच पाते हैं। मेरा एक ही काम है कि आपकी श्रद्धा तोड़ता रहूं। जहां भी जाऊंगा वही काम करता रहूंगा। श्रद्धा टूट जाय झूठी, जो सन्देह को दबा के मिलती है तो फिर सच्ची श्रद्धा उपलब्ध होती है। जो सन्देह का परिणाम होती है।

ये आपने शुभकामनाएं मेरे लिए प्रगट कीं, मैं उन्हें अपने लिए नहीं, अपने काम के लिए शुभकामनाएं समझूंगा। आपने मेरे लिए शुभकामनाएं प्रकट कीं, मैं समझूंगा कि आपकी शुभकामनाएं लोगों की अंधी श्रद्धाओं को तोड़ने के लिए सहारा बनेंगी। जैसा कि डा. राजबली ने कहा कि मेरे जैसे लोग स्थायी नहीं रह सकते। रहना भी चाहें तो नहीं रह सकते, कोई उपाय नहीं। परिव्राजक जैसे कीमती शब्द का मैं उपयोग न करूंगा, घुमक्कड़ शब्द ही ज्यादा ठीक है। मेरे जैसे लोगों का काम निरंतर भटकते रहना, क्योंकि मेरा काम ही यही है कि जहां भी मुझे लगे कि वहाँ कुछ अंधापन है उसे तोड़ने में लग जाना। रुकना अर्थहीन है क्योंकि जहां मैं रुक जाऊं मेरे आसपास भी अंधापन इकट्ठा हो सकता है। असल में जहां भी कुछ रुकाव होता है वहीं अंधापन शुरू होता है। उचित है कि मैं आपको हिलाऊं और आगे बढ़ जाऊं क्योंकि ये भी हो सकता है, और यह हुआ है निरंतर—बुद्ध ने लोगों को समझाया कि मूर्ति मत बनाना, और बुद्ध की ही मूर्तियां बन गईं। लोगों ने कहा और किसी की न बनायें लेकिन आप की

तो बनायेंगे। आपने इतनी कीमती बातें बताईं। और बुद्ध की जितनी मूर्तियां हैं पृथ्वी पर, उतनी किसी की नहीं। महावीर नग्न खड़े हैं और लोगों को कहाकि बाहर के और भीतर के सारे वस्त्र छोड़ देने हैं, लेकिन महावीर का अनुयायी वस्त्र बेचने का ही काम कर रहा है। उसने कपड़े की दूकान खोल ली। थोड़ी हैरानी होगी। मेरे रिश्तेदार यहां बैठे हैं उनकी तो दूकान का नाम है 'दिगंबर शाप, (हास्य)। अब दिगंबर का मतलब होता है नग्न। ऐसा निरंतर हुआ है कि जो हमारी नींद को तोड़ता है, हम उसे ही अपनी नींद की दवा बना लेते हैं। उसका ही ट्रैक्विलाइजर बना लेते हैं। जीसस को सूली लगी और अपनी सूली खुद ही अपने कंधे पर ढोनी पड़ी। और जीसस के अनुयायियों ने आखिरी बार जीसस को कहा कि हम आपको कभी न छोड़ेंगे। जीसस ने कहा ऐसा भूल के वचन मत दो। मैं तो तुम्हें कभी न छोड़ूंगा लेकिन तुम मुझे जरूर छोड़ दोगे। फिर जीसस को उनके दुश्मन पकड़कर ले गए। उनका एक भक्त, एक शिष्य पीछे पीछे चला। जीसस ने उससे कहाकि तू लौट जा। क्योंकि सुबह मुर्गे के बोलने के पहले तीन बार तू मुझे इन्कार कर चुकेगा। उसने कहा ऐसा कभी नहीं हो सकता, मैं मर जाऊँ लेकिन इन्कार नहीं कर सकता। थोड़ी ही देर में दुश्मनों ने देखा कि कोई अजनबी आदमी भी बीच में है। उन्होने उसे पकड़ लिया और पूछा कि तुम कौन हो, जीसस के साथी तो नहीं ? उस आदमी ने कहा—कभी नहीं, कौन जीसस ? मैं जीसस को पहचानता ही नहीं। मैं तो एक परदेशी हूं जो दूसरे गांव जा रहा हूं। जीसस ने पीछे लौटकर कहा कि मित्र अभी सुबह नहीं हुई और मुर्गे ने बांग भी नहीं दी और एक दफे तुमने इन्कार कर दिया, जीसस को सूली लगी। आज जीसस के भक्त दुनिया में सबसे ज्यादा हैं। उनका पादरी गले में सोने की सूली लटकाए हुए हैं। सोने की सूलियों पर फांसी नहीं लगती। और सूली पर गर्दन लटकती है, गर्दन में कोई सूली नहीं लटकाई जा सकती (हास्य)। लेकिन आदमी बहुत होशियार हैं। वह सूली को भी आभूषण बनाके गले में लटका लेता है।

एक छोटी सी बात और अपनी बात मैं पूरी कर दूंगा। १८०० वर्ष बाद जीसस को ऐसा ख्याल हुआ कि अब तो करोड़ों लोग मुझे मानते हैं अब अगर मैं पृथ्वी पर जाऊं तो जरूर लोग मेरी बात मानेंगे। १८०० साल पहले गया था तब तो लोग मेरे दुश्मन थे मुझको पहचानते नहीं थे। पादरी दूसरों के थे। मंदिर दूसरों के थे। अब तो मेरी चर्च है, मेरा पादरी है। और थोड़े पादरी नहीं हैं, सिर्फ कैथोलिक पादरियों की संख्या १२ लाख है। प्रोटेस्टेण्ट की तो अलग है। और आज जमीन पर सर्वाधिक जीसस को मानने वाले लोगों की भीड़ है। दोस्तोवस्की ने एक छोटी सी कहानी लिखी हैं कि जीसस १८०० वर्ष बाद वापस लौटें उसी गांव में, जहां उन्हें सूली लगी थी। लेकिन अब, जहां सूली लगी थी, एक बड़ा चर्च था। उस चर्च में एक सोने की सूली थी, और उस सूली की पूजा होती थी। रविवार का दिन था लोग चर्च में प्रार्थना करके लोट रहे थे। जीसस एक झाड़ के नीचे खड़े हो गये, चुपचाप। उन्होंने कहा कि अब जरूरत नहीं है कि लोगो को बताऊं कि मैं कौन हूं। अब तो वे पहचान ही लेंगे। लेकिन लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई जरूर, लोग पहचान भी गए जरूर, लेकिन जो पहचाना, वह जीसस ने कभी भी नहीं सोचा था। लोगों में आसपास बात होने लगी कि यह कौन आदमी जीसस की तरह शक्ल बनाकर खड़ा है। नकल तो बिल्कुल ठीक की है। ठीक जीसस जैसा मालूम पड़ रहा है। लेकिन इसे जल्दी भगा दो। कहीं पादरी बाहर न आ जाय,नहीं तो मुसीबत में पड़ जाय। जीसस ने कहा मुसीबत में पड़ने का कोई भी कारण नहीं है, मैं खुद जीसस हूं। वह जो १८०० साल पहले आया था, वहीं हूं। लोगों ने कहा और भी मजाक देखो। भागो जाओ जल्दी। पादरी बाहर आने को है। चर्च की घन्टियां बन्द हो गई हैं। प्रार्थना पूरी हो गई है। पादरी बाहर आयेगा तो मुसीबत में पड़ सकते हो। जीसस ने कहा : तुम भले न पहचानो, लेकिन मेरा पादरी तो कम से कम मुझे पहचानता होगा। तब तक वह पादरी आया। जिन्होंने जीसस की मजाक की थी उन्होंने पादरी के लिए रास्ता छोड़ दिया। उसके पैर हुए। पादरी ने

कहा : बदमाश, नीचे उतर, बिल्कुल जीसस जैसा वेष बना लिया। और चार लोगों से कहा—इस आदमी को पकड़ो और चलकर चर्च में बन्द कर दो। जीसस ने उस पादरी की तरफ देखा और कहा कि क्या तुम भी मुझे नहीं पहचानते ? उस पादरी ने कहा भली भांति पहचान गया हूं, जब जेलखाने में जाओगे तब पता चलेगा कि तुम यह क्या कर रहे हो। यह बहुत अपवित्र बात है कि तुम ठीक जीसस जैसी शकल बना के खड़े हो। जीसस एक बार आ चुके। अब दुबारा इस पृथ्वी पर आने वाले नहीं हैं। जीसस को एक कोठरी में बद कर दिया गया। यह कोठरी ठीक वैसी ही है, जैसे १८०० साल पहले जब वे बन्द किये गये थे। हाथ में जंजीरें डाल दी गईं। वे बहुत हैरान हुए और सोचने लगे कि क्या अपने ही लोगों और अपने ही पादरी के हाथ सूली लगेगी ? आधी रात वह पादरी लालटेन लेकर कोठरी के भीतर आया, उनके चरणों में गिर पड़ा और कहा कि मैं भली भांति पहचान गया कि आप वही जीसस हैं लेकिन बाजार में मैं आपको नहीं पहचान सकता। क्योंकि आपको अगर बाजार में पहचानूं तो हमने धन्धा बहुत मुश्किल से १८०० साल में जमाया है वह सब आप खराब कर देंगे। (हास्य)। आपकी अब कोई जरूरत नहीं है हम ठीक से काम चला रहे हैं (हास्य) आप स्वर्ग में आराम से रहे यहां पृथ्वी पर हम आपके प्रतिनिधि सब काम ठीक से चला रहे हैं (हास्य) आपकी कोई भी जरूरर नहीं है क्योंकि 'यू आर दि ओल्ड डिस्टर्बर' तुम हो पुराने विध्वँसक, पुराने उपद्रवी, पुराने शरारती। तुम फिर सब गड़बड़ कर दोगे। हम हजारों साल में किसी तरह 'एस्टेब्लिश' कर पाये (हास्य)। गड़बड़ हो जायगा। आप जायें आपकी कोई भी जरूरत नहीं है।

तो यह जो आदमी है, यह जो हम हैं, यह जो हमारा मन है यह बहुत चालाक है। यह सारी क्रांतियों को पी जाता है। और जीवन में आनंद को, सत्य को, शून्य को प्रगट नहीं होने देता। कैसे आदमी के जाल को हम तोड़ सकें। जिनको इस जाल को तोड़ना है अब उन्हें सचेत होना चाहिए कि उनके द्वारा फिर ये जाल खड़ा न हो जाय। तो मेरे लिए स्थायी होने का कोई उपाय नहीं है। मैं स्थायी होना भी नहीं चाहूंगा, जमीन पर ही नहीं, किसी के मन में भी स्थायी न होना चाहूंगा। क्योंकि बहुत हानि हुई मनुष्य की, कुछ लोग मनों में स्थायी हो गये। किसी के मन में कृष्ण, किसी के मन में बुद्ध, किसी के मन में राम, किसी के मन में गांधी। बहुत पत्थर की तरह मन में ये स्थायी हो गए हैं मैं वहां सब तरल कर देना चाहता हूं। यह काम बहुत धन्यवाद रहित है। इसके लिए कोई धन्यवाद नहीं देगा। शायद आप भी फिर से सोचेंगे कि यह अभिनन्दन किया, ठीक किया ? कोई गलती तो नहीं की ? और ठीक से विचार करें तो शायद पायेंगे—करना था ? नहीं करना था ? शायद बिदा हो रहा हूं इसलिए औपचारिकतावश ठीक लगा होगा कि अभिनन्दन कर दें। शायद कहूं कि अब नहीं जाऊंगा, रुकता हूं, तो शायद फिर विचार करें कि अभिनन्दन किया, वह ठीक किया ? नहीं ठीक किया। आदमी का मन बहुत अजीब है। लेकिन फिर भी, इतने प्रेम से, इतने आनंद से आपने मेरे काम और मेरे लिए शुभ कामनाएं कीं, इसके लिए बहुत बहुत अनुग्रहीत हूं। और मैं भी आपके लिए प्रभु से प्रार्थना करता हूं—मेरी बातों को बहुत बार सुना है, मेरी बातों पर बहुत बार सोचा है, दुखी हुए हैं या प्रसन्न हुए हैं, उन बातों का कोई भी मूल्य नहीं है अगर आपके जीवन मे उनके द्वारा कोई रूपान्तरण की सम्भावना का द्वार न खुलता हो। प्रभु से प्रार्थना करता कि जिस आनन्द की झलक मुझे दिखाई पड़ती है, वह आपको भी मिल सके और जिस रूपान्तरण को मैं अनुभव करता हूं, वह आपके जीवन में भी घटित हो सके। आप भी बीज ही न रह जायें, वृक्ष बन सकें। और आपका सितार भी ध्वनित हो सके। उस पर भी संगीत बज सके। और एक दिन आप भी जान पायें जीवन का अर्थ। मेरी बातों को इतनी शान्ति से सुना, इससे बहुत अनुग्रहीत हूं, और अन्त में सबके भीतर बैठे प्रभु को प्रणाम करता हूं, मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

●●●

धर्म मनुष्य केन्द्रित हो

(आचार्य श्री द्वारा पटना में दिया गया एक प्रवचन)

—संकलन : शिव

हजारों वर्षों से धर्म के नाम पर खोज चलती है। किसकी खोज चलती है ? परमात्मा की खोज चलती है, मोक्ष की खोज चलती है, लेकिन हजारों साल के बाद भी न तो परमात्मा का कोई पता है, न आत्मा का कोई पता है, न मोक्ष का कोई पता। मेरे देखे यह खोज ही गलत हो गई। यह खोज वैसे ही गलत हो गई है जैसे कोई अंधा आदमी प्रकाश की खोज करे। यह खोज इसलिए गलत नहीं हो गई है कि प्रकाश नहीं है। प्रकाश तो है। लेकिन अंधा आदमी प्रकाश की खोज कैसे करे ? और अंधा आदमी अगर प्रकाश की खोज में पड़ जाय, तो एक बात निश्चित है कि अंधे को प्रकाश नहीं मिल सकता है। अंधे आदमी को प्रकाश की बात ही नहीं करनी चाहिए। अंधे आदमी को आँख की खोज करनी चाहिए। आंख होगी तो प्रकाश होगा आँखें नहीं होगीं तो प्रकाश नहीं होगा। प्रकाश हो और आँख न हो तो भी प्रकाश नहीं है।

धर्म की खोज को ईश्वर की दिशा में लगाने से से ही धर्म जगत में विकसित नहीं हो पाया। असली सवाल ईश्वर नहीं है, असली सवाल मनुष्य है। मनुष्य की खोज आधार बननी चाहिए धर्म का। जिस दिन मनुष्य अपने को खोज लेता है। जिस दिन मनुष्य अपने को जान लेता है, उस दिन ईश्वर अनजाना नहीं रह जाता है। उस दिन मोक्ष भी अनपाया नहीं रह जाता। धर्म का केन्द्र मनुष्य होना चाहिए, ईश्वर नहीं। धर्म का केन्द्र मोक्ष नहीं होना चाहिए, यह पृथ्वी होनी चाहिए। और धर्म का केन्द्र दूर आकाश की बातें नहीं होना चाहिए, मनुष्य के मनस की, साइकोलाजी की बात होनी चाहिए। हजारों साल तक धर्म की बात करने के बाद भी पृथ्वी धार्मिक नहीं हो सकी, उसका कारण अधर्म नहीं है, उसका कारण नास्तिक भी नहीं है। उसका कारण धर्म की दिशा, धर्म का Dimension गलत है। धर्म ने ऐसे लक्ष्य बना रखे हैं, जिन लक्ष्यों तक मनुष्य को नहीं ले जाया सकता है। जैसे अंधों को प्रकाश के दर्शन कराने का लक्ष्य कोई बना ले, और यह भूल ही जाय कि अंधों के पास आँख नहीं है। मनुष्य के पास मनुष्य ही नहीं है और तुम ईश्वर की बातें कर रहे हो। मनुष्य मनुष्य ही नहीं है और तुम मोक्ष की बातें कर रहे हो। मनुष्य खुद ही नहीं है अभी, खोजेगा किसे ? खोज वह सकता है जो हो। हम खुद ही नहीं हैं। हम खोज क्या करेंगे ?

राम कृष्ण कहते थे एक अंधा मित्र एक घर में मेहमान हुआ। बहुत स्वागत सत्कार किया उस अंधे मित्र का। भोजन के बाद वह अन्धा मित्र पूछने लगा, यह तुमने जो मुझे खिलाया, बहुत रुचिकर लगा। यह है क्या ? घर के लोगों ने कहा खीर है' वह अन्धा आदमी कहने लगा : खीर ? खीर यानी क्या ? वे लोग कहने लगे : 'दूध से बनी है।' वह अन्धा आदमी पूछने लगा : 'दूध ? दूध कैसा होता है ?' वे घर लोग हैरान हो गये क्योंकि उन्होंने जो भी उत्तर दिया, अन्धे ने उसी को प्रश्न बना लिया। लेकिन घर के लोग यह भूल गये कि अन्धे को न खीर दिखाई पड़ती है, न दूध दिखाई पड़ता है। उसे दिये गये सारे उत्तर आँख वाले के उत्तर हैं।

और अन्धे आदमी को आंख वाले के उत्तर का कोई मतलब नहीं, असंगत है, Irretevent है। Absurd है। फिर भी घर के लोग न समझे। वह अन्धा आदमी पूछने लगा दूध कैसा होता है, कुछ मुझे समझाओ। घर के एक बुद्धिमान ने कहा, और बुद्धिमान बड़े खतरनाक होते हैं क्योंकि वे यह देखते नहीं कि वे अन्धे से बातें कर रहे हैं। वे अपनी बुद्धिमत्ता की बातें किये चले जाते हैं, सवाल आपकी बुद्धिमत्ता का नहीं है, सवाल जिससे आप बात कर रहे हैं उसका है। एक बुद्धिमान ने कहा बगुला देखा है कभी ? आकाश में उड़ता है वह। बगुले के सफेद पंखों की तरह शुभ्र होता है दूध। वह अंधा आदमी कहने लगा मुश्किल से मुश्किल में डाल रहे हो मुझे। अब यह बगुला क्या होता है ? यह सफेदी क्या होती है ? लेकिन घर के लोगों को फिर भी होश न आया कि हम अन्धे से बात कर रहे हैं। वे अपने आंख वाले होने के ढग से ही बात किये चले गए। अन्धे और आंख दोनों की बातचीत कहीं नहीं मिलती। मिल भी नहीं सकती। क्योंकि जो बातचीत आंख के अनुभव से निकलती है वह अन्धे के जगत में कहीं प्रवेश नहीं करती। कोई Communication नहीं होता। कहीं कोई मेल नहीं होता। रास्ते कहीं कटते ही नहीं। आप तो हैरान होंगे कि हम सोचते हैं कि अन्धे को प्रकाश नहीं दिखाई पड़ता। आप तो हैरान होंगे कि अन्धे को अन्धेरा भी नहीं दिखाई पड़ता। अन्धेरे को देखने के लिए भी आंख चाहिए। अंधेरा भी नहीं दिखता है अंधे को। आप इस ख्याल में मत रहना कि अन्धा बिलकुल अंधेरे में जीता है। अंधेरे को देखने के लिए भी आंख चाहिए। आंख के बिना अंधेरा भी नहीं दिख सकता। आप सोचते हैं हम आंख बन्द कर लेते हैं तो हमको अंधेरा दिखता है। तो आप यह मत सोचना कि अन्धे को भी अंधेरा दिखता है। आप को आंख बन्द करने पर अंधेरा दिखता है क्योंकि आंख खुली होने से आपको उजाला दिखता है। वह उजेले के दिखने की वजह से आपको अंधेरा दिखता है। अन्धे को अंधेरा भी नहीं दिखता है। तो जिसको अंधेरा भी न दिखता हो उसको प्रकाश के संबँध में क्या समझा सकते है आप ? अगर आप उससे यह भी कहें कि अंधेरे से उलटी होती है यह चीज, तो पूछेगा अंधेरा क्या है ? लेकिन घर के लोगों ने कहा 'बगुले की पंख की तरह सफेद, तो अंधे आदमी ने कहा : "आप क्यों मुझे परेशान करते हैं ? मेरा पहला सवाल अपनी जगह खड़ा है कि तुमने मुझे खिलाया है वह क्या है ? तुमने उत्तर दिया, मेरा दूसरा सवाल खड़ा हो गया कि खीर यानी क्या ? तुमने उत्तर दिया, मेरा तीसरा सवाल खड़ा हो गया कि आखिर दूध यानी क्या ? तुम उत्तर देते हो कि बगुले के सफेद पंख जैसा। अब और मुश्किल में डाल दिये, यह बगुला क्या है ? यह सफेद पंख क्या है ? यह शुभ्रता, यह सफेदी क्या है ?"

दिये गये सब जबाब प्रश्न बन गये। आज तक ईश्वर के सम्बन्ध में जितनी बातें कही गई हैं, सब प्रश्न बन गई हैं, कोई जवाब नहीं बना। आज तक मोक्ष के सम्बन्ध में जितनी बातें कही गई हैं, सुननेवालों ने उन्हें प्रश्न बना लिया है, कोई जवाब नहीं। और उसका कुल कारण इतना है कि दो अलग आयामों पर बातचीत चल रही है। आदमी को ईश्वर से कोई मतलब है। आदमी को अपने से ही मतलब नहीं है, ईश्वर से क्या मतलब हो सकता है ? आदमी को मोक्ष से कोई प्रयोजन नहीं है। फिर भी घर के लोग सोचने लगे कि कैसे समझायें ? तो अंधा कहने लगा बगुले के संबंध में कुछ ऐसा समझाओ जो मैं समझ सकूं। ऐसा मत समझाओ जो तुम जानते हो। सवाल तुम्हारे जानने का नहीं, सवाल मेरे समझने का है। तो एक बुद्धिमान आगे आया और जैसा मैंने कहा—बुद्धिमान सदा खतरनाक होते हैं क्योंकि वे अपनी बुद्धिमत्ता से बोलते हैं। तो उसने अपना हाथ उस अन्धे आदमी के पास किया और कहा : मेरे हाथ पर हाथ फेरो। उस अंधे आदमी ने हाथ पर हाथ फेरा। जरा यह बात तो समझ में आने जैसी लगी क्योंकि स्पर्श की भाषा अंधा समझता है। उसने कहा लेकिन इसका क्या मतलब ? तो समझदार आदमी ने कहा— हाथ पर हाथ फेरने से जैसा तुम्हें लगता है, बगुले की गर्दन पर भी हाथ फेरो तो ऐसा ही लगेगा बगुले की गर्दन भी ऐसे ही सुडौल होती है। ऐसी ही गोल होती है। वह अंधा आदमी

खड़ा होकर नाचने लगा, पता है क्यों ? वह नाचने लगा क्योंकि वह समझ गया कि खीर कैसी होती है ? वह समझ गया कि खीर मुड़े हुए हाथ की तरह होती है। वह गलत समझा ? वह बिल्कुल ठीक समझा। खीर से सवाल उठा, हाथ पर जाकर जवाब खतम हुए। खीर और हाथ का मेल एक हो गया। वे घर के लोग अपना सिर पीटने लगे और कहने लगे कि इससे तो अच्छा था कि अंधा अज्ञान में ही रहता यह ज्ञान तो और भी खतरनाक है। और अक्सर अन्धे का ज्ञान अज्ञान से ज्यादा खतरनाक होता है। असल में दूसरे से मिला हुआ ज्ञान हमेशा ही खतरनाक होता है। जो हमने नहीं जाना है, वह हम दूसरे से ले लें, वह खतरनाक सिद्ध होता है। अज्ञान कम से कम हमारा होता है। ज्ञान उधार होता है। जो अपना है वही ठीक है, जो दूसरे का है उसकी बजाय। अन्धे आदमी को यह पता था कि मैं नहीं जानता हूं, बात ठीक थी, सत्य थी। अब वह समझता है कि मैं जानता हूं। लेकिन वह क्या जानता है ? वह यह जानता है कि दूध मुड़े हुए हाथ की तरह होता है। सारी समझाने की कोशिश यहां ले आई। क्योंकि ऐसा हुआ ? समझाने वालों ने एक भूल कर दी। समझाने की दिशा गलत थी। अन्धे आदमी को समझाना था कि तेरे पास आँखें नहीं हैं। इसलिए हम कोई उत्तर न देंगे। क्योंकि हमारे पास आँखें हैं। आँखों का कोई भी उत्तर न आंखों के लिए अर्थहीन है। अगर तुझे जानना ही है तो चल तेरी आँख का इलाज करें। आँख जिस दिन तेरे पास होगा तू जानेगा कि दूध कैसा है, तू जानेगा कि बगुला कैसा है, सफेदी कैसी है। फिर तुझे समझाना नहीं पड़ेगा, तू समझ जायगा।

लेकिन दुनिया को धर्मगुरू समझा रहे हैं कि ईश्वर ऐसा है, मोक्ष ऐसा है, आत्मा ऐसी है, स्वर्ग ऐसे हैं, नर्क ऐसे हैं। सब फिजूल बकवास है। सवाल यह नहीं है कि मोक्ष कैसा है। होगा। सवाल यह नहीं है कि ईश्वर कैसा है। सवाल असल में यहहै कि जिस आदमी को हम समझा रहे हैं वह बिल्कुल अन्धा है कि इन चीजों के प्रति, वह अपने प्रति ही अंधा है। दूर हैं ये चीजें सब। वह अपने को भी ठीक से नहीं जानता कि मैं क्या हूं और कौन हूं। धर्म की गलत दिशा मेटा-फिजिक्स में ले गई है धर्म को। पारलौकिक बातों में हवाई बातों में। अबस्ट्रेक्ट सिद्धान्तों में। जबकि धर्म का मूल आधार सिर्फ मनस् शास्त्र हो सकता है। दूर नहीं ले जाना है आदमी को, उसके पास ले जाना है। वह क्या है ? उसकी खोजबीन करनी है। और जिस दिन कोई आदमी अपने को खोज लेता है, उस दिन इस दुनियां में अनखोजा कुछ भी नहीं रह जाता। जिसने अपने को जान लिया है, वह परमात्मा को भी जान लेता है। इसलिए धर्म का ईश्वर से कोई भी संबंध नहीं है। जैसे अन्धे आदमी का प्रकाश से कोई सम्बन्ध नहीं है। धर्म का सम्बन्ध है मनुष्य से। धर्म को बनानाहै मानव केन्द्रित। वह मनुष्य केन्द्रित होना चाहिए। अब तक वह गॉड-सेन्ट्रिक है। धर्म जो है वह ईश्वर केन्द्रित है। और उसको बनाना चाहिए मनुष्य केन्द्रित। क्योंकि ईश्वर को धर्म की कोई भी जरूरत नहीं है। जरूरत है आदमी को। और धर्म को आदमी से कोई मतलब नहीं है। धर्म की किताबों में आदमी से कोई सम्बन्ध ही नही है। धर्म की किताबें विस्तार से बातें करती हैं ईश्वर को सिद्ध करने की। धर्म की किताबें नर्क और स्वर्ग के नक्शे बनाती हैं। धर्म की किताबें मोक्ष के सम्बन्ध में विस्तीर्ण चर्चा करती हैं। लेकिन मनुष्य के सम्बन्ध में धर्म कोई भी बात नहीं करता। आप कहेंगे कि नहीं, करता है। धर्म कहता है कि मनुष्य आत्मा है। लेकिन यह मनुष्य के बाबत चर्चा नहीं है। यह आत्मा के बाबत चर्चा है। मनुष्य क्या है अपनी सचाई में ? इसके बाबत धर्म बहुत विचार नहीं करता। और इसीलिए धर्म मनुष्य को रूपांतरित भी नहीं कर पाया। और इसीलिए धर्म मनुष्य के परिवर्तन का विज्ञान भी नहीं बन पाया। और इसीलिए धर्म करीब-करीब व्यर्थ हो गया। मनुष्य के जीवन में धर्म से कोई क्रांति नहीं आती, ऐसा मालूम पड़ता है। इसलिए पहली बात आज आपसे कहना चाहता हूं, वह यह कि सच में ही न मालूम मैं कितने लोगों से मिलता हूं। मुझे अब तक ऐसा आदमी नहीं मिला जिसका सचमुच ही ईश्वर से कोई प्रयोजन हो।

हां ईश्वर की बातें करने वाले लोग मिलते हैं और कहते हैं कि हमें ईश्वर को खोजना है। लेकिन अगर बहुत गौर से उनके साथ थोड़ी बातचीत की जाय, तब पता चलता है कि ईश्वर से उन्हें कोई मतलब नहीं है। उनका चित्त दुखी है। वह दुख से मुक्त होना चाहते हैं। किसी किताब में उसने पढ़ लिया है कि ईश्वर को जानने से दुख की मुक्ति हो जाती है। वह कहते हैं मुझे ईश्वर को खोजना है। उनका प्रयोजन है दुख से मुक्ति कैसे हो जाय, वह असली प्रयोजन है। ईश्वर की बात किसी शास्त्र से सुन ली है। एक आदमी अशांत है। वह अशांति से छुटकारा चाहता है। वह कहता है मोक्ष कैसे मिले ? मुक्ति कैसे हो ? अशांति से छुटकारा उसका सवाल है असली और सवाल वह गलत किये दे रहा है मोक्ष कैसे मिले, मुक्ति कैसे मिले ? अगर उसके भीतर छानबीन करें तो पता चलेगा कि उसे मोक्ष से कोई मतलब नहीं है। उसने शास्त्रों से सुन लिया है, गुरुओं से सुन लिया है कि मोक्ष में ही शांति मिलती है। उसको शांति चाहिए। तो वह कहता है.मोक्ष कैसे मिले ? लेकिन शांति चाहिए तो धर्म का विज्ञान खड़ा होगा और मोक्ष चाहिए तो धर्म की बकवास मैटाफिजिक्स खड़ी होगी। ये दोनों दिशाएं अलग हो जायंगी।

जैसे एक आदमी बीमार है, टी० बी० से परेशान है और वह कहता है कि मुझे मोक्ष चाहिए, क्योंकि उसने किसी किताब में अगर पढ़ लिया हो कि मोक्ष में कोई बीमारी नहीं होती। मोक्ष में कोई बीमारी नहीं होती। तो वह आदमी आकर कहता है मुझे मोक्ष चाहिए। असली में चाहिए उसे टी. बी. से छुटकारा उसका कैसे हो और वह आदमी कहता है कि मुझे मोक्ष चाहिए। तो उसके इस मोक्ष चाहने से मेडिकल साइंस विकसित होगी ? कैसे विकसित होगी ? अगर वह ठीक ठीक आकर कहे कि मैं बीमार हूं मुझे बीमारी से छुटकारा चाहिए तो मेडिकल साइन्स विकसित होगी। नहीं तो नहीं विकसित होगी। धर्म का विज्ञान विकसित नहीं हुआ क्योंकि धर्म की मौलिक चाह क्या है, वह हम नहीं पकड़ पाये और उस चाह को गलत दिशा में संलग्न कर दिया। अशांत आदमी चाहता है मुझे ईश्वर चाहिए और मैं यह आपसे कह दूं दुनिया में कोई भी ईश्वर को पा लें, अशांत आदमी ईश्वर को कभी नहीं पा सकता। लोग कहते हैं, ईश्वर को पाने से शांति मिलेगी, वह बिलकुल गलत कहते हैं। असली बात उल्टी है। असली बात यह है कि जो शान्त हो जाता है उसे ईश्वर मिलता है। ईश्वर के मिलने से शान्ति नहीं मिलती। अगर ईश्वर के मिलने से शान्ति मिलती हो तो इसका मतलब हुआ कि अशांत आदमी को ईश्वर मिल सकता है। और अगर अशान्त आदमी को इश्वर मिल सकता है तो हम सब काफी अशान्त हैं। क्या और अशांत होना पड़ेगा तब ईश्वर मिलेगा ? अशान्त आदमी को ईश्वर नहीं मिल सकता। इसलिए मैं कहता हूं कि ईश्वर के मिलने से शांति नहीं मिल सकती। हां, शांति मिल जाय तो ईश्वर मिल सकता है इसलिए असली सवाल ईश्वर नहीं है, असली सवाल है शान्त चित्त।

लेकिन तब पूरी स्थिति बदल जायगी। अगर आप ईश्वर को खोजने जाते हैं तो हिन्दू अलग हो जायगा, ईसाई अलग हो जायगा, जैन अलग हो जायगा। क्योंकि वे कहेंगे ईश्वर कैसा होता है तो पच्चीस मन्तव्य हो जायेंगे क्योंकि कोई भी नहीं जानता कि कैसा होता है।

अगर ईश्वर को केन्द्र बनाते हैं तो हिन्दू अलग होगा, मुसलमान अलग होगा, ईसाई अलग होंगे। दुनिया में ३०० धर्म हैं और अगर मनुष्य के चित्त की शान्ति को केन्द्र बनाते हैं तो दुनियां में एक धर्म होगा, तीन सौ धर्म नहीं हो सकते। क्योंकि मन की अशांति लाने के नियम अलग नहीं हो सकते। और हिन्दू अशान्त हो तो उसके नियम अलग नहीं हो सकते। शान्ति लाने के नियम और सूत्र तो समान हैं। क्योंकि अशांति को हम जानते हैं। अशाति की तो वैज्ञानिक प्रक्रिया है। हम कैसे अशान्त होते हैं, यह हम जानते हैं, इसे हम खोज सकते हैं। हम कैसे शान्त होंगे, इसे हम खोज सकते हैं। यह तो विज्ञान बन सकता है। धर्म उस दिन विज्ञान बन जायगा जिस दिन हम धर्म को वास्तविक प्रश्नों से जोड़ेंगे। और जब तक हम अवास्तविक प्रश्नों से जोड़ेंगे, धर्म कभी विज्ञान नहीं बन सकता। और ध्यान रहे, आने वाली दुनिया विज्ञान की होगी। अगर धर्म

वैज्ञानिक बनता है तो वह टिकेगा, अन्यथा वह जा चुका। अब वह बच नहीं सकता। धर्म को वैज्ञानिक नहीं बनने देगा वह आदमी जो कहता है ईश्वर का, मोक्ष का, निर्णय करना धर्म है। नहीं, मनुष्य के चित्त को बदलना उसके चित्त की अशांति और दुख को रूपांतरित करना धर्म है। और चित्त शांत हो जाय, मौन हो जाय, तो शांत और मौन चित्त में वैसे ही जीवन के सत्य झलक आते हैं जैसे शांत झील में ऊपर का चाँद दिखाई पड़ने लगता है। निर्धूल दर्पण पर आपका चेहरा बन जाय, ऐसे ही दर्पण जैसा चित्त जब शांत होता है तो जीवन के सत्य उसमें दिखाई पड़ने शुरू हो जाते हैं। जीवन के सत्यों का निर्णय नहीं करना है। जीवन के सत्यों और हमारे बीच में जो धूल का बड़ा पर्दा है अशांति का, वह कैसे दूर हो अपनी सवाल यह है। क्या मुसलमान और तरह से अशांत होता है और हिन्दू और तरह से अशांत होता है? पुरुष और तरह से अशांत होता है स्त्रियाँ और तरह से अशांत होती हैं, कभी आपने सोचा? अशांति के नियम तो जाहिर हैं। दुनिया में किसी को भी अशांत होना हो तो उन्हीं नियमों का पालन करना पड़ेगा। और शांत होना हो तो भी। धर्म क्यों इतने अलग-अलग हो गये? धर्म के अलग होने का कारण था कि धर्म को हमने हवाई बातों पर केन्द्रित कर दिया। ईश्वर पर केन्द्रित कर दिया। खतरनाक बात हो गई यह। फिर बंटवारा बिल्कुल स्वाभाविक था। अंधों को हमने प्रकाश-केन्द्रित बना दिया। और अन्धे विचार करने लगे कि प्रकाश कैसा है? फिर उन्होंने जो-जो विचार किया वह-वह उन्होंने कहा फिर अंधे लड़ने लगे कि हम जो कहते हैं, वही सही है। आँख वाला तो विनम्र भी हो सकता है। अन्धे कभी विनम्र नहीं होते। क्योंकि अन्धे को डर लगता है कि अगर हमने कुछ धीरे से कहा, विनम्रता से कहा तो कहीं शक न हो जाय कि यह आदमी नहीं जानता है। जिन-जिन को भीतर शक होता है जानने में, वे दावेदार की तरह कहते हैं कि जो मैं कहता हूं वही है। इसे मैं सिद्ध कर दूंगा। सिद्ध सिर्फ अन्धे करना चाहते हैं। आँख वाले हँस के बात टाल देंगे। वह कहेंगे ठीक है। आँख वाला विनम्र हो सकता है क्योंकि प्रकाश को जानता है। अंधा विनम्र नहीं हो सकता क्योंकि प्रकाश को जानता नहीं, दावा करता है। और जब दावा करना है तो दावा पूर्ण करना है नहीं तो कमजोरी जाहिर होती है। यह दुनिया में इतने धर्मों की जरूरत नहीं है। और जब तक इतने धर्म दुनिया में हैं तब तक धर्म नहीं हो सकता। जब तक Religions हैं तब तक Religion का उपाय नहीं है।

और दुनिया में आदमी को भटकन का जो रास्ता मिल गया है वह अधर्म के कारण नहीं मिल गया है। वह बहुत धर्मों के कारण मिल गया है। यह बहुत आश्चर्य की बात है कि सत्य अनिर्णीत है। और असत्य बिल्कुल निर्णीत है। शाँति अनिर्णीत है और अशांति बिल्कुल निर्णीत है। और जब सत्य पर झगड़ा हो, और इतना झगड़ा हो कि तय करना मुश्किल हो जाय कि क्या सत्य है तो आदमी असत्य की ओर चला ही जायगा। वह कम से कम निश्चय तो है। उसमें कोई झगड़ा तो नहीं है। धर्म के संबंध में विराट झगड़ा है और इसलिए आदमी को अधर्म की दिशा मिल जाती है, पहले तुम तय कर लो कि धर्म क्या है फिर सोचेंगे, अभी तो यह तय ही नहीं है कि धर्म क्या है। ईश्वर क्या है। है भी या नहीं। धर्म अनिर्णीत है। और अधर्म बिल्कुल निर्णीत है। तो निर्णीत जो है वह आदमी को आकर्षित कर लेता है। दुनिया में जिस दिन धर्म का विज्ञान होगा-एक, Universal—उस दिन अधर्म की ताकतें टूटना शुरू हो जायगी। वे तब तक नहीं टूटेंगी। इसलिए मैं कहता हूं हिन्दू, मुसलमान, जैन, ईसाई, बौद्ध सभी मिलकर दुनिया को अधर्म में डुबाये रखने का काम कर रहे हैं। जब तक ये विदा नहीं होते, तब तक दुनिया धार्मिक नहीं हो सकती। लेकिन ये कोई चाहते भी नहीं कि दुनिया धार्मिक हो जाय। क्योंकि जिस दिन दुनिया धार्मिक हो जायगी उस दिन पुरोहित के धन्धे का अंत आ जायगा। ये बहुत उल्टी बातें हैं लेकिन अकसर ऐसा होता है।

एक डाक्टर एक मरीज का इलाज करता है। ऐसे ऊपर से वह पूरी चेष्टा करता है मरीज को ठीक करने की, चेतन मन से, कांससली। लेकिन अचेतन मन चाहता है कि मरीज मरीज बना रहे। क्योंकि अगर सब मरीज ठीक हो जायें तो डाक्टर पहले मर जायगा, मरीज बाद में मरेगा। डाक्टर के लिए बहुत जरूरी है कि मरीज मरीज रहे। और अगर पैसे वाला मरीज है तो थोड़ी ज्यादा देर मरीज रहे। ऊपर चेतन मन से उसकी पूरी शिक्षा उसे कहती है कि ठीक करो। और वह पूरे चेतन मन से ठीक करने की कोशिश करता है। लेकिन अचेतन मन में, गहरे में वह मरीज को देखकर वह खुश होता है। डाक्टर भी बात करते हैं आपस में कि इस वक्त 'सीजन' चल रहा है।

मैंने सुना है एक रात एक होटल में तीन चार लोगों ने खूब खाना खाया, खूब शराब पी। आधी रात तक वे जमे रहे। फिर जब आधी रात को वे बिल चुकाकर बाहर निकलने लगे तो होटल के मैनेजर ने अपनी पत्नी को कहा कि ऐसे जानदार ग्राहक रोज आ जाय तो हम कुछ ही दिन में खुशहाल हो जाय। चलते वक्त जिस आदमी ने पैसे चुकाए थे उसने कहा भगवान से प्रार्थना करो कि हमारा धन्धा जोर से चले तो हम भी रोज आयेंगे। चलते वक्त मैनेजर ने पूछा कि यह तो बता दीजिए कि आपका धंधा क्या है? उस आदमी ने कहा मैं मरघट पर लकड़ी बेचने का काम करता हूं। धंधा कभी जब जोर से चलता है, हम बराबर आयेंगे। भगवान से प्रार्थना करो कि धंधा जोर से चले। तो डाक्टर का अचेतन मन तो यह कहता है कि बीमारी फैले। और डाक्टर का चेतन मन कोशिश करता है कि बीमारी दूर हो। पुरोहित, साधु, सन्यासी ऊपर से तो बात कहता है कि धर्म फैले, लेकिन अचेतन मन में चाहता है कि अधर्म रहे। क्योंकि अधर्म ही उसके व्यवसाय का आधार है। जिस दिन अधर्म मिट जायगा उस दिन पुरोहित कहां होगा?

मैंने सुना है कि एक पहाड़ी रास्ते से एक चर्च का पादरी किसी गांव में प्रवचन के लिए जाता था। पास की ही खाई में किसी आदमी ने जोर से आवाज लगाई कि मैं मर रहा हूं मुझे किसी ने छुरे मारे हैं, ऐ पादरी, ऐ पुरोहित, आ मेरी सहायता कर। पादरी ने नीचे झांक कर देखा, एक आदमी खून में लथपथ पड़ा है। उसके पास एक छुरा है। किसी ने छुरा मारा है। काफी घाव लगे हैं। खून नीचे बह रहा है। पादरी को जाकर ठीक समय पर चर्च में 'प्रेम' के ऊपर प्रवचन देना है। उसने सोचा अगर इस झंझट में पड़ा तो मेरे प्रवचन का क्या होगा। वह भागने लगा। लेकिन उस नीचे पड़े आदमी ने चिल्लाया कि मैंने तुम्हें भली भांति पहचान लिया है। मैं उसी गांव का रहने वाला हूं जिसमें तुम आज प्रेम का प्रवचन देने जा रहे हो। मैं भी सुनने आने वाला था। वहीं के लिए निकला था लेकिन यहां मुझे छुरे मार दिये गये और ध्यान रहे अगर मैं बच गया तो सारे गांव में खबर कर दूंगा कि यह आदमी प्रेम के प्रवचन देने को इतनी जल्दी में था कि एक आदमी मर रहा था उसे उठाने नीचे नहीं उतरा। इसके प्रेम के प्रवचन का क्या अर्थ हो सकता है? पादरी डरा कि कहीं जाकर उसने गांव में यह खबर कर दी तो बड़ी मुश्किल होगी। पादरी नीचे उतरा। जाके उसके चेहरे को खून से भरा था पोंछा। चेहरा पोंछते वक्त उसके हाथ कंप गए। क्योंकि यह तो पहचाना हुआ आदमी मालूम पड़ा। उसने कहा तुम तो पहचाने हुये मालूम पड़ते हो। उस आदमी ने कहा, अच्छी तरह क्योंकि तुम्हारे चर्च में मेरी तस्वीर लटकी हुई है, मैं शैतान हूं। पादरी तो एकदम घबड़ा गया। वह खड़ा हो गया, भगवान का नाम लेने लगा कि अच्छा है कि तुम मर जाओ। क्योंकि तुम्हारे मरने के लिए तो हम सारी चेष्टाएं कर रहे हैं निरन्तर। अच्छा हुआ कि तुम मार डाले गए, तुम्हें किसी ने छुरे भोंक दिए हैं। तुम जल्दी मर जाओ। वह शैतान जोर से हंसने लगा। उसने कहा कि पागल पादरी! मालूम होता है तुझे धन्धे की पूरी खबर नहीं है। जब तक मैं हूं तब तक तेरा धंधा है। जिस दिन मैं मर जाऊंगा उस दिन तू भी मर जावेगा। मुझे बचाने की जल्दी कोशिश कर। तेरी दुकान चलती है, जब तक शैतान है। जिस दिन दुनिया में शैतान नहीं होगा, तेरी दुकान को कौन

पूछेगा ? पादरी को ख्याल आया, यह तो ट्रेड सीक्रेट था। यह तो बात सच है। उसने जल्दी से शैतान को उठाया और कहा कि मरो मत, ठीक से सांस लो। मैं तुम्हें अस्पताल ले चलता हूं। भाड़ में जाय वह प्रवचन और वह धर्म। क्योंकि तुम हो तभी तक हम हैं, यह हम समझ गए। दुनिया के धर्म गुरु और साधु और संन्यासियों की जमात नहीं चाहती कि समाज धार्मिक हो जाय। और समाज को अधार्मिक बनाने का सबसे बुनियादी रास्ता यह है कि धर्म को निर्णीत मत होने दो, धर्म को विज्ञान मत बनने दो, धर्म को अंध विश्वास रहने दो। जब तक धर्म अंध विश्वास है तब तक दुनिया धार्मिक नहीं हो सकती। तब तक एक तरफ अंध विश्वास फैलाते रहो और दूसरी तरफ लोगों को समझाते रहो कि धार्मिक बनो। जितना लोग अधार्मिक होते हैं उतना साधु, सन्यासी, पादरी और पुरोहित के लिए धर्म का प्रचार करने के लिये ठीक मौसम निर्णीत हो जाता है। निर्णीत हो जाता है कि वह समझाएं लोगों को। एक तो रास्ता यह है कि धर्म को विज्ञान मत बनने दो। आज तक धर्म को विज्ञान नहीं बनने दिया गया। धर्म विज्ञान बनेगा जब मनुष्य केन्द्रित होगा, ईश्वर केन्द्रित नहीं। लेकिन वह कहेंगे कि अगर मनुष्य केन्द्रित हो गया तो धर्म ही गया। क्योंकि हम तो ईश्वर की बात करते हैं, इसलिए धर्म धर्म है। यह बात झूठ है। ईश्वर की बातों से धर्म धर्म नहीं होता। धर्म होगा मनुष्य के व्यक्तित्व की सभी खोज-बीन के रूपान्तर से। और जिस दिन मनुष्य बदलेगा, जिस दिन मनुष्य दूसरा हो जायगा, उस दिन वह दूसरी तरह से दुनिया को देखेगा। अभी हम जिस तरह के आदमी हैं हमे दुनियाँ में कहीं भी ईश्वर दिखाई नहीं पड़ सकता। देखेंगे तो हम। यह ध्यान रहे, प्रकाश के कारण प्रकाश नहीं दिखाई पड़ता, हमारे पास आंख होनी चाहिए तो प्रकाश दिखाई पड़ता है। भगवान है या नहीं, यह सवाल नहीं है। हम जैसे आदमी हैं वही हमें दिखाई पड़ सकता है।

हमें सिर्फ पदार्थ के कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। हालांकि हम अध्यात्म की बातें करते हैं। लेकिन हमें पदार्थ के अलावा कुछ दिखाई पड़ता ही नहीं। पदार्थ ही दिखाई पड़ता है। बातें कितनी ही हम अध्यात्म की करें, हम सब पदार्थवादी होते हैं, हम सब materialist होते हैं। क्योंकि मैटर दिखाई पड़ता है, पदार्थ दिखाई पड़ता है। परमात्मा तो दिखाई नहीं पड़ता। परमात्मा हमारा विश्वास है, पदार्थ हमारा अनुभव है। और अनुभव के मुकाबले विश्वास कभी नहीं जीतता है, इसे ध्यान में रखना। हमेशा अनुभव जीतेगा, विश्वास हारेगा। इसीलिए रोज परमात्मा हारता है और पदार्थ जीतता है। परमात्मा के सामने भी हम खड़े होते हैं तो हम पदार्थ ही मांगते हैं। और परमात्मा के सामने जाकर एक आदमी खड़ा होता है कि मेरे लड़के की नौकरी लगा दो। इसे परमात्मा से कोई मतलब है। परमात्मा को वह एक एजेन्ट बना रहा है, लड़के को नौकरी दिलाने में। असली सवाल नौकरी का है। कहता है मेरी बीमारी दूर कर दो, मेरी गरीबी मिटा दो। भगवान को इससे कोई सम्बन्ध है ? भगवान के सामने खड़े होकर भी पदार्थ की मांग जारी रहती है। दुनिया में सारे लोग पदार्थवादी हैं। सारी दुनिया के लोग पदार्थवादी हैं। जब तक जीवन आमूल रूपांतरित न हो कोई आदमी आध्यात्मिक हो नहीं सकता। बातचीत कर सकता है। और बातचीत खतरनाक है। इसलिए मैं कहता हूं पश्चिम के लोग ईमानदार भौतिकवादी हैं, पूरब के लोग बेईमान भौतिकवादी हैं। dishonest materialism है हमारे मुल्क में। सारी दुनिया ईमानदारी से भौतिकवादी हैं। इसको स्वीकार कर लिया है कि भौतिकवाद दिखाई पड़ता है, यही है, एक ईमानदारी है। एक सचाई है। और हम बहुत बेईमान हैं। हमें दिखाई तो पदार्थ पड़ता है लेकिन बातें हम परमात्मा की करते हैं। हाथ परमात्मा की एक तरफ जोड़ते हैं आंखें पदार्थ पर लगी रहती हैं। पूरे समय हमारा दिमाग एक दोहरी प्रक्रिया में चलता है। सारे समय भगवान की बात, और सारे समय पदार्थ की चिन्ता। भगवान की बात करेंगे और भगवान से उल्टा जियेंगे। इससे तो बेहतर है कि जो दिखाई पड़ता है उसकी सचाई को स्वीकार करके जीना शुरू किया जाय। मुझे लगता है कि ठीक-ठीक ईमानदार

भौतिकवादी कभी न कभी अध्यात्मवादी हो जाता है लेकिन बेईमान भौतिकवादी कभी अध्यात्मवादी नहीं हो पाता। क्योंकि अध्यात्मवादी होने की जरूरत ही नहीं रह जाती। वह तो भौतिकवाद और अध्यात्मवाद के बीच में एक स्वर्ण पथ निकाल लेता है। रहता भौतिकवादी है, बातें अध्यात्म की करके उसे रास्ता मिल जाता है। उसने एक प्रवंचना का रास्ता खोज लिया। इसलिए मैं आपसे कहता हूं उसको थोड़ा सोचना। पश्चिम का भौतिकवाद वहां पहुंचा जा रहा है जहाँ ५० वर्षों में आध्यात्मिक जीवन की शुरूआत हो जायगी। पश्चिम का भौतिकवाद वहां खड़ा हो गया है जहाँ अध्यात्म का जन्म अनिवार्य होगा। लेकिन हमारे भविष्य में कोई धर्म का जन्म होगा इसकी आशा नहीं बांधी जा सकती। क्योंकि धर्म के जन्म के लिये पहले तो हमें ईमानदार होना पड़ेगा। और ईमानदार होने की हमने हिम्मत खो दी है। क्योंकि ईमानदारी कहती है कि पदार्थ सत्य है और परमात्मा का कोई पता नहीं है। लेकिन हम बेईमान हैं। कहते हैं पदार्थ ? पदार्थ माया है। और परमात्मा सत्य है। पदार्थ सत्य है वह हमें सत्य दिखाई पड़ता है, २४ घण्टे उसमें हम जीते हैं, उसको हम कहते हैं माया है और जो परमात्मा हमें बिल्कुल पता नहीं चलता उसको हम कहते हैं सत्य है। हम कहते हैं ब्रह्म सत्य है और जगत माया है। ऐसा भी शीर्षासन कर कर सकती है कोई कौम !! बहुत हैरानी की बात है। एक ईमानदार चिन्तन भी नहीं है इसके पीछे। और जो प्रथम से ही बेईमान है, वे कैसे धार्मिक हो सकते हैं ?

मैं आपसे कहना चाहता हूं, धर्म को विज्ञान बनाए बिना मनुष्य जाति और धर्म के बीच कोई गहरा अर्न्तसम्बन्ध नहीं हो सकता। और जब तक मनुष्य को धर्म बदल सके, धर्म ऐसी कीमिया भी पैदा नहीं कर सकता। लेकिन कोई धर्म गुरु चाहता भी नहीं कि मनुष्य बदल जाय। मनुष्य जैसा है ऐसा ही रहे। और नीचे गिर जाय तो खुशी होती है। क्योंकि जितना आदमी नीचे गिरता है उतना उपदेश रसपूर्ण हो जाता है। उतना उसे ऊंचे उठाने की चेष्टा आनंदपूर्ण हो जाती है। यह बड़ मजे की बात है, किसी को ऊंचा उठाने में भी एक रस है। क्योंकि किसी को ऊँचा उठाने में भी अहंकार की बड़ी तृप्ति है। किसी को नीचा देखने में भी बड़ा मजा आता है। जब समाज नीचे गिरता है तो कुछ लोगों को बहुत आंतरिक रस और आनंद मिलना शुरू हो जाता है कि समाज इतने नीचे गिर गया। इसको ऊंचा उठाना है। धार्मिक आदमी रोता है स्थिति देखकर। अधार्मिक जो भीतर से हैं, और धार्मिक ऊपर से वह प्रसन्न होते हैं। उन्हें दिखाई पड़ता है यह अच्छा अवसर है। यह दशा ईश्वर को केन्द्र में रखने से पैदा हुई। मोक्ष को केन्द्र में रखने से पैदा हुई। मनुष्य को रखना पड़ेगा केन्द्र में। मनुष्य को केन्द्र में रखने का क्या मतलब होता है ?

मनुष्य को केन्द्र में रखना एक और ढंग से सोचना है। क्योंकि जब हम मनुष्य को केन्द्र में रखते हैं तो सवाल यह नहीं है कि सृष्टि कब पैदा हुई ? फिजूल है यह बात। इससे कोई प्रयोजन नहीं है कि सृष्टि कब बनी। सिर्फ नासमझ अपना समय और दूसरों का समय खराब करते हैं इस तरह की बातों में कि सृष्टि कब बनी है। बुद्धिमान आदमी जानता है जो है, वह है। वह कभी नहीं बना। कभी कैसे बन सकता है ? कहां से आयेगा ? कैसे बनेगा ? जो है, वह है, इसलिए सृष्टि कब बनी या नहीं बनी, इस झंझट में नहीं पड़ता। वह इस झंझट में भी नहीं पड़ता कि किसने बनाई। क्योंकि उसे अपना ही पता ठिकाना नहीं है। वह इस सारे विराट, अनादि, अनन्त जगत को बनाने वाले का विचार करे ? यह सिर्फ अहंकारी लोग विचार करते हैं। यह कभी आपने सोचा भी नहीं होगा कि मनुष्य सबसे बड़ा अहंकार क्या कर सकता है। वह यह कर सकता हैं कि मैं सब जानता हूं, मैं सर्वज्ञ हूं। एक धनी आदमी क्या अहंकार करेगा ? यही कह सकता है कि मेरे पास इतने करोड़ रुपये हैं। लेकिन वह भी जानता है कि करोड़ रुपयों का महल रेत से ज्यादा बड़ा नहीं है। कभी भी खिसक जा सकता है। कल जो करोड़पति था आज भिखमंगा है। और नहीं भी खिसके तो मौत सब छीन लेती है। मनुष्य ने जो

सबसे बडे 'इगोइज्म' की, सबसे बड़ी अहंकार की घोषणायें की हैं, वह सर्वज्ञता की है। वह यह कि हम जो जानते हैं, वह पूरा जानते हैं। यह बड़े मजे की बात है। आइंस्टीन से किसी ने पूछा कि एक वैज्ञानिक में और एक धार्मिक व्यक्ति में आप क्या फर्क करते हैं ? तो आइंस्टीन ने कहा कि वैज्ञानिक आदमी से १०० बातें पूछिए तो ९८ बातों में तो वह कह देगा कि मैं नहीं जानता हूं। दो बातों में मुश्किल से कहेगा कि मैं जानता हूं और वह भी इस शक के साथ कहेगा कि अभी इतना जानता हूं, कल बदल सकता है। लेकिन धार्मिक से १०० बातें पूछिए तो १०० के ही बाबत कहेगा कि पूरा जानता हूं और जो जानता हूं उसमें बदलने का कोई सवाल नहीं, क्योंकि वह पूर्ण ज्ञान है। अब मैं आप से कहना चाहता हूँ कि वैज्ञानिक के पास ज्यादा धार्मिक चित्त है। और धार्मिक के पास बिल्कुल ही अधार्मिक चित्त है। क्योंकि वैज्ञानिक विनम्रता से यह कहता है कि वह मैं नहीं जानता हूं। और जो जानता हूं वह भी संदिग्ध है क्योंकि कल ज्ञान की और नई धारायें आएंगी। सब बदल जायगा। इसलिए अब तक जो हम जानते हैं उसके आधार पर कहते हैं कि ऐसा है। लेकिन ऐसा ही है, ऐसा हम नहीं कह सकते हैं। और कैसा भी हो सकता है वह कल बताएगा। ज्ञान रोज खुलता जायगा। रोज नये अवतरण होंगे ज्ञान के। धार्मिक आदमी कहता है परमात्मा अनन्त है, लेकिन फिर भी कहता है मैं परमात्मा को जानता हूं। सत्य बात यह है कि वैज्ञानिक की मान्यता कहती है कि जो है, वह अनन्त है। और जो अनन्त है उसे हम कैसे जान सकते हैं ? हम थोड़ा बहुत जान पाते हैं। वह जान पाना भी कभी पूरा नहीं हो सकता। क्योंकि पूरे को हम कभी नहीं जानते। जैसे कि कोई आदमी एक उपन्यास का एक पन्ना पढ़ ले और सोचे कि मैंने पूरा जान लिया। जैसे कि किसी आदमी को गीत की एक कड़ी हाथ लग जाय और वह समझे कि मैंने पूरा महाकाव्य जान लिया। हम इतना थोड़ा जानते हैं, और इतना बड़ा अनजाना छूट जाता है कि सिर्फ पागल और अज्ञानी और हद दर्जे के मूढ़ यह दावा कर सकते हैं कि सब जान लिया गया है। और जो आदमी कहता है सब जान लिया गया है वह आदमी परमात्मा को अनन्त नहीं मानता, क्योंकि अनन्त कभी भी पूरा नहीं जाना जा सकता। सर्वज्ञ का दावा सिर्फ सान्त परमात्मा के प्रति हो सकता है जिसकी सीमा है। क्योंकि जो भी जान लिया गया वह सीमित हो गया। जानने ने उसकी सीमा बना दी। जो नहीं जाना गया वही असीम हो सकता है। एक तरफ हम कहते हैं परमात्मा अनंत है और दूसरी तरफ दावेदार कहता है कि मैं परमात्मा को जानता हूं। ये दावे बड़े अद्भुत हैं। विज्ञान ने पहली बार इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि जो है वह अनन्त है। और इसलिए मनुष्य उसे पूरा कभी नहीं जान पायेगा। हमें कुछ भी पता नहीं है कि जगत कैसे चल रहा है ? हमें कुछ भी पता नहीं है कि जगत कैसा चलेगा ? जीवन के सारे सूत्र अज्ञात हैं। जो थोड़ी बहुत तोड़-जोड़ करके हम जान पाते हैं वह इतना कम है कि उसके कारण दावेदार नहीं हुआ जा सकता। विज्ञान ने पहली बार विनम्रता सिखाई। हालांकि सारे धर्म कहते हैं कि आदमी को विनम्र होना चाहिए। लेकिन किसी धर्म ने आदमी को आज तक विनम्रता नहीं सिखाई। humility धर्म सिखा ही नहीं सके। धर्मों ने मनुष्य को अहंकार सिखाया। उसी अहंकार ने हिन्दू को मुसलमान से लड़ाया क्योंकि सब सर्वज्ञ थे। और जहां सब सर्वज्ञ हों वहाँ बड़ी मुश्किल है क्योंकि कोई झुकने को तैयार नहीं है कि दूसरा भी ठीक हो सकता है। धर्मों ने युद्ध करवाये। और धर्मों ने बातें विनम्रता की कीं। और धर्म गुरुओं ने दावे पूर्ण जानकारी के किये। विज्ञान ने पहली बार मनुष्य को ह्यूमिलिटी सिखाई है। और उसने कहा है कि नहीं, बहुत कुछ है जो अनजाना है। और उसने यह भी कहा है कि बहुत अज्ञात है और बहुत कुछ अज्ञेय भी है। बहुत कुछ Unknown है और बहुत कुछ unknowable भी है जिसे हम जान भी नहीं सकेंगे। कोई उपाय नहीं है जानने का कि हम जान सकें। कल्पना भी नहीं कर सकते कि हम कैसे जान सकेंगे।

अगर मनुष्य को केन्द्र बनाएं और परमात्मा को केन्द्र न बनाए तो चीजें बहुत सुलझ सकती हैं। क्योंकि मनुष्य जाना जा सकता है। फिर हम खुद मनुष्य हैं। हमें कहीं जानने के लिए दूर नहीं जाना पड़ेगा, हम अपने भीतर उतर सकते हैं। चीन में एक सम्राट था। उस सम्राट ने अपने राज्य में खबर भिजवायी कि मैं राज्य की मोहर बनवाना चाहता हूं और उस मोहर पर एक बोलता हुआ मुर्गा चाहता हूं। राज्य भर के चित्रकार बुलाएँ और जो श्रेष्ठतम चित्र होगा उसको लाखों रुपये पुरस्कार मिलेंगे और वह चित्रकार 'राज्य कला गुरु' भी हो जायगा। हजारों चित्रकार ने चित्र बनाए। जब सारे चित्र आये तो राजा दंग रह गया क्योंकि तय करना मुश्किल था। सभी चित्र अद्भुत थे। एक से एक सुन्दर चित्र। कैसे निर्णय हो? राजा पहले तो सोचता था कि निर्णय आसान होगा लेकिन निर्णय बहुत मुश्किल हो गया। तब उसने पूछा कि कौन निर्णय करेगा? किसी कला गुरु को बुलाओ। तो एक बूढ़ा चित्रकार था जिसने प्रतियोगिता में भाग नहीं लिया था, उसे बुलाया गया। उस बूढ़े से कहा गया कि इन चित्रों को देखकर पहचानो कि कौन सा चित्र ठीक हैं, उसको हम राज मोहर पर रखना चाहते हैं। वह बूढ़ा अन्दर बैठ गया। दरवाजे उसने बंद कर लिए और साथ में एक मुर्गा भी ले गया। राजा ने पूछा, इस मुर्गे को किसलिए ले जा रहे हो? उसने कहा कि वह आप नहीं जानते? मैं कैसे पहचानूंगा कि कौन मुर्गा ठीक है? मुर्गा ही पहचान सकता है। राजा ने कहा पागल हो गये हो। मुर्गा कैसे पहचानेगा? उस बूढ़े ने कहा, मैं जानता हू। और एक-एक चित्र खिड़की से बाहर खींचा जाने लगा। वे अस्वीकृत हो गये। आखीर में सारे चित्र बाहर फेंक दिये गये तो राजा मुश्किल में हुआ। पहले तो मुश्किल यह थी कि कौन सा चित्र ठीक है, उस बूढे ने सब चित्र रद्द कर दिये। राजा ने पूछा, क्या मामला है ये सब चित्र बेकार हैं? उस बूढ़े ने कहा सब बेकार हैं। कसौटी क्या है—राजा ने पूछा। उसने कहा मैं मुर्गे को भीतर लाया और हर चित्र के सामने मुर्गे को खड़ा किया, मुर्गे ने किसी भी चित्र में मुर्गे को देखा भी नहीं। चिन्ता भी नहीं की। अगर मुर्गे को चित्र जीवित मालूम पड़ता तो मुर्गा बाँग देता, लड़ने को खड़ा हो जाता। लेकिन मुर्गे ने कोई फिक्र ही नही की। चित्र पड़ा रहा एक कोने में, मुर्गा कमरे में घूमता रहा। मुर्गे ने recognise नहीं किया कि दूसरा भी मुर्गा है। इसलिए बेकार है चित्र जिन्दा नहीं है।

राजा ने कहा तब तो बड़ी मुश्किल हो गई, जिन्दा चित्र कैसे बनेगा? आप बनाएं। उस बूढ़े ने कहा मैं बहुत बूढ़ा हो गया और अब इस उम्र में बड़ी कठिनाई पड़ेगी। राजा ने कहा, क्या कठिनाई? उस बूढ़े ने कहा पहले मुझे मुर्गा बनना पड़ेगा, तब मैं मुर्गा बना सकता हूं। क्योंकि जब तक मैं मुर्गे को भीतर से उसकी स्प्रिट को, एक तो मुर्गे को बाहर से देखना है, वह उसकी आकृति को देखना है, उसकी आत्मा बाहर से नहीं देखी जा सकती। इसलिए मुर्गे को बाहर से देखकर जो चित्र बनाता है, वह मुर्गे के शरीर का चित्र बनाता है, मुर्गे की आत्मा का नहीं। मुर्गे की आत्मा को सिर्फ मुर्गा जान सकता है। उस बूढ़े ने कहा बड़ी मुश्किल है। इस उम्र में मुझे मुर्गा बनना पड़ेगा। राजा ने कहा तुम पहली तो बात यह कि मुर्गा बनोगे कैसे? और अगर बन गये तो फिर मेरा चित्र कौन बनाएगा? क्योंकि मुर्गे तो बहुत हैं। उस बूढ़े ने कहा मैं एक कोशिश करता हूं लेकिन जल्दी नहीं। जल्दी नहीं हो सकता यह काम। अगर आदमी की तस्वीर बनवानी हो, मैं अभी बना दूं क्योंकि मैं आदमी हूं। मुर्गे की तस्वीर मैं कैसे बना सकता हूं? मुर्गे को जाना ही नहीं कि मुर्गा भीतर से कैसे अनुभव करता है। जब वह बांग देता है तो उसके भीतर क्या होता है, जब वह भयभीत होकर भागता है तो उसके भीतर क्या होता है, मुझे कुछ पता नहीं। मैं जानता हूं अपने भीतर कि जब मैं भयभीत होता हूं तो क्या होता है, जब मैं क्रोध से भरता हूं तो क्या होता है, जब मैं प्रेम से भर जाता हूं तो भीतर क्या होता है, वह मैं जानता हूं। आदमी कैसा अनुभव करता है, वह मैं जानता हूं, आदमी क्या है वह मैं जानता हूं। मुर्गा? मुर्गे को जानने की मैं अब कोशिश करता हूं।

वह चित्रकार जँगल चला गया तीन साल की मोहलत माँग कर। राजा ने छह महीने बाद अपने आदमी भेजे कि देखो वह बुड्ढा है कि मर गया। आदमी ने वहां से लौटकर कहा कि आप पागल के चक्कर में पड़ गये हैं। वह जंगली मुर्गों के साथ बैठा हुआ है, कपड़े वपड़े सब खो गए हैं, नंगा है। मुर्गों की तरह छलांग लगाता है, मुर्गों की तरह चिल्लाता है। हमें देखकर वह मुर्गे की तरह बांग देने लगा। हमने कहा हो गया, इस पागल से कैसे चित्र बनेगा। यह मुर्गा हो जायगा यह तो ठीक है, लेकिन चित्र कौन बनायेगा ? साल भर बीत गया। फिर आदमी गये। दो साल बीत गये, तीन साल बीते, वह आदमी दरबार में आकर खड़ा हो गया नंगा और उसने आकर दरबार में मुर्गे की बांग दी। राजा ने अपने सिर पर हाथ मार लिया। उसने कहा, यह तो ठीक हैं कि आप मुर्गे की बाँग सीख गये। लेकिन चित्र कहाँ है ? उसने कहा चित्र तो अब एक क्षण में बन जायगा। चित्र बनाने में क्या देर लगती है, लेकिन मैंने मुर्गे को जीने की कोशिश की है। हालांकि वह पूरा अथेन्टिक, पूरा प्रमाणिक नहीं होगा क्योंकि फिर भी मैं आदमी हूं। लेकिन अब मैं कुछ मुर्गे के पास रहा हूं, मुर्गे से लड़ा हूं मुर्गे को प्रेम किया है, मुर्गे से दुश्मनी किया हैं, मुर्गे से दोस्ती की है, मुर्गे की भाषा मैं समझने लगा हूं, मुर्गे मेरी भाषा समझने लगे हैं। अब मैं कुछ थोड़ा मुर्गे को बना सकता हूं। उसने कलम उठाई और चित्र बना दिया। एक मुर्गे को अंदर बुलाया। चित्र देखकर मुर्गा दरवाजे पर ही ठहर गया और जोर से उसने बाँग दी। कमरे के भीतर आने से मुर्गे ने इन्कार कर दिया। कमरे के भीतर और भी जानदार मुर्गा है। मुर्गा डरा और भागने लगा। मुर्गे को भीतर लाने की कोशिश की, मुर्गा बाहर भागता है। उस चित्रकार ने कहा, बस ठीक है, यह मुर्गा काम दे देगा क्योंकि इसे मुर्गा भी मानता है कि हाँ, मुर्गा है।

तो आदमी न ईश्वर को जान सकता है, न आदमी दूर की अनन्त बातों को। आदमी अगर अथेंटिकली—प्रमाणिक रूप से— कुछ जान सकता है तो सिर्फ आदमी को। और अगर आदमी को जान ले तो आदमी इतनी बड़ी इकाई है कि आदमी को जितना जानता चला जाय उतनी नई-नई दिशाएं आदमी के भीतर से खुलती है। और उन दिशाओं से वह वहां तक की भी यात्रा कर सकता है जहाँ हमें नहीं दिखाई पड़ता कि आदमी जुड़ा हुआ है। हम अपने भीतर ही नहीं गये हैं। न हम अपने क्रोधको जानते हैं, न अपने प्रेम को, न अपनी चिन्ता को, न अपनी अशान्ति को, न अपने तनावों को, न अपनी नींद को, न अपने जागरण को, हम कुछ भी नहीं जानते अपने बाबत। हम सोते जरूर हैं लेकिन कोई अगर पूछ ले कि नींद क्या है ? एक आदमी भी उत्तर नहीं दे सकता कि नींद क्या है ? हम कहेंगे कि हम सो जाते हैं। लेकिन नींद क्या है ? यह कौन सी घटना है जो नींद में घट जाती है और आदमी एकदम किसी और दुनिया में चला जाता है। जागरण क्या है ? क्रोध क्या है ? और प्रेम क्या है ? मनुष्य के व्यक्तित्व को हम केन्द्र बनायेंगे तो ये सारे आयाम खोजने पड़ेंगे। और जितना हम इन आयामों में खोज करते हैं उतने ही नये-नये द्वार खुलते चले जाते हैं। और एक दिन मनुष्य द्वार बन जाता है परमात्मा का। और एक दिन हम मनुष्य को जानकर उसे जान लेते हैं जिसे मनुष्य को जाने बिना, जानने का कोई उपाय उपाय नहीं है। और जिस दिन हम मनुष्य के व्यक्तित्व के सारे पहलू जान लेते हैं, उसी दिन मुक्ति शुरू हो जाती है। क्योंकि जानते ही जो व्यर्थ हैं, वह गिर जाता है और जो सार्थक है वह शेष रह जाता है। एक आदमी जानता है तो कांटों पर नहीं चलता, नहीं जानता है तो चल जाता है। जानता है तो फिर कांटों से बच के चलता है। जैसे ही हम भीतर जानने लगते हैं, जीवन के जो कांटें हैं वे विसर्जित होने लगते हैं। अभी तो हमारी हालत ऐसी है कि हम कांटें बोते हैं उनको पानी डालते हैं, उनको खाद डालते हैं, उनको बड़ा करते हैं और जब लहू लुहान हो जाते हैं तो चिल्लाते हैं कि हम इन अशांतियों से कैसे बचें ? हम ही अशांतियों को पैदा करते हैं, निर्मित करते हैं, हम उनके जन्मदाता हैं उनको पानी देते हैं और संभालते

हैं। उनको बड़ा करते हैं। और जब अशांतियों प्राणों को छेदने लगती हैं तो किसी गुरू के चरणों में जाकर पूछते हैं कि शांत होने का रास्ता बताओ। और वह हमें कह देता है कि जाओ, राम राम जपो और शांत हो जाओ। जैसे कि राम राम न जपने से अशांति पैदा हुई हो, अगर राम राम न जपने से अशांति पैदा हुई हो तब तो राम राम जपने से चली जायगी लेकिन अशाँति को पैदा करने के कारण बिल्कुल दूसरे हैं। उनके राम राम से कोई सम्बन्ध ही नहीं। वे कारण मौजूद रहेंगे और आप राम राम जपते रहेंगे। और तब परिणाम यह होगा कि अशाँति कायम रहेगी और राम राम जपना एक नई अशांति हो जायगी। सारी अशांति अपनी जगह है, आपका क्रोध अपनी जगह है। घृणा अपनी जगह है, चिन्ता अपनी जगह है। वह सब अपनी जगह है और ऊपर से यह आदमी घृणा और क्रोध से भरा हुआ आदमी राम राम भी जप रहा है। यह एक और परेशानी उसने मोल ले ली है। इसलिए तथाकथित धार्मिक आदमी और भी अशांत हो जाते हैं। एक साधारण आदमी उतना अशांत नहीं मिलेगा जितना धार्मिक आदमी अशांत मिलेगा। एक साधारण आदमी उतना क्रोधी नहीं मिलेगा, जितना सन्यासी क्रोधी मिलेगा। उसका कारण है। क्योंकि सारी अशांतियों के कारण तो अपनी जगह मौजूद हैं और उन्होंने नये पागलपन ईजाद कर लिए हैं वह ये अलग कर रहे हैं। वह तो सब मौजूद ही है, Additional इनके पास और भी चीजें हैं जो आपके पास नहीं हैं। इनकी अशांति गहरी हो जायगी, दुगनी हो जायगी। फिर हम इस तरह का कोई 'शार्ट कट' खोजेंगे, कोई सीधा रास्ता मिल जाय, और हम शाँत हो जायें। कोई आदमी कभी इस तरह शांत नहीं हो सकता। ध्यान रहे, अशांत आदमी शान्त हो ही नहीं सकता। आप कहेंगे फिर तो बड़ी मुश्किल हो गई। हम तो सब अशान्त हैं फिर शाँत कैसे होंगे ? अशांत आदमी कभी शान्त नहीं होता, अशान्ति को समझ ले। अशांति गिर जाती है, जो शेष रह जाता है उसका नाम शान्ति है। शान्ति अशान्ति के विपरीत नहीं है कि आप अशान्त हैं और शान्त हो जायें। शान्ति अशांति का अभाव है, ऐबसेन्स है। जब आप अशान्त नहीं रह जाते हैं तब जो घटना घटती है उसका नाम शान्ति है। इसलिए सवाल शान्त होने का नहीं है, सवाल अशांति को जानने पहचानने का है, जितना अशान्ति को कोई आदमी पहचान लेगा, उतना अशान्त कम होगा। जितनी गहरी पहचान बढ़ेगी, अशान्ति गिरती चली जायगी। एक दिन आयेगा, अशान्ति के सारे कारण जान लिए जायेंगे, फिर कैसे कोई अशान्त होगा ? अशान्ति खत्म हो जायगी। तब जो शेष रह जाता है, उसका नाम शान्ति है। शान्ति आप पा नहीं सकते, अशांति खोते है। बस इतना ही। लेकिन हम अशान्ति खोना नहीं चाहते। और शांति पाना चाहते हैं तब एक अद्भुत किस्म टेंशन, एक तनाव, एन्क्जायटी पैदा होती है जो जिन्दगी को खा जाती है। हिंसा से भरा हुआ आदमी अहिंसक नहीं हो सकता। हां हिंसा चली जाय तो जो शेष रह जाती हैं उसका नाम अहिंसा है। आदमी अपने को जितना जाने उतना ही आदमी बदलने लगता है। ज्ञान के अतिरिक्त और ज्ञान से मतलब वेद का ज्ञान, नहीं, उपनिषद का ज्ञान नहीं, ज्ञान से मतलब मनुष्य का ज्ञान, वह जो मैं हूं, उसका ज्ञान जैसा मैं हूं। उस ज्ञान का मतलब यह नहीं कि किताब में लिखा है कि मैं ब्रह्म हूं तो बैठ के आत्मज्ञानी कह रहा है कि मैं ब्रह्म हूं। मैं ब्रह्म हूं, यह कोई ज्ञान नहीं है। किताब में लिखा है कि आप ब्रह्म हैं और आप भली भाँति जानते हैं कि ब्रह्म आप बिल्कुल नहीं हैं। आप क्रोध हो सकते हैं, दुश्मन हो सकते हैं, जहर हो सकते हैं, ब्रह्म-ब्रह्म कहाँ ? और आप ब्रह्म होते तो फिर ये दोहराने की क्या जरूरत थी बैठकर ? ब्रह्म कहीं बैठ के दोहराता होगा कि मैं ब्रह्म हूं। अगर कोई पुरुष किसी कोने में बैठकर दोहराने लगे कि मैं पुरुष हूं तो पास पड़ोस के लोगों को शक होगा कि कुछ गड़बड़ है। क्योंकि अगर यह है तो दोहराना क्या है। बात खतम हो गई। हम हमेशा वही दोहराते हैं जो हम नहीं होते। ध्यान रखना, हम हमेशा वही घोषणा करते हैं जो हम नहीं होते हैं। अज्ञानी ज्ञान की घोषणा करता है मूढ़ सर्वज्ञ होने की घोषणा करता है। अहंकारी विनम्र होने की घोषणा करता है। हिंसक

अहिंसक होने का दावा करता है। लेकिन जो होता है उसके दावे खो जाते हैं, उसे दावे का पता ही नहीं चलता। जिसके भीतर से हिंसा चली गई उसे कैसे पता चल सकता है कि मैं अहिंसक हूं? होने का पता सिर्फ उनको चलता है जिनकी हिंसा पूरी तरह मौजूद है। उसी बैक ग्राउण्ड में पता चलता है। स्वयं के ज्ञान का मतलब यह नहीं है कि शास्त्रों में जो लिखा है उसे हम दोहरायें। स्वयं के ज्ञान का मतलब है जो मैं हूं अपनी असलियत में। जैसा भी हूं। बहुत नारकीय है यह स्थिति। उसे खोलेंगे तो बहुत दुर्गन्ध आयेगी। लोग आम तौर से कहते कि अगर हम शरीर को खोलेंगे तो हड्डी, मांस-मज्जा मिलेगा। लेकिन अपनी आत्मा को खोलियेगा तो हड्डी, मांस-मज्जा से भी ज्यादा गंदगी मिलेगी। क्योंकि शरीर में कहीं भी क्रोध नहीं है। शरीर में कहीं भी घृणा नहीं है। शरीर में कहीं भी ईर्ष्या नहीं है। ये सब कहां हैं? ये आप हैं। ये हमारे और भीतर हैं। वहां खोलना पड़ेगा। वहां खोलने से बहुत घबराहट होगी। लेकिन उसे खोले बिना, उसे जाने बिना कोई रूपान्तरण, कोई ट्रांसफार्मेशन नहीं है। और जिस दिन हम शास्त्रों को नहीं, परमात्मा को नहीं, मनुष्य को केन्द्र बनायेंगे, उस दिन हम मनुष्य को पूरा खोल सकेंगे, सरलता से। और ध्यान रहे जितना हम स्वयं को जान लें, उतने ही हम दूसरे होने शुरू हो जाते हैं। क्योंकि जानते हुए कोई भी आदमी दीवाल से निकलने की कोशिश नहीं करता, दरवाजा मालूम हो तो आदमी दरवाजे से निकलता है। दरवाजा मालूम न हो तो दीवाल से टकराता है। हमें पता ही नहीं कि हम क्या हैं? इसलिए जिन्दगी में रोज टकराहट होती है। हमें पता होगा, हम दरवाजे से निकलना शुरू हो जायेंगे, आने वाले तीन दिनों में, इसी संबंध में बात करना चाहूंगा कि कैसे हम एक-एक कदम मनुष्य को जान सकें। और कैसे मनुष्य को जानने से एक दिन परमात्मा उपलब्ध हो जाता है, शास्त्रों को जानने से नहीं। कैसे स्वयं को जानने से परमात्मा की उपलब्धि हो सकती है। ये प्राथमिक बातें मैंने कहीं। मेरी बातों को इतनी शांति से सुना, इससे अनुग्रहीत हूं। और अंत में सबके भीतर बैठे परमात्मा को प्रणाम करता हूं, मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

●●

जीवन संगीत से आलोकित : नई साज सज्जा में

ज्योति शिखा

(आचार्य श्री के विचारों की आध्यात्मिक त्रैमासिकी)

संपादक : श्री महिपाल

मूल्य। वार्षिक। ५ रु०
एक प्रति। १।२५ न० पै०

प्रकाशक : जीवन जागृति केन्द्र,
रूम नं० ५३, एम्पायर बिल्डिंग,
डा० डी० एन रोड, बंबई : १
फोन नं. २६४५१०

जीवन एक स्वप्न

(पोरबंदर में दिया गया प्रथम प्रवचन)

संकलन—जयवंती (जूनागढ़)

कबीर एक दिन कह रहे हैं : आकाश में बादल घिरे हैं उनका घनघोर नाद सुनाई पड़ रहा है । साधुओ सुनो जो लोग इकट्ठे थे, उन्होंने आकाश की तरफ देखा । वहां न कोई बादल है, न कोई घनघोर नाद है । वे बहुत हैरान होकर कबीर की ओर देखे लेकिन, कबीर की आंखें बंद हैं, और वे किसी भीतरी आकाश की शायद बात कर रहे हैं । और किन्हीं उन बादलों की जो मनुष्य की अंतरात्मा में घिरते और बरसते हैं । तभी कबीर ने कहा : साधुओ अमृत की वर्षा हो रही है । फिर उन सारे घिरे लोगों ने बाहर की तरफ देखा । उसी आकाश की तरफ जिससे हम परिचित हैं । लेकिन, वहां कोई वर्षा नहीं हो रही है । अमृत तो दूर पानी की बूंद भी नहीं पड़ रही हैं । उन्होंने चौंक के फिर कबीर की तरफ देखा लेकिन उनकी आंखें बंद हैं और वह वही कहे जा रहे हैं कि सुने नहीं, पिओ अमृत, बरस रहा है खाली मत रह जाओ और वे सब पूछते हैं कबीर से, कहां बरस रहा है ? कहां है बादल ? कहां है आकाश ? कहां है अमृत ? सोये हुए आदमी सिर्फ बाहर की दुनिया से परिचित होते हैं । जागे हुए आदमी एक और नयी दुनिया को जान पाते हैं जो भीतर की दुनिया है । और जो आदमी सोया हुआ है, वह आदमी भीतर कभी प्रवेश नहीं कर पाता है । सोये हुये आदमी की पहली पहचान है, उसकी भीतरी दुनिया जैसी कोई दुनिया नहीं होती, उसका सब बाहर होता है । उसका धन बाहर होता है । उसके मित्र बाहर होते हैं । उसका यश बाहर होता है । यहाँ तक की उसका परमात्मा भी बाहर होता है उसका सब बाहर होता है । भीतर सब सोये हुए आदमी के लिये बेईमानी है । मिनिंग लेस । उसमें कोई अर्थ नहीं हैं । उसके भीतर कुछ होता ही नहीं । वह भीतर खाली और रिक्त अंधकार से भरा होता है । और जो आदमी सोया है, उसकी जिंदगी एक सपने से ज्यादा नहीं हो सकती । जिंदगी सत्य बनती है जागने से ।

मीरा नाच रही है एक गांव में सड़कों पर । गांव के लोग कह रहे हैं पागल है । क्योंकि उनकी समझ में नहीं आता, किसकी माँग पर नाच रही है ! और उनको यह भी समझ में नहीं आता; इतनी आनंद मुक्त ! निश्चित ही पागल है । और मीरा जिसके सामने नाच रही है, वह उसके भीतर है । वह उन्हें दिखाई नहीं पड़ता है । जिन्हें अपने भीतर दिखाई नहीं पड़ता, उन्हें दूसरे के भीतर का तो दिखाई पड़ ही नहीं सकता । इसलिये मीरा पागल है । और गांव के लोग पूछते हैं; पागल हो गयी हो ? बावरी हो गयी हो ? मीरा उनसे कहती है; तुम भी नाचो । पग में घुंघरु बांधो और नाचो, बड़ा आनन्द है । लेकिन वे गांव के लोग समझते हैं आनन्द, हम तो सिर्फ दुःख जानते हैं, सुख जानते हैं, आनंद से हम अपरिचित हैं । वे गांव के लोग कहते हैं; पागल हो गयी हो ! जीवन में सुख ही नहीं मिल रहा, दुःख ही दुःख है, आनन्द का क्या अर्थ ? यह शब्द हम सुनते हैं आनंद, लेकिन इसका भी हमें अर्थ पता नहीं है । सोये हुए आदमी का दूसरा लक्षण है, वह सुख जानता है, दुःख जानता है, आनन्द नहीं जानता है । शायद हम सोचते हैं कि आनन्द भी सुख का ही कोई बड़ा रूप होगा तो हम गलत सोचते हैं । सुख और दुःख एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । सुख

भी एक तनाव है, दुःख भी एक तनाव है । इसलिये सुख से भी मन थक जाता है, और ऊब जाता है । दुःख से तो ऊबता ही है, सुख से भी ऊब जाता है । सुख भी एक उत्तेजना है और दुःख भी एक उत्तेजना है इसलिये दुःख की उत्तेजना में भी मृत्यु हो सकती है, सुख की उत्तेजना में भी मृत्यु हो सकती। दोनों ही उत्तेजित अवस्थायें हैं। और जहां उत्तेजना है; वहां कहां आनन्द है ? आनन्द तो वहां है, जहां कोई उत्तेजना नहीं है, जहां कोई तनाव नहीं है, जहां कोई अशान्ति नहीं है। सोया हुआ आदमी आनन्द से अपरिचित होता है। और जो आनन्द से अपरिचित है, उनकी जिंदगी एक सपना है । जिसमें सुखों के दृश्य आते हैं, दुःखो के दृश्य जाते लेकिन आनन्द की अनुभति कभी नहीं आता है। जैसे कोई एक सिनेमा गृह में बैठा हो, वहां पर्दे पर बहुत तरह की तस्वीरें आती हैं। दुख के क्षण आते हैं. दुःखद घटनायें आती हैं. सुख के क्षण आते हैं, सुखद घटनायें आती हैं, सब आता है पर्दे पर एक व्यक्ति को छोड़कर। वह जो देखने वाला बैठा है, उसको छोड़कर पर्दे पर सब आता है। वह पर्दे के बाहर रह जाता है। वह देखने वाला भर, पर्दे पर एक व्यक्ति को छोड़कर। वह जो देखने वाला बैठा है, उसको छोड़कर पर्दे पर सब आता है। वह पर्दे के बाहर रह जाता है । वह देखने वाला भर पर्दे पर नहीं आ सकता । सपने की जिंदगी का अर्थ है कि हम जीवन को एक पर्दे की तरह ले रहे हैं और वह पर्दे पर घटनायें हैं, सुख की भी हैं, दुःख की भी हैं, बीमारी है, स्वास्थ्य है, यश है, अपयश है, सिर्फ एक आदमी छूट जाता है मैं। उस पर्दे पर मैं कभी नहीं आता। इसलिये सोये हुये आदमी का तीसरा लक्षण है, वह स्वयं से अपरिचित होता है। स्वप्न में कोई स्वयं से परिचित हो भी नहीं सकता है। दूसरा लक्षण मैंने कहा : आनंद का उसे कोई पता नहीं होता। मीरा कहती है, आनन्द में नाच रही हूं। वे गांव के लोग पूछते हैं, आनन्द क्या है ? हम भी पूछेंगे। आनन्द क्या है ? हम जानते हुए सुख को हम कहेंगे बहुत घना सुख, बहुत बहुत प्रगाढ़, बहुत तीव्र सुख का ही नाम आनन्द है या बहुत लम्बे सुख का, अनन्त सुख का, शाश्वत सुख का जो कभी खत्म न हो ऐसे सुख का नाम आनन्द है । नहीं । ऐसा कोई सुख नहीं जो कभी खत्म न हो क्योंकि, ऐसी कोई उत्तेजना नहीं हो सकती जो शाश्वत रह सके। दुःख भी खतम हो जाते हैं, सुख भी खतम हो जाते हैं। लेकिन जिस दिन कोई व्यक्ति ऐसी स्थिति को अनुभव कर लेता है जहां न सुख है न दुःख है, वहां आनन्द की यात्रा शुरू होती है । यह जानके आपको हैरानी होगी, आनन्द से उल्टा कोई शब्द हमारे पास नहीं है। सुख के विपरीत दुःख है अशांति के विपरीत शांति है। अंधेरे के विपरीत प्रकाश है। जीवन के विपरीत मृत्यु है लेकिन आनन्द के विपरीत हमारे पास कोई शब्द नहीं है। और कोई शब्द के विपरीत कोई शब्द हो, समझ लेना कि वह सपने की दुनिया का है। क्योंकि सपने की दुनिया द्वैत की, डुआलीटी की ही दुनिया है और जागने की दुनिया एक की दुनिया है, जहां दो नहीं रह जाते। आनन्द अकेला शब्द है, जो एक है। जिसका उल्टा शब्द हमारे पास नहीं है। क्योंकि उल्टी उससे कोई स्थिति ही हमें पता नहीं है। उससे उल्टी स्थिति होती ही नहीं है। आनन्द, सुख और दुःख जहां दोनों न रह जायें। लेकिन हम इन दो में ही खोजते रहते हैं घड़ी के पेन्डुलम की भांति। सुख से दुःख में, दुःख से सुख में। और कभी ख्याल किया होगा, घड़ी का पेन्डुलम जब दांयी तरफ जाता है तब दिखाई तो पड़ता है कि दांयीं तरफ जा रहा है लेकिन, दांयीं तरफ जाते समय वह बांयीं तरफ जाने की ताकत जुटा रहा है, यह दिखाई नहीं पड़ता। यह बहुत मजे की बात है। सुख की तरफ जो आदमी जा रहा है, वह दुख की तैयारी कर रहा है, यह दिखाई नहीं पड़ता। थोड़ी ही देर में सुख दुःख की तरफ जाना शुरू हो जायगा। जो पेन्डुलम बांयी तरफ गया था वह दाँयी तरफ जायगा। जो दांयी तरफ है वह बांयी तरफ जायगा। हमारा मन सुख और दुःख के बीच पेन्डुलम की तरह डोलता रहता है। कभी बंद घड़ी देखी है। पेन्डुलम जब बीच में ठहर जाता है, न बाँयीं तरफ जाता है, न दांयी तरफ। अगर किसी दिन हमारा मन भी ऐसा ठहर जाय घड़ी के बंद पेन्डुलम की तरह तो जीवन में पहली दफे आनन्द का बोध शुरू होता है। लेकिन मन चंचल है। वह बांयां जायेगा या दांयां, वह ठहरेगा नहीं। इसलिये

जो मन में जीता है, वह नींद में ही जियेगा, वह कभी जाग नहीं सकता। मन की जिन्दगी का नाम है सपना। हम सपने में ही जीते हैं। लेकिन क्योंकि हम सभी सपने में ही जीते हैं, इसलिये कभी पता नहीं चलता। और क्योंकि हम सभी एक से सोये हुए लोग हैं इसलिये कठिनाई नहीं होती है कठिनाई तो तब कभी होती है, जब कोई एक आदमी सपने से बाहर निकल जाता है। कभी कोई एक जीसस बाहर निकल जाय तो हम सूली पर लटका देते हैं। कभी कोई एक महावीर बाहर निकल जाय तो हम पत्थरों की वर्षा करते हैं। कभी कोई एक सुकरात जाग जाय तो हम जहर पिलाके मार डालते हैं। सोये हुए लोगों की भीड़ बड़ी नाराज हो जाती है उस आदमी से, जो जाग गया है। क्यों ? क्योंकि जागा हुआ आदमी हमारी नींद की खबर देने लगता है। और जागा हुआ आदमी हमारे लिये तीर की तरह चुभने लगता है कि हम सोये हुये हैं। या तो हम जागें या इसे मिटाना है। खुद जागना कठिन मालूम पड़ता है इसलिए हम उसे ही मिटा डालते हैं।

जीसस को जिस रात सूली लगी, खबर मिल गयी है सांझ को कि आज रात दुश्मन पकड़ लेंगे। तो जीसस के मित्रों ने कहा कि भाग क्यों न जायें, दुश्मन पकड़ने आ रहा है। तो जीसस ने कहा कि जिसे हम भगा के बचायेंगे, उसे कितने दिन तक बचायेंगे ? वह बच नहीं सकता। उन मित्रों ने कहा कि भाग जायं, इन बातों में समय खोने की जरूरत नहीं। जीसस ने कहा : जिसे भगा के तुम बचाओगे मेरे शरीर को, उसे कितने दिन तक बचा सकोगे ? सपने कितने देर तक खींचे जा सकते हैं ? टूट ही जायेंगे। लेकिन वे सोये हुए मित्र न समझे। और जीसस ने कहा कि जिसे वे सोच रहे हैं; मार डालेंगे वे भूल में हैं, उसे वे मार न पायेंगे क्योंकि, सत्य की कोई हत्या नहीं हो सकती। सिर्फ सपने ही तोड़े जा सकते हैं, सत्य को तोड़ना असंभव है। इसलिये उन्हें आने दो, जो मरने वाला है वह मर जायगा और जो नहीं मरने वाला है वह नहीं मरेगा। लेकिन वे मित्र नहीं समझे। सोये हुये आदमी, जागे हुये आदमी की भाषा नहीं समझ पाते हैं। इस मनुष्य जाति के इतिहास में सबसे बड़ा दुर्भाग्य यही है कि सोये हुये आदमी की भाषा को जागे हुये आदमी तक पहुंचाना मुश्किल, जागे हुये आदमी की बात को सोये हुये आदमी तक पहुंचाना मुश्किल, वे दो दुनियाओं में रहने लगते हैं। जीसस को भागते न देखकर, कुछ मित्र तो भाग गये अपनी जान बचाने को। लेकिन एक साथी ने कहा कि मैं कभी साथ न छोड़ूंगा। जीसस हंसने लगे और उन्होंने कहा कि सुबह होने के पहले, मुर्गा बांग दे इसके पहले तू तीन दफे मुझे छोड़ चुका होगा। उसने कहा, मैं कसम खाता हूं, मैं जिंदगी भर न छोड़ूंगा। जीसस हंसने लगे। उन्होंने कहा कि सोये हुये आदमी के वचन का कोई भरोसा नहीं। फिर दुश्मन आ गये और उनको पकड़कर ले जाने लगे। वह साथी भी छिपे-छिपे साथ होने लगा। डरने तो लगा, क्योंकि, मौत करीब थी और कहीं फंस न जाय। लेकिन फिर भी उसने सोचा, अभी मैंने वादा किया है कि मैं छोड़ूंगा नहीं कभी। वह साथ चलने लगा। दुश्मन ने देखा कि कोई एक अपरिचित आदमी है हमारे बीच में तो उन्होंने उसे पकड़ लिया और पूछा कि तुम कौन हो ? तो उसने कहा कि मैं एक अजनबी हूं, मैं दूसरे गांव से आ रहा हूं। उन्होंने कहा कि तुम जीसस को पहचानते हो ? उसने कहा नहीं, बिल्कुल नहीं। कौन जीसस ? जीसस सामने ही बंधे हुये थे, घसीटे जा रहे थे। उन्होंने कहा : मित्र अभी सुबह भी नहीं हुई, अभी मुर्गे ने बांग नहीं दी और तू एक बार मुझे छोड़ चुका। असल में सोये हुये आदमी के पास कोई संकल्प नहीं है। और सोये हुये आदमी के पास कोई आत्मा नहीं है। सोये हुये आदमी के पास सपनों का डावांडोल द्रष्यपथ, सोये हुये आदमी के पास आकांक्षाओं का एक जाल, वासनाओं का एक फैलाव है। सोये हुये आदमी के पास बदलते हुये सपने हैं लेकिन, कोई स्थिर सत्य नहीं है और हम सब ऐसे ही सोये हुये लोग हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक। लेकिन हमें बड़ी भूल होती है। हम रोज सुबह उठ आते हैं तो हम समझते हैं; हम जाग गये, नहीं। हम दो तरह के सपने देखते हैं। एक जो आंख बंद करने पर होता है और एक जो आंख खुले होने पर होता है। एक सपना जो हम रात को देखते हैं

और एक सपना जो हम दिन में देखते हैं। इस दिन के सपने को हम जागरण कहते हैं, वह बड़ी भूल है। क्यों? इसे क्यों सपना न कहें, इसे क्यों सत्य कहें।

मैंने सुना है; एक राजा का लड़का मर रहा है। मरण शय्या पर पड़ा है। चिकित्सकों ने कहा कि वह बचेगा नहीं। सम्राट आज तीन रातों से जाग रहा है, आज चौथी रात है और चिकित्सक कहते हैं सूरज उग आये मुश्किल है। ये लड़का तो बचेगा नहीं। वह लड़का बेहोश है, करीब-करीब मरने को पड़ा हुआ है। सम्राट थक गया है तीन दिन से, कोई चार बजे रात उसकी नींद लग गयी है। वहीं कुर्सी पर बैठे-बैठे वह सो गया है। नींद लगी और उसे एक सपना आया। उस सपने में उसने देखा कि वह सारी पृथ्वी का सम्राट हो गया है। उसके पास स्वर्ण महल है और उसके बारह पुत्र हैं, ऐसे सुन्दर; जिनकी कल्पना न की जा सके। ऐसे स्वस्थ, ऐसे बुद्धिमान, ऐसे शक्ति शाली, जिनके सिर्फ सपने ही देखे जा सकते है। अब बहुत आनंद में है सम्राट। सब कुछ है उसके पास और तभी अचानक वह बाहर जो बेटा है उसका, दूसरे सपने का, आँख खुली सपने का, वह मर जाता है। पत्नी छाती पीट के रोती है। सम्राट की आँख खुल जाती है, सपना टूट जाता है। बारह लड़के जो अभी थे, विलीन हो जाते हैं, महल स्वर्ण के खो जाते हैं। पृथ्वी का राज्य हवा हो जाता है। लेकिन वह सम्राट बड़ी मुश्किल में पड़ गया। सामने लड़का मरा हुआ पड़ा है। एक ही लड़का था, लेकिन उसकी आँखों में आँसू नहीं आ रहे हैं। उसकी पत्नी उसे हिलाती है कहती है कि आप समझे नहीं शायद! बेटा जा चुका है। वह सम्राट ने कहा: मैं समझ गया। लेकिन मैं बड़ी मुश्किल में पड़ गया हूं। मैं यह सोच रहा हूं कि अभी मेरे बारह बेटे थे, उनके लिये रोउ या इस एक बेटे के लिए रोऊँ? उसकी पत्नी ने कहा: कैसे बारह बेटे! उसने कहा कि उनका तुझे पता नही क्योंकि, और रानियाँ थीं, जिनसे वह पैदा हुये थे। उस रानी ने कहा कौन सी रानियां! उस सम्राट ने कहा तू घबड़ा मत, आँख बन्द करके जो दुनिया होती है, उसमें देखे गये वो बेटे थे। लेकिन मैं बड़ी मुश्किल में पड़ गया हूं कि सच कौन है! क्योंकि जब मेरी आँख बन्द हो गई थी, तो यह बेटा मैं भूल गया था और तू भी मुझे भूल गयी थी और यह महल भी मैं भूल गया था। इनकी मुझे कोई याद न रही थी। मैं एक दूसरी दुनिया मे खो गया था। और अब जब वह दुनिया टूट गयी है तो वे सब बेटे खो गये, वे महल, वे रानियाँ खो गयीं। अब तू है और यह बेटा। सच कौन है? उस रानी ने कहा आप कैसी बातें कर रहे हैं! वह राजा कहने लगा; मैं किसके लिये रोऊँ? और उस राजा ने चीन में हुये एक बहुत अद्भुत फकीर च्वांगत्से की एक छोटी सी कहानी अपनी पत्नी से कही। उसने कहा कि मैं कभी नहीं समझ पाया था इस कहानी को आज समझा हूं। च्वांगत्से ने कहा है कि मैं एक रात सोया और मैंने सपना देखा कि मैं तितली हो गया हूं, हवायें हैं, खुला आकाश है, मुक्त तितली उड़ रही है। सुबह च्वांगत्से उठा और रोने लगा। उसके मित्रों ने पूछा कि क्या हो गया? तो उसने कहा मैं बड़ी मुश्किल मे पड़ गया हूं। रात मैंने एक सपना देखा कि मैं तितली हो गया हूं,और फूल फूल डोल रहा हूं। तो मित्रों ने कहा सपने हम सभी देखते हैं, इसमें परेशानी की क्या बात है? उस च्वांगत्से ने कहा कि नहीं, मैं——परेशान इसलिए हो गया हूं कि अगर च्वांगत्से नाम का आदमी रात सपने में तितली हो सकता है तो यह भी हो सकता है, तितली अब सपना देख रही हो कि वो च्वांगत्से नाम का आदमी हो गयी है। जब आदमी तितली बन सकता है सपने में तो तितली सपने में आदमी नहीं बन सकती! च्वांगत्से कहने लगा; मैं इस मुश्किल में पड़ गया हूं कि मैं च्वांगत्से हूं, जिसने सपने में तितली का सपना देखा है या मैं हकीकत में एक तितली हूं, जो अब च्वांगत्से का सपना देख रही है! वो सम्राट ने कहा कि मैं इस कहानी को कभी नहीं समझ सका था। आज यह पहली दफे मेरे ख्याल में आयी है बात कि जो सपना अभी मैंने आखें बन्द करके देखा था, वह सच था, ? अगर वह सच था तो फिर यह जो सामने दिखाई पड़ रहा है, कह क्या है! और अगर जो सामने दिखाई पड़ रहा है, वह सच है तो अभी जो आँख बन्द करके देखा वो क्या था! असल में हम दो तरह के

सपने देखते हैं। वो सम्राट मुझे मिल जाता तो उससे मैं कहता, च्वांग त्से मुझे मिल जाय कभी तो उसे कहना चाहूं कि हम दो तरह के सपने देखते हैं। न तो च्वांग त्से सपने में तितली बनता है और न तितली च्वांगत्से बनती है। एक एक्स, एक अनजान शक्ति दो तरह के सपने देखती है। वो रात तितली बन जाती है, दिन में च्वांग त्से बन जाती है। वह सम्राट रात में देखता है बारह बेटों का सपना है, दिन में देखता है एक बेटे का सपना है लेकिन सब सपने टूट जाते हैं। असल में जो टूट जाता है, उसी का नाम सपना है जिसे हम जिन्दगी कहते हैं, वो जिन्दगी है या एक स्वप्न! अगर वो जिन्दगी है तो फिर स्वप्न और जिन्दगी में कोई फर्क नहीं है। और अगर वो स्वप्न है तो फिर जिन्दगी की तलाश हमें करनी होगी कि फिर जिन्दगी कहाँ है! और इस डर से कि कहीं हमें जिन्दगी खोजने का श्रम न उठाना पड़े, हम सपने को ही जिन्दगी मान के चुपचाप जी लेते हैं और मर जाते हैं। हम यह सवाल भी नहीं उठाना चाहते हम कठिन सवाल नहीं उठाना चाहते। इनकॉन्वीनियेंट, असुविधापूर्ण सवाल नहीं उठाना चाहते जो हमारी जिन्दगी को मुश्किल में डालें। इसलिए बड़े मजे की बात है, कोई आदमी कभी नहीं पूछता कि मैं कौन हूं क्योंकि यह बहुत ही कठिन सवाल है। और जिन्दगी को मुश्किल में डाल देने वाला है। और जो जिन्दगी हमने बनाली है सपने के ईंटों से, उसके गिर जाने का डर है। इसलिए हम ऐसे बुनियादी सवाल नहीं उठाते। लेकिन इन चार दिनों में मैं एक बुनियादी सवाल ही उठाना चाहता हूं। जिसे हम जिन्दगी कहते हैं वो जिन्दगी है? या वो भी एक सपना है! निश्चित वो हमें जिन्दगी मालुम पड़ती है क्योंकि हम सब उसको देखते हैं। वो असल में हम सबका सामुहिक सपना है, इसलिए सच्चा मालुम पड़ता है। लेकिन, सामुहिक हो जाने से भी कोई सपना सत्य नहीं हो जाता है।

फिल्म के पर्दे पर जो आप देखते हैं, उसमें सच कुछ भी नहीं होता है, सिर्फ प्रकाश की किरणों का जाल होता है। लेकिन वह प्रकाश की किरणों का जाल घड़ी दो घड़ी को भुला देता है कि जो हम देख रहे हैं वह कोरा पर्दा है। और उस पर सिवाय चित्रों के और कुछ भी नहीं है। और हाल में अगर पांच, छः हजार आदमी बैठे हैं या हजार आदमी बैठे हैं तो उन सबके लिये एक समान सपना शुरू हो जाता है। क्या जिन्दगी पर भी हम एक इस तरह का सपना नहीं देखते हैं जो सामान्य है, जो कॉमन है जिसमें हम सब देखने वाले एक साथ सम्मिलित हैं! रात जो हम सपना देखते हैं, वह प्राइवेट है, वह निजी है, उसमें हम दूसरे आदमी को भागीदार नहीं बना सकते हैं। बस इतना ही फर्क है। रात जो देखते हैं, वो मैं अकेला देखता हूं इसलिए मैं सुबह आपसे नहीं कह सकता कि जो मैंने देखा वह सच है। क्योंकि मैं आपके लिये गवाही कहाँ से लाऊँ! मैं उसमें अकेला ही मौजूद होता हूं। दिन में जो हम देखते हैं, उसमें हम सब सम्मिलित हैं, सहयोगी हैं। इसलिए गवाही मिल जायगी। लेकिन गवाही मिलने से क्या झूठ सच हो जाता है! और गवाही मिलने से क्या चित्र सत्य बन जाते हैं? तो सत्य की और स्वप्न की थोड़ी परिभाषा समझ लें तो आसान हो जाय। सत्य वह है जो सदा एक जैसा है। सत्य वह है जो अपरिचित है। सत्य वो है जो बदलता नहीं हैं। सत्य वो है जो कभी मरता नहीं है। सत्य वह है जो जैसा था, वैसा ही है वैसा ही होगा। सत्य का मतलब ही यह है कि जो शाश्वत है जिसमें कोई रूपांतरण नहीं होता। सपने का मतलब यह है, जो प्रतिपल बदल रहा है। हरक्युलिस हुआ यूनान में, उसने कहा है कि आप एक ही नदी में दुबारा नहीं उतर सकते हैं। मुश्किल है एक नदी में दुबारा उतरना। असल में एक बार ही उतरना बहुत मुश्किल है जब आप नदी में पैर डालते हैं तो जैसे ही पैर आपका पानी को छूता है, वह पानी गया। जब आपका पैर जरा और नीचे गया तब तक दूसरा पानी आ गया है। और जरा नीचे गया वह पानी भी गया। एक ही नदी में एक ही बार उतरना मुश्किल है, दुबारा तो उतरना बिल्कुल असम्भव है। क्योंकि पानी भागा जा रहा है। लेकिन हमने नाम रख लिया है नदी कहते हैं गंगा, तो हम सोचते हैं, वही गंगा है जहां कल हम आये थे। गंगा प्रतिपल बही जा रही है। गंगा एक बहाव है। हम सब भी बहाव हैं अगर कभी आप कल्पना करें कि आप अपनी मां के पेट में एक छोटे से अणु थे।

तो आप विश्वास भी न कर सकेंगे कि आप और एक छोटे से अणु जो नंगी आँखों से देखा भी न जा सकता जिसके लिये देखने को बड़े यंत्र चाहिये। वो छोटा सा अणु अगर आपके सामने रख दिया जाय तो आप मानने को राजी न होंगे कि यह मैं हूं। लेकिन आप एक दिन वही थे। फिर एक छोटा सा बच्चा था। फिर आप जवान हो गये। फिर आप बूढ़े हो जायेंगे। अगर एक आदमी की जिन्दगी भर की तस्वीरें रखी जायँ इकट्ठी तो पता चलेगा कि आदमी भी एक बहाव है। जैसे गंगा एक बहाव है। अगर हम एक आदमी के दस हजार चित्र खींच सकें, जन्म से लेकर मरने तक तो हमें कहना पड़ेगा आदमी भी एक नदी है। इसमें कौन सा चित्र सच्चा है? इसमें कौन सा चित्र उस आदमी का अपना है?

जापान में फकीर एक सवाल पूछते हैं कि आपका ओरिजनल फेस क्या है? आपका असली चेहरा कौन सा है? बड़ा मुश्किल है उनका जबाब देना। क्योंकि जब तक आप अपने चेहरे को आइने में बतायें, वह बदल चुका है, वह जा चुका है। नदी हो केवल नदी नहीं है, आदमी भी एक नदी है। सुबह आप कुछ होते हैं, सांझ कुछ हो जाते हैं। एक आदमी बुद्ध के पास आया और उनके मुंह पर थूंक गया। नाराज था बहुत। बुद्ध ने चादर से थूंक पोंछ लिया और उस आदमी से कहा और कुछ कहना है? वह आदमी हतप्रभ हो गया। क्योंकि उसने नहीं सोचा था कि थूंके जाने पर बुद्ध कहेंगे और कुछ कहना है। बुद्ध ने कहा घबड़ाओ मत, मेरे ऊपर पाप मत लगाओ कि मैंने तुम्हें घबड़ा दिया। और कुछ कहना है तो कह दो? क्योंकि मैं समझता हूं कि तुम्हें कुछ कहना था, जो तुम शब्दों में न कह सके और तुमने थूंक कर कहा है। अब तुम्हें कुछ और कहना हो तो कह दो। बुद्ध का एक भिक्षु पास ही था वह नाराज हो गया। उसने बुद्ध से कहा यह बेहद हो गयी। वह आदमी थूंक रहा है और आप यह क्या कह रहे हैं! हम क्रोध से भर गये हैं। बुद्ध ने कहा: क्रोध से वह आदमी भी भर गया था। इसीलिए थूंक सका। अब तुम भी थूंकने की तैयारी कर रहे हो। तो जो उस आदमी ने किया कहीं तुम भी करोगे तो फिर तुममें और उस आदमी में फर्क क्या है? वह आदमी चला गया। दूसरे दिन जब गांव से आया रात भर सो न सका। आकर पैर पर सिर रख दिया, रोने लगा, उसके आंसू बुद्ध के पैरों पर गिरे। बुद्ध ने फिर कहा और कुछ कहना है? क्योंकि आंसू गिरा तुमने कुछ तो कह दिया जो तुम कह न सकोगे। अब और कुछ कहना है? उस आदमी ने कहा कि आप भी कैसे आदमी हैं! मैं कल की मांफी मांगने आया हूं। बुद्ध ने कहा: पागल! जिसके ऊपर तुप कल थूंक गये थे, वह कब का बह गया और जो थूंक गया था वह भी अब कहां है? और थूंक कहां है? दोनों ही नहीं। सपने के लिए क्यों परेशान हो रहे हो? सपने का अर्थ है जो प्रतिपल बदलता जा रहा है। जिसे हम क्षण भर ठहरा नहीं सकते। अगर आपका मन सुख में हो तो क्या आप क्षण भर को उस सुख को ठहरा सकते हैं? नहीं ठहरा सकते हैं। जब आप ठहराने की कोशिश कर रहे हैं, तभी बात बदल गयी, नदी बह गयी है। जब आप किसी के प्रेम में भरे हैं तो क्या आप उस को ठहरा सकते हैं? जब आप प्रेम को ठहराने लगे तब जानना कि वह जा चुका है क्योंकि जब वह जा चुका होता है, तभी ठहराने का ख्याल आता है। नहीं, इस जिन्दगी में न हमारे मन के भीतर, न हमारे मन के बाहर कुछ भी ठहराव नहीं है।

एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक हुआ है एडीसन। उसने अपने एक संस्मरण में लिखा है कि मैंने मनुष्यों की सारी भाषायें देखीं और एक शब्द मुझे झूठ लगता है जो सभी भाषाओं में है। वो बिल्कुल झूठ है। वो शब्द अजीब है। वो शब्द है रेस्ट, ठहराव। उसने लिखा है ठहरी हुई कोई भी चीज नहीं हैं। सब चीजें हो रही हैं। इसलिए बुद्ध तो कहते थे किसी आदमी को यह मत कहना कि वो जवान है, कहना कि वो जवान हो रहा है। किसी आदमी को मत कहना कि वो आदमी बूढ़ा है, कहना कि बूढ़ा हो रहा है। किसी आदमी को मत कहना कि वो क्रोध से भरा है, इतना ही कहना क्रोध से भर रहा है या खाली हो रहा

है। कोई चीज 'है' कि स्थिति में नहीं है। कोई चीज ठहरी हुई नहीं है। सब चीजें भागी जा रही हैं और सब चीजें बदली जा रही हैं। लेकिन सपने में दिखाई नहीं पड़ता। आपने सपने में ख्याल किया होगा कि आप एक घोड़े को देख रहे हैं वह एक पल में आदमी हो गया लेकिन, सपने में शक भी नहीं आता। डाउट भी पैदा नहीं होता कि ये घोड़ा एकदम से आदमी कैसे हो गया! हां, सुबह जाग कर शक हो सकता है। लेकिन रात सोते में शक नहीं होता कि अभी जिसको हम घोड़ा देख रहे थे वह अचानक आदमी हो गया, यह कैसे हो गया! कोई शक नहीं आता। वृक्ष था वो बोलने लगा, कोई शक नहीं आता। घोड़ा है, आकाश में उड़ने लगा, कोई सन्देह पैदा नहीं होता। सपने में सब तरह की बदलाहट स्वीकृत करली जाती है। जो जबान था, वह बूढ़ा हो गया फिर भी हम कहते हैं ये वही हैं। जो बच्चा था वो जवान हो गया है, फिर भी हम कहते हैं, यह वही है,। जो प्रेमी था वह पति हो गया और हम कहते हैं, अब भी यह वही है। सब बदल गया है। जिन्दगी एक क्षण को वही नहीं है, जो थी। सब भाग रहा है। शायद हमारी देखने की क्षमता बहुत कम है इसलिए बदलाहट दिखाई नहीं पड़ती है। या हम एक ही चीज को देखने के इस भांति आदि हो जाते हैं और बदलाहट इतने अहिस्ता हो रही है कि हमें ख्याल नहीं आता कि बदलाहट हो गयी है।

जब मैं कहता हूं कि जिन्दगी एक सपना है तो मेरा मतलब है, जिन्दगी में कुछ भी ठहरा हुआ नहीं है। जिन्दगी एक नदी की तरह बदल रही है। और जहां बदलाहट हो वहां मकान मत बनाना। नदी पर जो मकान बनायेगा वह पागल है। नदी तो बहेगी, मकान भी बह जायेगा। लेकिन इस जिन्दगी से हम मकान बनाते हैं। मजबूत पत्थरों का बनाते हैं। लेकिन, हमें पता नहीं है कि मजबूत पत्थर भी बहती हुई नदियां हैं। जरा धीरे बह रही हैं। पानी जरा तेजी से बह रहा है। आज जो मजबूत पत्थर है कल वो रेत होगा। आज जो मजबूत पत्थर है, कल वो रेत था। आज जिसकी शिला आपने रखी है, बहुत मजबूती से कल वो राख हो जायगी। सब चीजें बह रही हैं। बहती हुई इस जिन्दगी को घर मत बनाना। धर्म का एक ही सूत्र है और धर्म का एक ही राज है और धर्म की गहरी से गहरी जो खोज है वह यह है कि बहाव पर घर मत बनाना। क्योंकि बहाव के साथ घर भी बह जायगा और हाथ में कुछ भी नहीं बचेगा। घर वहां बनाना जहां कुछ ठहरा हुआ हो। घर वहां बनाना जहाँ कोई चीज है। हो रही है वहां घर मत बनाना। अधार्मिक व्यक्ति वो है जो नदियों पर घर बनाते हैं। धार्मिक व्यक्ति जो है, वह अस्तित्व पर, सत्य पर घर बनाता है। धार्मिक आदमी बुद्धिमान आदमी है। अधार्मिक आदमी बुद्धिहीन आदमी ह। पापी नहीं कह रहा हूं। विवेकहीन, सोया हुआ, सपनों में डूबा हुआ जी रहा है। हम जो अपने चारों तरफ देखते हैं, वह बह रहा है, सपने का एक लक्षण। दूसरा लक्षण कि जो हम देखते हैं, वो वही नहीं है, जो है हम वही देख लेते हैं, जो हम सपना देखना चाहते हैं।

मजनू को उसके गांव के राजा ने पकड़वा लिया था। गाँव भर में चर्चा थी कि वह पागल हो गया है लैला के लिये। राजा को भी हैरानी हुई, राजा भी सुन्दर स्त्रियों का शौकीन था। उसने बार बार लैला को देखने की कोशिश की। बड़ी मुश्किल में पड़ा, लैला बहुत साधारण लड़की थी फिर भी मजनू पागल क्यों हो गया। तो उसने मजनू को बुलाया, दया दिखाई। और मजनू को कहा तू पागल तो नहीं है! लैला बड़ी साधारण लड़की है। मैंने बहुत सुन्दर लड़कियां तेरे लिये बुला कर रखी हैं, उनको देख और जो तुझे पसन्द हो उसके साथ तेरा विवाह कर दें। लेकिन लैला को भूल। लैला बड़ी साधारण लड़की है, उस राजा ने कहा। मजनू बहुत हँसने लगा, उसने राजा से कहा कि शायद आपको पता नहीं लैला को देखने ने लिये मजनू की आंख चाहिए। मेरी आँख है आपके पास? राजा ने कहा तेरी आँख मेरे पास कैसे हो सकती है! तो उसने कहा: फिर छोड़िये ख्याल आप लैला को न देख पायेंगे। लैला को मजनू देख सकता है। मजनू की आँख ही लैला को देख सकती है।

कहां हैं वो लड़कियां ? मुझे उनमें भी लैला दिखाई पड़ेगी। और मजनू ठीक कह रहा है। वो एक बड़े सत्य की ओर इंगित कर रहा है। शायद उसे पता नहीं ऐसे सत्य का। हम वही देख लेते हैं, जो हम देखना चाहते हैं। वहा जो है बाहर या भीतर वो हम नहीं देखते हैं। जो हम देखना चाहते हैं उसे हम आरोपित कर लेते हैं, सपने का मतलब है एक आरोपण, इम्पोजीशन। किसी को आप मित्र आरोपित कर रहे हैं, बड़ा आश्चर्य ! जो कल तक मित्र था, वह आज शत्रु हो गया था। जो शत्रु था वह आज मित्र हो गया है। शायद जो था वो आप देख नहीं पाये थे। आपने कुछ मान रखा था। हम सब मान कर जी रहे हैं। सुनी है मैंने एक कहानी, कि रामदास हजारों-हजारों साल बाद राम की कथा लिखते थे। राम की कथा लिख रहे हैं हजारों साल बाद। यह खबर हनुमान तक पहुंच गई है। और यह खबर ऐसी पहुंची है कि लोगों ने कहा कि, रामदास जैसी राम की कथा लिख रहे हैं, ऐसी कभी नहीं लिखी गई है। और रोज लिखते हैं, और सुना देते हैं। हजारों लोग सुनने इकट्ठे होते हैं। तो हनुमान भी छिपके वहां सुनने जाने लगे। एक दिन गये तो उन्हें बहुत रस पड़ा। सच में ही अद्‌भुत ढंग से वे कहानी कह रहे थे। हनुमान को भी रस पड़ा, जो कि कहानी का एक साक्षी था। फिर वह घटना आती है कहानी में, जबकि हनुमान सीता को खोजते हुए अशोक वाटिका में गये। तो रामदास ने कहा कि जब हनुमान अशोक वाटिका में गये तो वहां सफेद फूल चांदनी के पूरे बगीचे में ढके हुए थे। पूरा बगीचा ढ़का हुआ था। हनुमान के बरदाश्त के बाहर हो गया। उन्होंने खड़े होकर कहा कि माफ करिये शायद आपसे कुछ भूल हो गयी, फूल लाल रंग के थे, बदलाहट कर लें। लेकिन रामदास ने कहा नासमझ चुपचाप बैठ, फूल सफेद थे। हनुमान तो छिपे हुए वेश में थे, बड़ी मुश्किल हो गई लेकिन क्रोध भी चढ़ गया तो उन्होंने अपना असली रूप प्रकट कर किया कि शायद आपको पता न हो, मैं खुद हनुमान हूं, मैं खुद गया था। अब आप देख लें मुझे और सुधार करलो। रामदास ने कहा होगे तुम हनुमान लेकिन सुधार नहीं होगा, लेकिन फल सफेद ही थे झगड़ा बहुत उपद्रव का हो गया। हजारों साल बाद जो आदमी कहानी लिखता है, वह यह कह रहा है उस आदमी से जा कि गया था। तो कथा है कि हनुमान उन्हें पकड़ कर राम के पास ले गये कि इसके सिवाय कोई निपटारा नहीं है। हनुमान ने राम से कहा कि देखते हो इस आदमी की हठ ! यह आदमी कहता है कि फूल सफेद थे और मैं गया था अशोक वाटिका में। और यह रहे राम, रामदास से कहा अब इनसे पूछ लो। राम ने कहा रामदास मे कुछ मत कहो हनुमान, फूल सफेद ही थे लेकिन, तुम क्रोध से भरे थे, आँखें खून से भरा थीं कि लाल दिखाई पड़े होंगे। सफेद फूल भी लाल दिखाई पड़ सकते हैं। असल में जो हमें दिखाई पड़ता है, वह वही नहीं होता है जो है, वो होता है जो हमारी आँखें प्रोजेक्ट करती हैं, जो हमारी आँखें इम्पोज करती हैं, जो हमारी आँखें आरोपित करती हैं। एक जर्मन कवि हुआ है हिंदी, हीर। जंगल में भटक गया था, भूल गया रास्ता। बहुत कवितायें लिखीं हैं। चांद में प्रेयसी को अनेक बार देखा है। पूर्णिमा की रात आ गयी थी। तीन दिन से भटक रहा है। पूर्णिमा की रात है, सुनसान जगल है, । लेकिन उस चांद में उसे प्रेयसी की तस्वीर नहीं दिखाई पड़ती। बल्कि एक डबल रोटी तैरती हुई दिखाई पड़ती है। तीन दिन से भूखा है। भूखे आदमी को चांद में कहीं प्रेयसी दिखाई पड़ेगी ? बिल्कुल नहीं दिखाई पड़ेगी। चांद में स्त्री दिखाई पड़ने के लिए पेट भरा होना पहली शर्त है। बल्कि थोड़ा ज्यादा पेट भरा होना जरूरी है। भूखे आदमी को रोटी दिखाई पड़ती है आकाश में तैरती हुई। हीर ने लिखा है "मैं बड़ा हैरान हुआ, और हीर ने लिखा है कि अब तक किसी कवि को यह क्यों नहीं सूझा कि चांद नहीं है आकाश में एक सफेद रोटी तैर रही है। यह भूखे आदमी का इम्पोजीशन है, आरोपण है। असल में चांद हमने देखा नहीं, किसी ने भी नहीं देखा। हम सब को जो देखना है, वो देख लेते हैं। किसी की प्रेयसी खो गई है, किसी की पत्नी खो गई है, किसी का बेटा मर गया है जब वो चांद की तरफ देखता है तो बड़ा उदास मालूम पड़ता है। उसी रात, गांव में, उसी के मकान के दूसरी तरफ कोई अपने प्रेमी के पास बैठा है, किसी को खजाना मिल गया

है। उसे चांद बहुत आनंदित और हँसता हुआ मालुम पड़ता है। वो चांद एक है। चांद से तो कोई पूछने नहीं जाता कि तुम उदास हो कि तुम प्रसन्न हो। अपनी प्रसन्नता और अपनी उदासी हम उस पर आरोपितकर देते है। हम चौबीस घंटे अपने चारों ओर प्रोजेक्शन कर रहे हैं। प्रोजेक्शन मशीन होती है न सिनेमा के पीछे, जिससे पर्दे पर चित्र फेंके जाते हैं। हर आदमी एक-एक प्रोजेक्टर है, जो जिंदगी भर चारों तरफ से चित्र फेंक रहा है। और अपने अपने चित्र देख रहा है।

मेरे एक प्रोफेसर थे, जिस यूनिवर्सिटी में मैं पढ़ता था। उनसे मैंने यह बात कही एक दिन। मैंने उनसे कहा कि हम वही देख लेते हैं, बल्कि वही हो जाता जो हमारी कामना प्रोजेक्ट करती है, जो हमारी कामना प्रक्षेप करती है। उन्होंने कहा कि नहीं ऐसा नहीं है। ऐसा कैसे हो सकता है? पन्द्रह दिन बाद मैं उनके घर गया और मैंने सुबह ही जाकर उनकी पत्नी से पूछा कि आपके श्रीमान की तबियत तो ठीक-ठाक है! उन्होंने कहा तबियत बिलकुल ठीक है। कोई गड़बड़ नहीं, आप कैसे पूछने आये! मैंने कहाकि मैं कुछ प्रयोग कर रहा हूं इतनी कृपा करके, मेरी तरफ से सुबह जब वह उठें तो इतना कह देना उनसे कि क्या बात है आपकी तबियत कुछ खराब मालूम होती है? आँखें लाल हैं! शरीर कुछ कुम्हलाया मालूम पड़ता है। उनकी पत्नी ने कहा: लेकिन उनकी तबियत बिलकुल ठीक है। मैंने कहा: वह सवाल नहीं है, आप उतना मेरी तरफ से दोहरा देना, मैं कुछ प्रयोग कर रहा हूं। और यह कागज दे जा रहा हूं। और वह जो कहें, ठीक वही शब्द इस कागज पर लिख लेना। और कृपा करके उनको बताना मत। पड़ोस में एक पोस्ट मास्टर रहते थे, उनसे मैंने कहा कि सुबह आप भी जब वे सज्जन निकलें तो उनसे नमस्कार करके पहला काम, यही पूछ लेना कि क्या बात है, तबियत कुछ खराब है आपकी? चेहरा पीला-पीला मालूम पड़ता है और वह जो भी कहें लिख लेना। नंबर तीन पर एक और प्रोफेसर रहते थे, उनके घर भी मैं कह आया, नंबर चार पर भी कह आया। नंबर छः वाले आदमी को मैंने कहा कि जब वह यहाँ से निकलें तो आप उनसे यह पूछ लेना कि आपके हाथ पैर डगमगाते से मालूम पड़ते हैं क्या बात है? वह सुबह वहीं से निकल कर युनिवर्सिटी आते हैं। कोई डेढ़ मील का फासला पैदल चलकर ही तय करते हैं। आठवें या दशवें आदमी को मैं कह आया कि आप भूल कर भी उन तबियत की बात मत पूछना, जब वह यहाँ से निकलें लेकिन मिलना जरूर, नमस्कार करके आप चुप ही रहना। अगर वह खुद अपनी तरफ से कुछ कहें तो यह कागज रखें, इसमें लिख लेना। मैं कोई बीस लोगों को कागज दे आया। पत्नी ने पूछा उनसे सुबह ही उठते ही कि क्या बात है, आँखें लाल मालूम होती हैं, चेहरा उदास मालूम होता है, तबियत तो ठीक है ना? उन्होंने कहा: तबियत बिलकुल ठीक है, कोई गड़बड़ी नहीं है, पागल हो गयी हो! पड़ोस के पोस्ट मास्टर ने जब उनसे पूछा कि आपकी तबियत खराब मालूम होती है? तो उन्होंने कहा: नहीं नहीं, तबियत तो खराब नहीं, जरा रात से ठीक नींद नहीं हुई। और जब तीसरे आदमी ने उनसे पूछा कि क्या बात है आपका कुछ स्वास्थ्य! वह इतना ही कह पाया था कि उन्होंने कहा: रात से ही कुछ हरारत सी मालूम पड़ती है। आठवें आदमी ने उनसे पूछा ही नहीं कि आपकी तबियत कैसी है, आठवें आदमी से उन्होंने खुद ही कहा कि आज युनिवर्सिटी जाने की हिम्मत नहीं है। बुखार है रात से। तो यदि आप जा रहे हों तो मैं—आपकी कार में चला चलूं क्योंकि, आज मैं पैदल न जा सकूंगा। वे कार में ही बैठ गया हैं 'जो हमारे दरवाजे पर डिपार्टमेन्ट का चपरासी था, उसने उनको सम्हाला तो बराबर कंपती हुई हालत में थे। और जब अंदर डिपार्टमेन्ट में मैंने उनसे कहाकि क्या हो गया आपको, तबियत बहुत खराब है? तो एक दम बैठके आँखे उन्होंने बन्द कर लीं कुर्सी पर, जवाब ही नहीं दिया। थोड़ी देर बाद बोले कि तबियत मेरी बहुत खराब है, घर पर खबर कर दो, कोई आ जाय और मुझे ले जाय। शाम को जब मैं उनके घर गया था तो थर्मामीटर लेकर गया था। उनको एक सौ डिग्री बुखार था। वह बीस चिट्ठियाँ भी साथ ले गया था। थर्मा-

मीटर लगा के, बुखार नापकर मैंने बीसों चिट्ठियां उनके हाथ में दे दीं और मैंने कहा : कृपाकर पहली चिट्ठी से बीस तक पढ़ जायं । यह सुबह के आपके दिये हुये–जवाब हैं । यह बुखार सपना है आपका, कि सच है ? यह बुखार प्रोजेक्शन हो गया । यह बुखार उन्होंने अपने पर आरोपित कर लिया । हम अपने पर भी आरोपित कर रहे हैं । सपने और दूसरों पर आरोपित कर रहे हैं । "जो है" वह हमें दिखाई नहीं पड़ रहा है । न भीतर, न बाहर । जो नहीं है उसे हम थोप रहे हैं और देख रहे हैं । सम्राट भी एक तरह के सपने देखता है, भिखारी दूसरे तरह के देखता है । जीता हुआ एक तरह का देखता है, हारा हुआ दूसरी तरह का देखता है, लेकिन हम सब सपने ही देखते हैं । सपने के बाहर तो वही आदमी हो सकता है, जो अपनी तरफ से सत्य के ऊपर यथार्थ के ऊपर कुछ भी थोपने से इन्कार कर दे । जो कहे कि मैं अपनी आंख से तो कोई भी चित्र न फेकूंगा । जो अपनी आंख शून्य कर ले, खाली कर ले, जो निपट खाली हो जाय और जिसका प्रोजेक्टर भीतर से बंद हो जाये और जो कहे कि मैं कोई विचार के माध्यम से जगत को न देखूंगा, निर्विचार के माध्यम से देखूंगा तो सत्य को देख पा सकता है । और जिस दिन सत्य दिखाई पड़ता है, उस दिन पता चलता है कि हम कैसे सपने में जी रहे थे । असल में जब तक सपने न टूटें तब तक पता ही नहीं चलता कि हम सपने में थे । कभी आपको नींद में पता चला है कि आप नींद में हैं ? यह सुबह आपको पता चलता है, जब नींद टूट जाती है । आपको दो घटनायें याद हैं, जब रात; जब तक आप जागते हैं तब तक आपको पता रहता है कि मैं जागा हूं, आपको कभी पता नहीं चलता है कि कब आप सो गये और आपको रात भर पता नहीं चलता कि मैं सोया था । नींद टूटे तो ही पता चलता है । हम सब सपने में हैं वह हमें तभी पता चल सकता है, जब सपना टूटे । और हम जागें किसी और सत्य में, जिस सत्य को हमने नहीं बनाया, जो हमारे ग्रामोद्योग का फल नहीं है, उस सत्य में जिस दिन हम जागें, उस दिन हमें पता चलेगा कि हम सोये थे । उसके पहले पता भी नहीं चलेगा । लेकिन अगर कोई भी हमसे कहे कि हम सब सोये हुये लोग हैं तो चित्त नाराज होता है । तो क्रोध आता है ।

मैंने सुना है कि भीखण एक फकीर एक गांव में रुके हैं । सारा गांव उनको सुनने आया है । गांव का जो धनपति है, वो सामने ही बैठा है । भीखण ने बोलना शुरू किया है । जैसा कि धार्मिक सभाओं में होता है, अधिक लोग सो जाते हैं । वह सामने बैठा हुआ धनपति भी सो गया है । और भी बहुत लोग सो गये होंगे । असल में कुछ 'डा०' तो यह कहते हैं कि जिनको नींद न आती हो, उनको धार्मिक सभा में चला जाना चाहिये । वह नींद का बहुत अक़सीर नुसखा है । वहाँ नींद आ ही जाती है । दिन भर के थके मांदे लोग, जिन बातों में उनकी कोई रुचि नहीं, जब उनको सुनते हैं तो नींद न आये तो क्या हो ? और वे ही बातें जो हजार बार सुनी जा चुकी हैं, जब बार-बार सुनते हैं तो नींद न आये तो और क्या हों ? नींद का सूत्र है कि बोर्डम पैदा हो जानी चाहिये । पहले ऊब पैदा हो जानी चाहिए तो नींद आ जाती है । इसलिए छोटे बच्चे को सुलाने की मां जो तरकीब लाती हैं, वह बड़ी खतरनाक है । वह उससे कहती है, राजा बेटा सो जा, सो जा, मुन्ना बेटा सो जा, दोहराती ही चली जाती है । ऐसे ही बकवास दोहराती है तो राजा बेटा भाग भी नहीं सकते और सिर पकने लगता है, ऊब जाता है चित्त, इसको सुनने की अब तबियत नहीं होती कि अब यह और बकवास सुनी जाय तो राजा बेटा को सोना पड़ता है । राजा बेटा के बाप के साथ भी यह प्रयोग किया जाय, वो भी सो जायेंगे (हास्य) इसलिये जो लोग बैठ कर राम नाम, जाप जपते रहते हैं, वह झपकी लेते हैं । एक ही शब्द को कोई दोहरायेगा तो ऊब पैदा होती है, ऊब से नींद आ जाती है । सामने बैठा हुआ धनपति भी सो गया है । भीखण के पहले और सन्यासी भी उस गाँव में आये थे तब भी वो धनपति सोता था । लेकिन, वह दूसरे सन्यासी धनपति से कहते थे कि आप बड़े तल्लीन होकर, ध्यान मग्न होकर सुनते हैं । और वह धनपति भी मानता था ।

और अकड़ कर निकलता था शान से कहता कि मैं ध्यान मग्न होकर सुनता हूं। लेकिन ये भीखण अजीब आदमी हैं। इन्होंने उसको रोका और कहा कि क्यों सो रहे हो क्या ? तो उसने जल्दी से आंख खोली, उसने कहा कि नहीं, सो नहीं रहा हूं, मैं तो ध्यान मग्न होकर सुन रहा हूं। भीखण ने फिर बोलना शुरू कर दिया। उस आदमी को फिर नींद लग गई। भीखण ने फिर रोका और कहा कि सुनते हो, सो रहे हो क्या ? उस आदमी ने कहा, नहीं, आप भी कैसे आदमी हैं ? मैं सोता नहीं, यह मेरी आदत है, ध्यान मग्न होकर मैं सुनता हूं। भीखण ने फिर बोलना शुरू कर दिया, वह आदमी फिर से सो गया, लेकिन थोड़ी देर बाद भीखण ने फिर जोर से कहा : जोर से कहा लेकिन, बदल के कहा। बार बार कहते थे सोते हो क्या ? इस बार कहा : सुनो; जीते हो क्या ? उस आदमी ने कहा : नहीं, नहीं, कौन कहता है ? मैं तो बराबर सुन रहा हूं। आप आदमी कैसे हैं कि बार-बार वही बात दोहराते हैं। भीखण ने कहा : इस बार तो तुम फँस गये हो क्योंकि, इस बार मैंने नहीं कहा कि सोते हो क्या, मैंने पूछा है : जीते हो क्या ? और अगर ध्यान मग्न होकर सुन रहे होते तो तुमने जरूर सुन लिया होता। नहीं, सुन नहीं रहे हो। लेकिन तुम्हारा उत्तर ठीक है। जो सो रहा है, वो जी भी नहीं रहा है। जो सो रहा है, वह एक अर्थ में मरा ही हुआ है। हम एक अर्थ में मुर्दा हैं, बहुत गहरे अर्थ में। क्योंकि हम जीवन को तो जान ही नहीं पाये, जीवन को नहीं जान पाये इसलिये तो हम पूछते हैं, परमात्मा कहां है ? अगर हम जीवन को जान लेते तो हम यह कभी न पूछते कि परमात्मा कहां है क्योंकि, परमात्मा जीवन का दूसरा नाम है, इसीलिये तो हम पूछते हैं, मोक्ष कहाँ है ? अगर हम जीवन को जान लेते तो कभी न पूछते मोक्ष कहाँ है क्योंकि, जीवन परम मुक्ति है। जीवन को नहीं जान पाये इसलिये तो हम मौत से डरते हैं और घबराते हैं और पूछते हैं कि मर तो न जायेंगे ? आत्मा अमर है न ? अगर हम जीवन को जान लेते तो हम पाते हैं, समझ जाते हैं कि कुछ मरता ही नहीं है। जो है, वो सदा है। मृत्यु का भय मिट जाता है। मृत्यु की चिंता मिट जाती है। मृत्यु एक असत्य हो जाता है। लेकिन जीवन का हमें कोई पता नहीं है, इसलिए परमात्मा का कोई पता नहीं, मुक्ति का कोई पता नहीं है, इसलिये मृत्यु असत्य है, इसका कोई पता नहीं है। और अगर हम जीवन को जान लेते तो हम कभी न पूछते कि आनंद कहाँ है ? क्योंकि जहाँ जीवन है, वहाँ आनंद है। लेकिन उसका हमें कोई पता नहीं है और पता होगा भी नहीं क्योंकि जीवन जागने से दिखाई पड़ता है, सोने से नहीं दिखाई पड़ता। सोये सोये कैसे पता चल सकता है कि जीवन क्या है ? बेहोश, मूर्छित, सोये हुए, लेकिन हमने एक तरकीब ईजाद की है, इसलिए इस नींद को मिटाना मुश्किल हो रहा है और वह यह है कि हम इसको नींद कहते ही नहीं, हम इसको जागना कहते हैं। सुबह जब हम आँख खोल लेते हैं तो वह जो आदमी हमारे भीतर रात भर सोया रहा था, हम सोचते है, जाग गया। जागता नहीं है, सिर्फ रात शरीर थक गया था और आँख बन्द हो गई थी। भीतर का आदमी वही है, जो रात सोया था। उसमें कोई फर्क नहीं पड़ता है। सुबह जब आँख खुलती है तो सिर्फ शरीर ताजा हो गया लेकिन भीतर का आदमी वही है जो रात सोया था। आप सोये हुये वही होते हैं, जो जागे हुए होते हैं। आपके भीतर, आपकी चेतना में नींद में और जागने में कोई भी फर्क नहीं है। आप तो सोये ही रहते हैं। लेकिन आँख के खुली और बन्द होने से, शरीर के थक के टूट के गिर जाने से, यह भ्रांति पैदा होती है कि रात हम सोये थे और दिन हम जाग गये हैं। हम चौबीस घंटे सोये हैं।

बुद्ध को जब ज्ञान हुआ तो किसी ने उनको पूछा कि आपको मिला क्या है ? तो उन्होंने कहा : जागना मिला है। और उनसे पूछा कि आपने खोया क्या है ? तो उन्होंने कहा : सोना खोया है। कृष्ण ने तो गीता में कहा है कि जब सब सोते हैं, तब भी वो जो योगा-स्थल है, जागता है। लेकिन उल्टा, जो योगास्थ नहीं है, जब हम समझते हैं कि वो जाग रहा है, तब भी सोता है। जो योगास्थ है, वो जब हम सोचते हैं सो रहा है, तब भी जागता है। बुद्ध के पास आनंद कोई चालीस

साल तक रहा। आनंद जब सन्यासी हुआ, दीक्षित हुआ, वह बुद्ध का बड़ा चचेरा भाई था। लेकिन दीक्षा लेने के बाद तो बड़ा भाई नहीं रह जायगा। जब तक दीक्षा नहीं ली थी तब तक वह बुद्ध का बड़ा भाई था। उसने बुद्ध से कहा कि मैं दीक्षा लेने आया हूं। तुम्हारे चरणों में, ऐसे तुम मेरे छोटे भाई हो तो दीक्षा लेने के पहले, बड़े भाई की हैसियत से मैं कुछ वचन तुमसे ले लेना चाहता हूं। क्योंकि दीक्षा ले लेने के बाद तो फिर मैं तुमसे नहीं कुछ ले सकूंगा वचन, फिर तो तुम्हारे आदेश मुझे मानना पड़ेंगे लेकिन, अभी मैं तुम्हें दो तीन आदेश देता हूं। पहला आदेश यह है कि मैं सदा तुम्हारे साथ रहूंगा। दीक्षा के बाद तुम मुझे कहीं और न भेज सकोगे। तुम्हारे साथ साथ ही सोऊंगा। उसमें एक उसने यह भी वचन लिया था तो चालीस साल बुद्ध के साथ ही सोता था। उसे बड़ी हैरानी हुई कि वह रात बुद्ध कैसा सोते हैं, जहां पैर रखते हैं, जहां हाथ रखते हैं, रात भर पैर वहीं रहता है, हाथ वहीं रहते हैं। सुबह वह उसी करवट उठते हैं, जिस करवट रात सोते हैं। तो उसने कुछ दिनों देखने के बाद बुद्ध से कहा कि क्या सोने में भी हिसाब रखते हैं? हाथ नहीं हिलता, करवट नहीं बदलती सोते हैं कि लेटे रहते हैं? बुद्ध ने कहा: सोता तो हूं लेकिन, शरीर ही सोता है। अब मेरे सोने का कोई उपाय नहीं। अब मैं जाग गया हूं। तो भीतर तो मैं जागा ही रहता हूं। भीतर तो सोने का अब कोई उपाय नहीं रहा। हम बाहर के जागने और सोने को ही सब समझ रहे हैं, भीतर का सोना और जागना हमारे ख्याल में नहीं है। भीतर हम सोये ही हुए हैं। आनंद ने कहा : मैं कुछ समझा नहीं, यह भीतर का सोना क्या बात है? दूसरे दिन सुबह जब सारे लोग बैठे हैं बुद्ध को सुनने, एक आदमी सामने ही बैठा है, वह अपने पैर के अंगूठे को हिला रहा है। तो बुद्ध ने अपना वचन बंद करके कहा कि मित्र यह तुम क्या कर रहे हो, पैर का अंगूठा क्यों हिला रहे हो? उस आदमी ने जैसे ही सुना पैर का अंगूठा बन्द कर लिया और उसने कहा कि आप अपनी बात शुरू करिये। बुद्ध ने कहा। मैं बात बाद में शुरू करूं, पहले यह पता चले, तुम पैर का अंगूठा क्यों हिलाते थे? उसने कहा : मुझे पता ही नहीं था। तो बुद्ध ने कहा : तुम्हारा अंगूठा और तुम्हें पता न हो, जागे हुए हो या सोये हुए हो। आनन्द से कहा : देखो यह आदमी जागा हुआ मालूम पड़ रहा है लेकिन सोया हुआ है, यह कहता है, मेरा अंगूठा हिल रहा था और मुझे पता नहीं क्यों हिल रहा था। मैं हिला रहा था यह भी मुझे पता नहीं। जब आपने क्रोध किया है, तब आप जागे हुए होते हैं? अगर जागे हुए होते तो आप क्रोध करते? लेकिन क्रोध के बाद हम खुद ही कहते हैं कि पता नहीं कैसे हो गया! क्रोध के बाद हम कहते हैं, मेरे बावजूद हो गया है। मैं तो करना ही नहीं—चाहता था। हजारों हत्यारों ने यह गवाही दी है अदालतों में कि हम नहीं करना चाहते थे, हो गयी है। लेकिन इससे क्या मतलब होता है। पहले तो मजिस्ट्रेट इसे मानने को राजी नहीं थे। क्योंकि मनुष्य के संबंध में हमारा ज्ञान बहुत कम है। लेकिन मन की जितनी समझ बढ़ी है, अब यह बात धोखे की नहीं मालूम पड़ती है। अगर कोई हत्यारा खूनी यह कहता है कि मुझे पता ही नहीं है, मैंने मारा ही नहीं है, यह मरने की घटना कैसे घट गयी, यह मैं कुछ भी नहीं कह सकता, मैं जिम्मेदार ही नहीं हूं। तो अब हम मन को जो ज्यादा गहरा समझ पा सकते हैं, वह इस बात को मानने को भी राजी हो सकते हैं कि वह झूठ नहीं बोल रहा है। जब क्रोध में ही आप नहीं रह जाते तो हत्या करने में आप कहाँ रह जायेंगे : नींद में हत्यायें हो रही हैं। नींद में क्रोध हो रहा है, नींद में प्रेम हो रहा है। और अगर हम बहुत बारीक देखें तो नींद में हम रास्तों पर चल रहे हैं, दुकानों पर काम कर रहे हैं, दफ्तरों में बैठे हुए हैं। यह सारा का सारा जैसे सोम्नाबुलीस्ट होता है कोई, कुछ लोग होते हैं जो रात सपने में उठकर कुछ काम करते हैं। एक यह बीमारी है।

न्यूयार्क में एक आदमी था, वह अपनी छत पर से कूंद जाता है नींद में। फासला लम्बा था, कोई नौ फीट का था। जागने पर वह आदमी छः फीट नहीं कूंद सकता। और चालीस मंजिल ऊंचे मकान पर से तो कूंद ही नहीं सकता, दूसरे के मकान पर, बीच में खड्डा

है इतना बड़ा । यह गांव में खबर फैल गयी । तो एक रात वहाँ कुछ लोग देखने को इकट्ठे हो गये । कोई एक बजे रात वह आदमी नींद में अपनी छत पर पहुंच गया और उसने छलाँग लगायी । पहले दिन तो लोग देखके दंग रह गये, वह छलांग लगाकर उस तरफ चला गया । वह वापिस छलांग लगाकर जब आ रहा था, तब लोगों ने आवाज कर दी, तब उसकी नींद टूट गयी । वही नींद बाहर की वो टूट गयी । आँख खुल गई, उसने देखा मैं यह क्या कर रहा हूं । वह वहीं गिर पड़ा और समाप्त हो गया । सैकड़ों लोग हैं ऐसे, आपके गाँव में भी दो चार लोग मिल सकते हैं, जो रात सोते में कुछ काम करते हैं । मेडमक्यूरी ने जो अविष्कार किया । वह नींद में किया । रात सोते में उठकर कागज पर उत्तर लिखा, जिसको वह जागते में कई बार कर चुकी थी और नहीं आया था । सुबह वह हैरान हो गयी । जिसको उससे नोवल प्राईज मिली, वह उसको नहीं मिलनी चाहिये, नींद को मिलनी चाहिए । सुबह उठके उसको खुद ही भरोसा न होता था कि यह किसने लिखा लेकिन हस्ताक्षर उसी के थे और रात उसके कमरे में कोई था नहीं । और वही उसकी खोज कर रही थी । नींद में, रात में लोग उठके भी कुछ करते हैं और दिन में तो हम सारे लोग उठके कर रहे हैं । सुबह उठते हैं, वह नींद जिसको हमने रात में नींद समझा था टूट जाती है । वह नींद जो धर्म की दृष्टि से नींद है, जारी रहती है । दो तलों पर हमारी नींद है । एक शरीर के तल पर और एक भीतरी आध्यात्मिक तल पर । वहां आध्यात्म के तल पर तो मूर्छा जारी रहती है, शरीर के तल पर नींद टूट जाती है । इसलिये तो इस दुनिया में इतने झगड़े हैं । ये सोये हुए आदमियों के झगड़े हैं । इतने युद्ध हैं, ये सोये हुए आदमियों के युद्ध हैं । इतना वैमनस्य है. इतनी ईर्ष्या है, इतनी हिंसा है, ये सोये हुए आदमी के हैं । अगर आदमी भीतर से नहीं जगाया जा सकता तो अब बहुत खतरा है । क्योंकि सोये हुये आदमी ने नींद में एटम बम तक ईजाद कर लिया है । अब कोई एक सोया हुआ आदमी सारे सोये हुए आदमियों को समाप्त कर सकता है । अब खतरा बहुत है । तो पृथ्वी पर पहले तो एक दो आदमी भी जागते रहे तो चला । अब तो पूरी मनुष्यता का बहुत बड़ा हिस्सा जागेगा तो मनुष्यता बच सकती है अन्यथा नहीं बच सकती । इसलिये धर्म जितना आज जरूरी है, इतना जरूरी कभी भी नहीं था । सारी मनुष्यता समाप्त हो सकती है । कोई भी न बचे ऐसा हो सकता है । आईन्स्टीन से मरने के पहले कोई पूछ रहा था कि तीसरे महायुद्ध में क्या होगा ? तो आईन्सटीन ने कहा : तीसरे के बाबत कुछ भी कहना असंभव है । लेकिन, अगर चौथे के संबंध में कुछ जानना चाहो तो मैं कह सकता हूं । उस आदमी ने कहा कि जब तीसरे के बाबत भी आप नहीं बता सकते तो चौथे के बाबत क्या बतायेंगे ? आईन्सटीन ने कहा : एक बात पक्की कह सकता हूं कि चौथा महायुद्ध कभी नहीं होगा । क्योंकि आदमी चाहिये न युद्ध के लिये ? चौथे के लिये कोई बचने वाला नहीं है । इतना विराट निद्रित आदमी ने इन्तजाम कर रखा है । कोई पचास हजार अणु बम सारी पृथ्वी पर इकट्ठे कर रखे हैं । यह इस पृथ्वी को मिटाने के लिये, जरूरत से सात गुने ज्यादा हैं । जितने आदमी हैं, इनको हमें अगर एक-एक को सात-सात बार मरना हो तो हम मार सकते हैं । हालाँकि एक ही दफे में आदमी मर जाता है, लेकिन इन्तजाम पक्का किया है कि कोई बच जाय तो दुबारा मारें, बच जायें, तिबारा मारें सात-सात बार एक-एक आदमी को हम मार सकते हैं । और यह पृथ्वी बहुत छोटी है । इस तरह की सात पृथ्वी हों तो इस सबको हम भस्मीभूत कर सकते हैं । सोये हुए आदमी ने नींद में भी बहुत कुछ उपद्रव खड़े कर लिये हैं । और सोया हुआ आदमी कुछ भी कर सकता है क्योंकि वह रिसपान्सिबल नहीं है । वो उत्तरदायी नहीं है । जब वह कर चुकेगा, वह कहेगा कि मुझे क्या पता यह क्या हुआ ! हिटलर से आप पूछ सकते हैं कि तुमने यह क्या किया ? पांच करोड़ अंदाजन आदमी हिटलर की वजह से मरे । लेकिन हिटलर को आखिरी वक्त तक यह ख्याल नहीं है कि वह जिम्मेदार है । और जब बर्लिन पर बम्ब गिरने लगे और हिटलर अपने छिपने के के स्थान में था, तब भी वह रेडियो पर भाषण देता रहा कि हम जीत रहे हैं, कौन कहता है कि हम हार

रहे हैं ? अब लोग कहते हैं कि हिटलर पागल था । अब ! उसके दिमाग में खराबी थी । मैं नहीं कहता । पागल कहना ठीक नहीं है । मैं इतना ही कहता हूं कि वह गहरी नींद में सोया हुआ आदमी था । और हम भी गहरी नींद में उसी तरह के सोये हुए आदमी हैं । हम सब कम ज्यादा मात्रा में सोये हुए लोग हैं । नहीं तो हिटलर इतने लोगों को इतने बड़े उपद्रव में संलग्न न कर पाता । एक पागल आदमी एक बुद्धिमान से बुद्धिमान मुल्क को इस तरह पागल कर सकता है तो इसका मतलब क्या होता है ? हिटलर अगर अकेला पागल है तो पूरे जर्मनी का क्या मामला है ? पूरा जर्मनी भी पागल है । और अगर पूरा जर्मनी पागल है तो सारी दुनिया में कोई जर्मनी से बेहतर लोग नहीं है । वो सब एक जैसे लोग हैं । माओ चीन को पागल कर सकता है, कोई दूसरा हिंदुस्तान को पागल कर सकता, है, कोई स्टेलिन रूस को पागल कर सकता है, कोई निक्सन अमरीका को पागलकर सकता है । तो बाकी सारी भीड़ भी सोये हुए लोगों की भीड़ है और सोये हुए नेता हैं । सोई हुई भीड़ है । सोये हुए आदमियों के हाथ में बड़ी ताकतें हैं और वे जिम्मेवार नहीं हैं । मैं आपसे कहना चाहूंगा, उनकी जिम्मेवारी दो तरह से कम हैं । वे दूसरे के प्रति जिम्मेवार नहीं है । यह तो खतरनाक है ही, वो अपने प्रति भी जिम्मेवार नहीं है जो ज्यादा खतरनाक है । एक जिंदगी हमें मिलती है, उसे हम ऐसे गवां देते हैं कि उसका हम कभी उपभोग नहीं करते जैसे एक बीज मिल जाय हमें और हम जिंदगी भर रखें उसे सड़ा दें तो हमें कोई पागल कहेगा, कहेगा, कैसे हो तुम । इस बीज से बहुत बड़ा वृक्ष पैदा होता, बहुत फूल पैदा होता, बहुत सुगंध पैदा होती, बहुत छाया बनती, तुम इस बीज को रखे क्यों रहे ? हम भी अपनी जिंदगी के बीज को रखे रखे मर जाते हैं । उस बीज से बहुत कुछ संभव है । उस बीज से एक कृष्ण पैदा हो सकता है कि जो बीज आपके पास है, उससे एक राम पैदा हो सकता है । वह जो बीज मेरे पास है, उससे एक महावीर, एक बुद्ध पैदा हो सकते हैं, एक मोहम्मद एक क्राईस्ट पैदा हो सकता है । हम सबके पास वह बीज है, जिनमें अनंत फूल लग सकते हैं । सौन्दर्य के, सत्य के, आनन्द के । नहीं कोई कबीर ने ठेका नहीं लिया कि उनको आकाश में बादल घिरे हुए दिखाई पड़े, हमारे भीतर भी आकाश में बादल घिर सकते हैं, जिनसे अमृत की वर्षा हो । नहीं, मीरा ने कोई ठेका नहीं लिया कि प्रभु के घुंघरू बाँध के वही नाचे, हम भी नाच सकते हैं । नहीं, जीसस का अकेले का ठेका नहीं है कि वे ही जान पायें कि जो भीतर है; वह नहीं मरना है । हम भी जान सकते हैं । लेकिन, हम सोये हुए कैसे जानेंगे ? जानने के लिये जागना पहली शर्त है । और जागने के लिये यह जानना पहले जरूरी है क्या हम सोये हुये हैं और सपने देख रहे हैं ? क्या हम सपने की स्थिति में जी रहे हैं ? अगर यह हमें ख्याल ठीक से गहरे बैठ जाय कि हमारी सारी की सारी अब तक की जिंदगी एक सपने की जिंदगी है । जिसमें कल मौत आयगी और सब सपने ताश के पत्तों की तरह गिर जायेंगे, पानी के बुलबुले की तरह फूट जायेंगे, रेत के बनाये हुए मकानों की तरह ढह जायेंगे और मौत सब उजाड़के एकदम अचानक हमें किसी और दुनिया में प्रवेश करा देगी । हमसे पहले कितने लोग बिदा हो गए इस जमीन से ! जहां आप बैठे हैं, उस जगह पर न मालूम कितने लोगों की कब्र बन चुकी होगी ! ऐसी कोई जमीन का इंच भी टुकड़ा नहीं है, जहां कब्र न बन गयी हो । जमीन पर मिट्टी का एक कण नहीं है, जो किसी आदमी के शरीर का हिस्सा न रहा हो । इस पृथ्वी पर कितने लोग जिये और मरे, उनके सपने सब कहाँ हैं ? उनका यश कहां है ? उनकी महत्वाकांक्षायें कहाँ हैं ? उनके बनाये हुए महल कहां हैं ? उनके अहंकार के बनाये हुए बड़े-बड़े विस्तार के पर्वत कहां है ? कहां है वे सब ! उनकी सारी कथा खो गयी । लेकिन हम उस पर आंख उठा के न देखेंगे, क्योंकि उससे हमें भी खतरा है । अगर हमें यह दिखाई पड़ जाय कि जहाँ हम खड़े हैं, वहां कब्र है तो हमें बहुत देर न लगेगी, अपनी कब्र भी हमें दिखाई पड़ जायगी । अगर हमें यह दिखाई पड़ जाय कि पहले के बनाये हुए महल सब कागज के सिद्ध हुए तो हम जिस महल को बना रहे हैं, उस महल को हम पत्थर का मान सकेंगे । अगर हमें पता चल जाय कि

सारी महत्वाकांक्षायें सपने की भांति खो गयीं, न महत्वाकांक्षी है, न महत्वकांक्षायें हैं, उनके बनाये हुए साम्राज्य हैं, वे सब खो गये, जैसे सपने खो जाते हैं। तो हमारे अपने राज्यों का क्या होगा ? हमारे अहकार, हमारी महत्वाकांक्षा का क्या होगा ? धार्मिक आदमी इस क्राइसीस इस संकट को देख पाता है कि जिंदगी कैसे संकट में है। बोझ मिटता है, ऐसे ही नष्ट हो जाता है। नहीं टूट पाता, नहीं वृक्ष बन पाता है। वीणा मिल जाती है लेकिन, उसके तारों पर हम कभी अपनी अंगुलियां नहीं बजा पाते।। उससे कभी संगीत पैदा नहीं हो पाता है। वीणा को ढोते-ढोते मर जाते हैं। और ध्यान रहे, जो कंधे पर वीणा को लेता है और बजाता नहीं, उसकी वीणा सिर्फ सूली सिद्ध होगी, क्रास सिद्ध होगी और कुछ नहीं होगी ! जिन मित्रों को इस स्वप्न को तोड़कर जीवन वीणा का संगीत सुनना होवे सुबह ध्यान साधना में शामिल हों। सुबह की साधना के संबंध में दो तीन बातें आपसे कह दूं। पहली बात सुबह ध्यान में जो लोग आयें वे घर से बिना कुछ खाये पिये आयें, स्नान करके आयें। चुप घर से चलें और यहां भी चुपचाप आकर बैठ जायें। साढ़े सात बजे ठीक साधना शुरू होगी। आप दस मिनट पहले पहुंच जायें क्योंकि दरवाजा ठीक साढ़े सात बजे बंद कर देने का ख्याल है। मेरी बातों को इतनी शांति और प्रेम से सुना इससे अनुगृहीत हूं, अंत में सबके भीतर बैठे प्रभु को प्रणाम करता हूं। मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

●●●

मैं–और शून्य सत्ता

"मैं" तभी तक है, जब तक "मेरा" है। वह "मेरा" का ही पुंजीभूत रूप है। जहां "मेरा" कुछ नहीं, है वहीं "मैं" भी खो जाता है।

और जहां "मैं" नहीं है, वहां वह है, जो है।

वह मैं–शून्य सत्ता ही परमात्मा है।

एक सुदर्शन नाम का ब्राह्मण था। शांत मन में, ध्यान में उसे दिखा कि मेरा तो कुछ भी नहीं है। उस दिन से उसके स्वामित्व भाव का विसर्जन हो गया। यह बात उसने किसी को बताई नहीं। लेकिन, उससे जो भी, जो कुछ मांगता था, वह उसे दे देता था। एक दिन उसे गांव के बाहर जाना था, सो उसने अपनी चित्त-स्थिति पत्नि को समझा दी और कहा : "जो भी जो कुछ मांगे दे देना। मैं, मेरा कुछ भी नहीं है।" दिन भर तो कोई नहीं आया लेकिन रात्रि में एक अपरिचित अतिथि आ पहुंचा। स्नान-भोजन के बाद उसने सुदर्शन की स्त्री को कहा : "किवाड़ बंद कर दो और आओ, मेरी सेवा करो।" स्त्री ने वैसा ही किया। वह उसके पांव दबाने लगी। उसी समय सुदर्शन ने आकर बाहर से आवाज दी। उसकी स्त्री पशोपेश में पड़ी : "अतिथि सेवा करूं या किवाड़ खोलूं ?" अतिथि ने कहा : "अपने पति से पूछ लो।" पति ने कहा : "तुम अतिथि सेवा कर लो। मैं बाहर बैठा हूं।" वह बाहर ही बैठ गया। आधी रात बीत गई तब उसकी स्त्री ने द्वार खोले। लेकिन लौटकर देखा तो अतिथि तो नहीं था। उसकी जगह एक अपूर्व प्रकाश और सुगंध जरूर घर में व्याप्त थी।। उसने अपने पति से पूछा "अरे ! अतिथि, कहां गये ?" सुदर्शन बोला : "वे मेरे हृदय में आ गये हैं। मेरी परीक्षा पूरी हो गई है।"

**

जिनके सिर पर खतरों का ताज है

शिव, जबलपुर

मैंने सोचा भी नहीं था कि अभी लुधियाना या कहीं की भी यात्रा के सम्बन्ध में मुझे कुछ लिखना पड़ सकता है। पर सच ही, सोचा विचारा होता कब है? इस बात का बोध तो पहले भी था, पर अभी अगस्त माह की 'लुधियाना यात्रा' व 'आजोल शिविर' में यह बोध और गहराया। स्मरण करता हूं तो लगता है कि आजोल में जो सब हुआ और मैंने देखा वह सच था या कोई सपना? मैं यहीं था जमीन पर या किसी स्वर्ग में? खैर आजोल की बात फिर करूंगा। अभी तो आज आपको अपने साथ लुधियाना ले चलता हूं।

लुधियाना मैं कपिल भाई के यहां १८ अगस्त की संध्या ७ बजे पहुंच गया था। आचार्य श्री २० की प्रातः ५ बजे पहुंच रहे हैं। २० से २३ तक उनके भाषण होने हैं वहां।

मेरे पहुंचने पर श्री कपिल ने बताया "इस बार यहां भी आचार्य श्री की मीटिंगें डिस्टर्ब किये जाने की संभावना है। असल में पिछले दिनों अमृतसर में हुई गड़बड़ से शह पाकर ही यहां भी काले झण्डे आदि दिखाने की कुछ लोगों की तैयारी है।" मैं श्री कपिल के चेहरे पर एक दायित्वपूर्ण परेशानी स्पष्ट देख रहा हूं वे कहीं ए० आई० जी० श्री गिल से सम्पर्क साध रहे हैं तो कहीं अन्य पुलिस अधिकारियों से। इमरजेन्सी लाइट आदि की उचित व्यवस्था उन्होने की। उनके योग्य प्रबंध की मैं प्रशंसा करता हूं।

लुधियाना वासियों की बहु-प्रतीक्षित आखिर २० अगस्त की सुबह आई। सदा की भाँति बड़ी संख्या में प्रेमी जन आचार्य श्री को लेने स्टेशन पहुंचे। फिर पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रातः ध्यान के प्रयोग, संध्या प्रवचन, अपरान्ह व्यक्तिगत मुलाकातें व ध्यान संबंधी प्रश्नोत्तर और कुछ कालेजों में भाषण आदि सभी बहुत अच्छे ढंग से सम्पन्न हुए। संध्या भाषण का विषय था—समाजवाद से सावधान। लुधियाना में अपार जनसमूह उन्हें रुचि से सुनता था, यह सब लिखने की कोई जरूरत मैं नहीं समझता।

हम बड़े सन्तुष्ट थे कि जैसी खबरें थी कि आचार्य श्री की मीटिंग डिस्टर्ब की जायेगी और उन्हें काले झंडे दिखाए जायंगे, वैसा कुछ भी नहीं हुआ। किन्तु २३ अगस्त की संध्या, आचार्य श्री की इस यात्रा का अंतिम भाषण, सारा मैदान खचाखच भरा है। आचार्य श्री प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं। (प्रश्न क्या थे और आचार्य श्री ने क्या उत्तर दिये, वह सब संदर्भ सहित हम शीघ्र प्रकाशित करेंगे) वे ४५ मिनिट तक बोल चुके हैं कि सहसा कुछ नासमझों ने शोर गुल करना शुरू किया। आचार्य श्री ने भाषण रोककर कहा—"पूरी बात सुन लें, पूरी बात सुन लें।" मगर शोर बढ़ता ही गया। आचार्य श्री ने कहा—"आप अपनी बात लिखकर दे दें, मैं बात कर लेता हूं।" वे क्षण भर को रूके। आचार्य श्री ने बोलना पुनः आरंभ किया। वे नासमझ फिर चिल्लाये और मंच की ओर बढ़े। पीछे से कई लोग मंच पर चढ़ भी आये। उनमें से एक सज्जन जनता से यह पूछने को बड़े आतुर थे कि जनता आचार्य जी की बातें सुनना चाहती है या नहीं? (उनका कहना था कि आचार्य श्री हिन्दू धर्म के खिलाफ बोल रहे है।) अतः उन्हें माइक के सामने आने दिया गया। जैसे ही वे माइक से बोले कि "भाइयो और बहनो" वैसे ही सारे जन समूह ने खड़े होकर गर्जना की—"तुम चले जाओ,

तुम चले जाओ, हमें आचार्य श्री को सुनने दो।" उनकी हालत बड़ी लज्जास्पद हो गई क्योंकि जनता की तालियों और शोर ने उन्हें आगे एक शब्द भी न बोलने दिया। मगर उनकी नासमझी ने उलटे और जोर पकड़ा और वे आचार्य श्री की ओर बढ़ना चाहे। क्रोध में उनकी हालत उस समय देखने जैसी थी। उनकी बचकानी हरकत पर आचार्य श्री की मुस्कान और उनके अन्य साथी कोई मंच पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे, किसी ने पीछे की कनात काट दी। इसी बीच कुछ क्षणों के लिए माइक की व्यवस्था भी गड़बड़ हो गई। सारा जनसमूह (स्त्री पुरुष सभी) उठ खड़ा हुआ और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगा "मारो मारो इन बेवकूफों को सभा के बाहर भगाओ।" मगर उनकी बेशर्मी की सीमा न थी। वे नासमझ न होते तो क्या यह भी कोई पूछने की बात थी कि जनता आचार्य रजनीश को सुनना चाहती है या नहीं? क्योंकि ४० हजार जनता आई ही थी आचार्य रजनीश को सुनने। खैर तो उनमें से एक जो उन दकियानूसों के लीडर से लगते थे महिलाओं की भीड़ में घुसते चले जाने लगे। कुछ रजनीश प्रेमियों ने उन्हें हाथ जोड़ जोड़कर विनती की, पुलिस भी सख्ती करने के बजाय उन्हें समझाना ही अधिक चाहती थी मगर वह एक अजीब उन्माद और पागलपन की हालत में नजर आते थे। उन्हें यह भी शायद नहीं दिखलाई पड़ता था कि जनता क्या चाहती है या शायद वे देखना नहीं चाहते थे और इतनी सारी जनता की भावनाओं के खिलाफ वे बढ़ते चले जाना चाहते थे। मजबूरन लोगों ने ताकत लगाकर उन्हें पीछे ढकेला और तब तक ढकेला जब तक उन्हें मैदान के बाहर न कर दिया। कुछ रजनीश प्रेमियों के—नहीं नहीं, चिल्लाते रहने के बावजूद जनता ने उन पर डण्डे भी बरसाये। किन्तु अब तक सारी सभा में अव्यवस्था तो हो ही गई। सारे लोग उठ खड़े हो गये कोई उन्हें मार भगाने को चिल्लाता तो कोई आचार्य श्री रजनीश जिन्दाबाद के नारे लगाता। एक महिला दौड़कर मंच पर चढ़ आई और माइक से आचार्य रजनीश जिन्दाबाद के नारों से वातावरण गूंज दिया। इन सारी अव्यवस्थाओं के साथ ही गाड़ी का समय भी हो रहा था। ११ बजे की ट्रेन से आचार्य श्री को दिल्ली के लिए प्रस्थान करना था। अतः प्रेमियों ने आचार्य श्री को चलने को कहा जिसे कि उन्होंने मान लिया और चल दिये। उस समय का दृश्य देखते ही बनता था। आचार्य श्री के प्रति प्रेम व श्रद्धा से भरी जनता उनसे अंतिम मिलन के लिए उमड़ पड़ी। आचार्य श्री एक एक कदम आगे बढ़ा पाते थे। साथ ही सारा मैदान आचार्य रजनीश जिन्दाबाद के नारे लगाता हुआ साथ साथ बढ़ रहा था। इसी में कोई उनके चरणों में लोट जाता, तो वे रूक जाते कोई उनको छूतो से लग जाता तो वे रूक जाते।

आचार्य श्री के २०-२५ मिनिट पीछे मैं घर गया। रास्ते में मैंने देखा कि हर चौराहे पर, हर सड़क पर, यहां तक कि हर दो तीन सौ गज पर १००—५० लोग झुंड बनाए खड़े हैं, और मीटिंग और आचार्य रजनीश की ही चर्चा कर रहे हैं। कई झुंडों ने तो जब हमारी कार पास से गुजरती तो शायद कार को पहचान लिए और आचार्य रजनीश जिन्दाबाद के नारे लगाये। मेरे मन में क्षण भर को ख्याल आया कि जिन आचार्य रजनीश को इतनी जनता प्रेम करती है और जिन्हें सुनने को इतनी दीवानी है, उनका बोलना क्या ये चंद स्वार्थी लोग रोक सकते हैं जिन्हें सामान्य शिष्टता तक नहीं आती? जो एक एक व्यक्ति के हित की बात कहने के लिए अपने सिर पर खतरों और जोखिमों का ताज लिए गाँव गाँव घूम रहा है, उसे मुर्दा लकीरों पर चलने वाले चंद मतलब परस्त धर्म के व्यापारी और आउट डेटेड लोग रोक पायेंगे? क्या इस बहती हुई युग धारा को कंकड़ पत्थर रोक पायेंगे या वे खुद ही धारा में बह जायेंगे? इन सब बातों का उत्तर मुझे नहीं देना है। इनका उत्तर तो बहुत स्पष्ट और साफ है। जिसे कि वे स्वयं और शीघ्र अनुभव करेंगे। इस धारा के साथ बह जाने का एक उदाहारण अवश्य देना चाहूंगा।

जब हम रेलवे स्टेशन पहुंचे तो पाया कि कोई २५-३० लोग आचार्य श्री का विरोध करने को पहले ही से वहां पहुंच चुके हैं। आचार्य श्री कार से बाहर उतरे

तो सदा की भांति हाथ जोड़े प्रणाम की मुद्रा में, दायें बायें सभी मिलने वालों को जुड़े हुए हाथों व मुस्कानों से उत्तर देते हुए प्लेट फार्म की ओर चले। तभी आचार्य श्री की दाईं ओर खड़े उन लोगों ने मुर्दाबाद के नारे लगाये। आचार्य श्री ने हंसकर उन्हें भी प्रणाम किया। यही मैंने एक अजीब बात देखी जिसे कि विशेष रूप से कहना चाहता हूं। मैंने देखा कि एक सज्जन के होंठों से मुर्दाबाद शब्द धीमे और यंत्रवत निकलने लगे और प्रत्यक्षतः वे आचार्य श्री के प्रति भाव पूर्ण हो उठे और उन्होंने हाथ जोड़ लिए हैं। आचार्य श्री भी अब अपने डिब्बे में चढे और दरवाजे पर खड़े हुए तो उनके प्रेमियों की इतनी भीड़ थी कि लोग जो फूल मालाएँ लाये थे वे बड़ी मुश्किल से भीड़ को चीरकर आचार्य श्री तक पहुंच पाए और उन्हें अपनी मालाएँ पहनाई। आचार्य श्री के गले में जैसे ही माला पड़ीं, प्रेमियों ने तालियों की गड़गड़ाहट से अपना प्रेम व सम्मान प्रगट किया जो कि परिस्थिति विशेष के कारण बेहद आर्कषक व रोमांचकारी लगा। परिस्थिति विशेष से मेरा मतलब प्रमुखतः प्रेमियों की भीड़ से ही है। अगर आसानी से माला पहना दिया जाना संभव होता तो शायद दृश्य उतना रोमांच-कारी न होता और प्रेमियों को उतना आनंद न आता। वह थोड़ी ही दूर में गुंथ गई भीड़, वह मालाओं से भरे ऊपर उठे हाथ, वह उनका भीड़ को चीरते हुए एक-एक इंच आगे बढ़ पाना, वह मालाओं से भरे हाथों का इतनी देर में आचार्य श्री के पास पहुंच पाना इस सब के कारण माला पहनाए जाने का क्षण इतना अदभुत व सुन्दर हो गया था कि उसका चित्र खींच पाना असंभव है। तभी वे फिर मुर्दाबाद के नारे लगाने शुरू किये। इधर आचार्य प्रेमियों ने कई मिनिट तक कोई प्रतिक्रिया नहीं की। पर जब उनके नारे चुप ही न होते तो इधर भी आचार्य रजनीश जिन्दाबाद के गगन भेदी नारे लगने शुरू हुए। इधर एक ५०-५५ साल की वृद्धा जिसने कि आचार्य श्री को पहली बार सुना था, वह डिब्बे के दरवाजे में आचार्य श्री के बगल से खड़ी होकर जिन्दाबाद के नारे और बुलन्द करवाये। उस समय का दृश्य बड़ा अद्भुत था। पानी भी बरस रहा था। आचार्य प्रेमी भींगते हुए नारे लगाते, उधर छाया में खड़े लोग नारे लगाते मुर्दाबाद के और आचार्य श्री मुसकराते व मुर्दाबाद बोलने वालों पर अपनी मालाओं से निकाल निकालकर फूल बरसाते·····फूल बरसाते और मुसकराते·····मुसकराते और फूल बरसाते। अंततः मुर्दाबाद बोलने वाले थक गये। या उनमें से अधिक लोग अपने नेताका साथ देने से इन्कार कर दिये जो भी हो मुर्दाबाद बन्द हो गया और जिन्दाबाद चलता ही रहा। चलता ही रहा और ट्रेन चल पड़ी। आचार्य श्री ने हाथ हिला हिला कर लोगों पर प्रेम वर्षा की।

लुधियाना की चर्चा समाप्त हो गई लेकिन समाप्त नहीं हुई। अभी पंजाब के कुछ अखबार मुझे देखने को मिले हैं। उनसे पता चला है कि उन सनातन धर्मियों व जनसंघियों ने पंजाब सरकार से मांग की है कि वह आचार्य रजनीश के पंजाब प्रवेश पर रोक लगाये। उन्होंने यह भी चाहा है कि आचार्य रजनीश लुधियाना आकर अपने वक्तव्यों के लिए क्षमा याचना करें। मैं नहीं कह सकता पंजाब सरकार का क्या रूख होगा? मगर मैं सोचता हूं ऐसे में आचार्य प्रेमियों का क्या कर्त्तव्य होगा? मैं जानता हूं कि अभी तक आचार्य प्रेमी प्रति क्रियावादी नहीं हुए हैं, उदार ही हैं। लेकिन इस भय से कि एक और सम्प्रदाय खड़ा न हो जाये हम कुछ भी हो जाय उसे चुपचाप देखते रहेंगे, और होने देंगे। मुझे तो व्यक्ति-गत रूप से यह ठीक नहीं लगता। सम्प्रदाय बने या कुछ भी बने उसकी जिम्मेंदारी हम अकेले पर नहीं है। हम भी इकट्ठे होना चाहते हैं। यहीं आचार्य श्री के किसी भाषण की एक दो बातें स्मरण आ जाती हैं। उन्हें आपको भी स्मरण दिलाकर अपनी बात समाप्त करता हूं। कहीं कहा है उन्होंने कि "बुरे लोग संगठित हैं, अच्छे लोग संगठित नहीं हैं। जब तक अच्छे लोग भी संगठित नहीं होते, तब तक दुनिया में अच्छे लोगों का जीना असंभव है।" दूसरी बात कि "अच्छे लोग बुरे लोगों के लिए जगह खाली कर देते हैं कि आओ हम अच्छे लोग हैं इसलिए हम भागे जाते हैं।"

●●●

आचार्य श्री का प्रकाशित साहित्य

		हिन्दी	गुजराती	मराठी
१	साधना पथ	३।००	३।००	३।००
२.	क्रांति बीज	३।००	२।५०	२।५०
३.	सिंहनाद	१।५०	१।२५	३।००
४.	मिट्टी के दिए	३।००	३।५०	—
५.	पथ के प्रदीप	३।००	३।८०	८।००
६.	संभोग से समाधि की ओर	३।५०	३।५०	—
७	आचार्य रजनीश समन्वय, विश्लेषण, संसिद्धि	७।५०	—	—
८.	मैं कौन हूं ?	२।००	२।००	—
९	नए संकेत	२।००	१।७५	—
१०.	अज्ञात की ओर	२।००	२।००	—
११.	सत्य की खोज	३।००	—	—
१२.	अंतर्यात्रा	३।५०	—	—
१३.	शांति की खोज	२।००	—	—
१४.	सत्य के अज्ञात सागर का आमंत्रण	१।२५	१।५०	—
१५.	सूर्य की ओर उड़ान	१।००	१।००	—
१६.	प्रेम के पंख	०।७५	०।७५	०।७५
१७.	कुछ ज्योतिर्मय क्षण	१।००	०।७५	—
१८.	अमृत कण	०।६०	०।५०	०।५०
१९.	अहिंसा दर्शन	०।५०	०।५०	०।५०
२०.	नई दिशा, नई बात	०।३०	—	—
२१.	सत्य की पहली किरण	६।००	—	—
२२.	प्रभु की पगडंडिया	४।००	—	—
२३.	क्रांति के बीच सबसे बड़ी दीवार	०।३०	—	—
२४.	बिखरे फूल	०।३५	—	—
२५.	जीवन और मृत्यु	—	१।००	—
२६.	नए मनुष्य के जन्म की दिशा	०।७५	०।७५	—
२७	अस्वीकृति में उठा हाथ (भारत, गांधी और मेरी चिंता)	५।००	—	—

प्राप्ति स्थल :

[१] जीवन जागृति केन्द्र, रूम नं. ५३, एम्पायर बिल्डिंग, डा० डी. एन. रोड, बंबई : १

[२] मोतीलाल बनारसी दास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–७।

[३] स्वदेशी वस्तु भंडार, जामनगर।

[४] आर. अंबानी एंड कं०, अपोजिट : जिमखाना, राजकोट।

[५] चंद्रकांत पटैल, आसोपालव, बैंक आफ इंडिया के सामने, रावपुरा, बड़ौदा।

[६] मोतीलाल बनारसी दास, नेपाली खपरा वाराणसी।

[७] मोतीलाल बनारसीदास, अशोक राजपथ, पटना।

[८] भारतीय संस्कृति भवन, माई हीरांगेट जलंधर शहर।

[९] नरसिंह भाई पटैल, सहकारी मुद्रणालय, कोठारी मार्ग, सुरेंद्र नगर।

[१०] सस्तु किताब घर, पथ्थर कुवां, रिलीफ रोड, अहमदाबाद।

[११] बालगोविंद कुबेरदास, गांधी रोड, अहमदाबाद।

[१२] सर्वोदय साहित्य भंडार, महात्मा गांधी मार्ग, इन्दौर—२

[१३] हीराभाई मेहता, पांचघर, ७०, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता : १

[१४] सुषमा साहित्य मंदिर, जवाहरगंज, जबलपुर।

[१५] युनिव्हर्सल बुक सर्विस, सिटी कालेज के सामने, जबलपुर।

[१६] श्री आर. के. पुंगालिया, १०१, टिम्बर मार्केट, पूना–२

[१७] श्री महेन्द्र कुमार मानव, विन्ध्याचल प्रकाशन, छतरपुर (म० प्र०)

[१८] श्री सौभाग्यचंद्र तुरखिया, २ प्रभात सोसाइटी सुरेन्द्र नगर।

वर्षों से हम

अपनी श्रेष्ठतम सेवयें

प्रस्तुत कर रहे हैं

धुम्रपान के अनोखे आनंद के लिय

नंबर

22

छाप बिड़ी

पीजीये.

निर्माता वृजलाल मणीलाल एन्ड कं. गोंदिया.

PLASTICIZERS

For the

Pastics Paint & Perfumery Industries

DOP—Dioctyl Phthalate

DIOP—Di-iso octyl Phthalate

DAP—Dialphanyl Phthalate

610 P—Dialfol 610 Phthalate

DBP—Dibutyl Phthalate

DMP—Dimethyl Phthalate

DEP—Diethyl phthalate

AVAILABLE FROM

Pioneers in manufacture of Phthalate Plasticizers.

INDO-NIPPON CHEMICAL COMPANY LIMITED

Alice Building, 339, D. N. Road, Bombay - 1

GRAM : PLASTICIZER TELEX : INNIPON 011 (2081) PHONE : 251723
252269

तुलसी मानस प्रकाशन की उपलब्धियाँ

१. **पीस आफ माइण्ड** (अंग्रजी में) रु० ३)

२. **क्वायटर मोमेण्ट्स** (अंग्रेजी में) रु० २)

३. **संसार का सार** (मू० रु० ३) (हिन्दी में) आधुनिक खेलों, वैज्ञानिक साधनों, जीवजन्तुओं वनस्पतियों आदि के द्वारा अध्यात्मक शिक्षा देने का विवेचन ।

४. **ज्ञान साधना** (मू० रु० २) लोनावला शिविर में पधारे हुए महापुरुषों के ज्ञानसाधना के प्रति संकेत ।

५. **विज्ञान से ज्ञान** (मू० रु० १) ऐक्सरे इत्यादि आधुनिक उदाहरणों को लेकर अध्यात्मविद्या नव-युवकों तक पहुंचाने का सफल प्रयास ।

६. **वेदान्त नवनीत** (मू० रु० १–५०) सन् १९६४ के अमृतसर के वेदान्त सम्मेलन में पधारे महात्माओं के प्रवचनों का सार ।

७. **बेदान्त का सरल बोध** (मू० रु० १)

८. **आध्यात्मिक पिक्टोरियल** (हिन्दी व अंग्रेजी) (मू० रु० ३) ज्ञान की गंभीर बातों को सूत्र तथा चित्र द्वारा प्रस्तुत ।

९. **मुमुक्षु** आध्यात्मिक उपन्यास (मू० रु० ५)

१०. **मन की शांति** (पद्य) (मू० रु० ४) अंग्रेजी मूल रचना 'पीस आफ माइंड' का हिन्दी अनुवाद ।

११. **हमारी परंपरा** (मू० रु० २)

१२. **आराम सुख शांति और आनन्द** (मूल्य ५० पैसे)

१३. **अपनी ओर इशारा** (मूल्य १ रु०) अपनी ओर आने के सूत्र रूप इशारे ।

१४. **आध्यात्मिक डायरी** (मू० ५ रु०) सचित्र और दार्शनिक सूत्रों से परिपूर्ण दैनंदिनी ।

१५. **व्यवहारिक जीवन और परमात्मा** (मू० रु० १) (प्रेस में)

१६. **श्मशान यात्रा** (मू० ५० पैसे)

१७. **मेरे १०८ गुरु** (मू० रु० ३)

१८. **सजगता** (मू० रु० १) (प्रेस में)

१९. **विरोध–निरोध और स्वबोध** (मू० रु० १) (प्रेस में)

२०. **वेदान्त का वैज्ञानिक मनन** (मू० रु० १)

तुलसी मानस प्रकाशन

अन्तर्गत विभाग, केवल मार्कीटिंग कम्पनी

गुप्ता मिल्स स्टेट, रे रोड,

बम्बई---१०

उत्तम तम्बाखू और कुशल कारीगरों से बनी

शेर और पहलवान छाप बिड़ी

भारत में अग्रणी है

मोहनलाल हरगोविंददास

जबलपुर म० प्र०

मानसेवी संपादक : अरविन्द कुमार । सह-संपादक : आलोक कुमार पाण्डे । व्यवस्थापक : श्री आर. आर. मिश्रा
स्वत्वाधिकारी प्रकाशक : अरविन्द कुमार, कमला नेहरू नगर, जबलपुर ।
मुद्रण : श्रीपाल प्रिंटर्स, राजा गोकलदास महल, से मानसेवी संपादक अरविन्द कुमार के लिये मुद्रित
वर्ष : २ ।। अंक : ५ : ६ ।। १ एवं १६ सितंबर १९७० ।। मूल्य : एक प्रति : १.०० रु०
।। वार्षिक : १२ रु० ।।

WORLD FAMOUS

Kwality

ICE CREAM

a dream with cream

: MANUFACTURED BY :

Kwality Ice Cream Co.,

OF BOMBAY & NEW DELHI

90, Industrial Area-A, LUDHIANA

विशेष सूचना

११ दिसम्बर आचार्य श्री रजनीश जी का जन्म दिवस है। अतः युक्रांद का दिसम्बर माह का अंक विशेषांक हो, ऐसा हमारा विचार है।

हम इस विशेषांक में आचार्य श्री सम्बन्धी आपके वे संस्मरण प्रकाशित करना चाहेंगे जिसमें आचार्य श्री की कोई बात, कोई मुलाकात अथवा उनके किसी व्यवहार ने आपको इस तरह छू लिया हो कि उसे बिना किसी से बताये आप रह नहीं सके हों। आप ऐसे संस्मरण ३१ अक्टूबर तक भेजने की कृपा करें।

जरूरी नहीं है कि लिखने वाला कोई लेखक अथवा साहित्यिक ही हो। जो कम हिन्दी जानते हों वे भी टूटे फूटे शब्दों में ही सही, अपने संस्मरण लिखकर भेजें। भाषा सम्बन्धी गड़बड़ियां सुधार ली जायेंगी। आचार्य श्री द्वारा लिखे गये पत्र भी आप भेज सकते हैं।

इस विशेषांक का संपादन श्री शिव करेंगे। अतः अनुरोध है कि रचनायें सीधे उनके पते पर ही भेजें। उनका पता निम्न प्रकार है—

श्री शिव,
जेड-२१७/सी, अपर लाइन्स,
जबलपुर (म. प्र.)

मुख पृष्ठ चित्र : पोरबंदर में प्रवचन के पूर्व आचार्य श्री एक भाव मुद्रा में
चित्र : जोशी फोटो स्टूडियो, पोरबंदर